धुलाई-रंगाई विज्ञान

लेखक—
कविराज शिवचरण पाठक शास्त्री, रिसर्चस्कालर
भू० पू० अध्यापक—कमर्शियल एण्ड इन्डस्ट्रियल
हाईस्कूल, हापुड़ यू० पी०
वर्तमान अध्यापक—श्री प्रेम महाविद्यालय,
सन्तनगर, लाहौर (पंजाब)

प्रकाशक—
हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
२०३, हरिसन रोड
कलकत्ता ।

द्वितीय संस्करण] सन् १९४६ [मूल्य १॥

प्रकाशक—
श्री बैजनाथ केड़िया
प्रोप्राइटर
हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
२०३, हरिसन रोड़
कलकत्ता ।

मुद्रक—
रुलियाराम गुप्त,
दि बङ्गाल प्रिंटिंग वर्क्स
१, सिनागोग स्ट्रीट,
कलकत्ता ।

अपनी बात—

दुर्भाग्यवश भारतमें शिल्पकला-सम्बन्धी साहित्य और उसकी उपयोगी शिक्षाका सर्वथा अभाव है और फिर प्रत्येक परिवारके लिये अत्यन्त उपयोगी 'धुलाई-रंगाई'से सम्बन्धित साहित्य और शिक्षाका तो अत्यन्ताभाव ही दृष्टिगोचर होता है। यदि सौभाग्यवश इस विषयकी एक-दो पुस्तक कहीं देखनेको मिलती हैं, तो वे चाहे अपनी २ दृष्टिसे कितनी ही उपयोगी क्यों न लिखी गयी हों, पर हैं वे नितान्त अधूरी !

इस समय 'धुलाई-रंगाई' से सम्बन्धित एक ऐसी पुस्तिका-की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी कि जिसमें रंगाई-धुलाईका विशिष्ट वर्णन हो और जो भारतीय कन्या पाठ-शालाओंके लिये भी उपयुक्त हो ! इसके लिये कई भाई-बहनों तथा विदुषी अध्यापिकाओंने मुझे आग्रहपूर्वक प्रेरणा की, परिणाम-स्वरूप पुस्तक आपकी सेवामे उपस्थित है।

पुस्तकमें अज्ञानवश बहुतसी त्रुटियां रह गयी होंगी जिनके लिये इस समय तो क्षमा याचना ही एक अवशिष्ट चारा है। रही पुस्तकके गुणावगुणोंकी चर्चा सो तो पाठक-पाठिकाओं-के हृदयों पर ही निर्भर है।

विनीत—

लेखक

विषय-सूची

पहला भाग

पहला अध्याय

दूसरा अध्याय

तीसरा अध्याय

चौथा अध्याय

पांचवाँ अध्याय

विषय | पृष्ठ संख्या

छठा अध्याय

दूसरा भाग

पहला अध्याय

दूसरा अध्याय

तीसरा अध्याय

चौथा अध्याय

पांचवां अध्याय

छठा अध्याय

तीसरा भाग

पहला अध्याय

दूसरा अध्याय

तीसरा अध्याय

धुलाई-रंगाई विज्ञान

पहला अध्याय

विधाताको सृष्टिकी रचना करनी थी सो कर चुका, पृथ्वी और आकाश मण्डलके बीचमें विचरनेवाली प्रत्येक आत्माको सुरक्षित रहनेके लिये एक-एक महलकी आवश्यकता थी सो वह मनुष्य देहके रूपमें दे चुका, पर उसकी यह देन कोई अमर देन नहीं, एक धरोहर है। इसलिये इसकी देख-रेख विशेष रूपसे करनी होगी। इसके ऊपर किसी प्रकारका धब्बा न लग जाय, इस विचारसे इसे नित नये वस्त्राभूषणोंसे सजाकर रखना होगा। परन्तु इस गरीब भारतमें नित नये निराले वस्त्र आयेंगे कहांसे? फिर लाचार होकर पुरानोंको ही नये बनानेको आविष्कार करना होगा। परन्तु ईश्वरने स्वयं ही इस विचारकी पुष्टि कर दी और उसने पहले ही इसकी साधन-स्वरूपा धोबीकलाका आविष्कार कर दिया। अब इसका परिणाम हुआ शरीरकी स्वच्छता, उसका स्वस्थ और सदा बलवान बने रहना। इससे यह बात सिद्ध है कि प्रत्येक व्यक्तिको अपने शरीर और स्वास्थ्यके लिये अन्य बातों (साधनों) के साथ-साथ शरीरपर पहने जानेवाले वस्त्रोंकी सफाई

की बड़ी आवश्यकता है, क्योंकि वस्त्रोंका साफ रखना उस (स्वास्थ्य) के लिये एक अनिवार्य नियम है और इसका साधन है, प्रति दिन वस्त्र धोना।

कपड़े धोनेकी शिक्षाकी आवश्यकता

किसी कामके करनेकी रीतिका पूरा २ ज्ञान प्राप्त करनेका नाम शिक्षा है, इसलिये चाहे कोई काम हो, जबतक उससे सम्बन्ध रखने वाली प्रत्येक बातका पूरा २ ज्ञान प्राप्त न हो जाय, तबतक उस काम के करनेवालेको उस (काम) में पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। इसी प्रकार कपड़े धोनेके कामसे सम्बन्ध रखनेवाली प्रत्येक बातकी पूरी २ जानकारी प्राप्त किये बिना वस्त्र साफ करनेमें भी पूर्ण सफलता नहीं मिल सकती। आपने देखा होगा, घरोंमें कपड़े धोते समय उनपर चाहे कितना ही बढ़ियासे बढ़िया साबुन घिस दिया जाय, उन्हे कितना ही कूट-पीटकर धोया जाय, उनमें कितना ही पानी खर्च कर दिया जाय, किन्तु फिर भी उनमें थोड़ा-बहुत धुन्धलापन रह ही जाता है, उनमें धोबीके धोए हुए कपड़ोंकीसी चमक-दमक नहीं आती। इसका एकमात्र कारण है, कपड़े धोनेकी शिक्षाका अभाव। इसलिये इस कामसे दिलचस्पी रखनेवाले भाई और बहिनको कपड़े धोनेकी शिक्षासे शिक्षित होनेकी आवश्यकता है। जिससे वे अवसर पड़नेपर अपने परिवारके कपड़े धोनेमें सफल हो सकें तथा समय पड़नेपर इस कामको पेशे के तौर पर भी चला सकें।

घरोंमें कपड़े धोनेका प्रयोजन

घर-गृहस्थीके कामोंमें अन्य कामोंके साथ-साथ कपड़े धोनेका भी एक काम शामिल है, इस कामका भार प्रायः परिवारकी नारियों पर ही निर्भर रहता है और यह तो अवश्य ही मानना पड़ेगा कि परिवारके छोटे बच्चेके कपड़ेसे लेकर सभी व्यक्तियोंके कपड़े धोने तथा साफ रखनेकी जिम्मेदारीका भारी काम कोई मामूली काम नहीं है। यद्यपि परिवारके कपड़े धोनेका काम धोबीसे भी लिया जाता है; किन्तु आजकल शहरोंमें कपड़ोंकी धुलाई इतनी महंगी है कि धोबियोंने छोटे-छोटे बालकोंके कपड़ोंकी धुलाईके भी तीन-तीन चार-चार पैसे वसूल करने आरम्भ कर दिये हैं। इसके अतिरिक्त वे लोग धुलनेके लिये आये हुए कपड़ोंको हफ्तोंतक बेपरवाहीके साथ स्वयं पहन पहनकर फाड़ते रहते हैं और कभी-कभी विवाह आदिके अवसर पर अपने परिचित मित्रोंको दो-चार दिनके लिये किराये पर भी दे देते हैं, कभी कपड़े धोकर नहीं देते, कभी-कभी खो भी देते हैं, यही नहीं, कभी-कभी तो 'खो गया दिया ही कब था ?' कह कर एक आध कपड़ा रख भी लेते हैं। इस प्रकारके अनेक कारण हैं जो परिवारवालोंको अपने घरोंमें स्वयं कपड़े धोनेके लिये लाचार कर रहे हैं, इसलिये घरोंमें कपड़े धोये बिना काम नहीं चल सकता।

कपड़े धोनेका स्थान

आजकल भारतमें तो क्या संसारमें भी ऐसा कोई घर नहीं

मिल सकेगा जिसमें कपड़े न धोए जाते हों, किन्तु भारतमें बहुत कम घरोमें कपड़े धोनेके अलग सुरक्षित स्थान होते हैं। यदि कभी घरमें स्त्रीको कपड़े धोने होते हैं तो वह साबुन सोटा लेकर रसोई-घरको ही धोबीघाट बना बैठती है और इधर-उधर रखे हुए बर्तनों तथा खाने-पीनेकी चीजोंमें साबुनके गन्दे छींटे पडते हैं इस बातकी उसे कोई चिन्ता भी नहीं रहती। यदि कपड़े धोनेका सुयोग या कुयोग पुरुषके हाथ आ जाता है तो वह किसी कुएं, नदी या तालाबके घाटपर जा कपड़े पीटने लगता है। इस रीतिसे वहांका जल गन्दा हो जाता है, पर उसी पानीको खाने-पीनेके काममें लानेवाले कितने व्यक्तियोंको कितनी हानियां उठानी पडती हैं इस बातका अनुमान भी उसे नहीं होता। हर एक व्यक्ति इस कुरीति का अनुभव कर सकता है, इसलिये प्रत्येक घरमे एक-एक पक्का खुरा (कपड़े धोनेका स्थान) बना होना चाहिए और उसके पासकी दीवारोमे कपड़े टांगनेके लिए खूटियां होनी चाहिये। गांवोमें जहाँ पक्के खुरेका सुभीता न हो वहां लकडीके चौडे पट्टेपर कपड़े धोए जा सकते हैं।

जलकी उपयोगिता

संसारके प्रायः सभी कामोमे जलका उपयोग किया जाता है। वस्त्र धोनेके लिये भी सबसे प्रथम जलकी ही आवश्यकता होती है और वस्तुतः वस्त्रोंका साफ होना सोडा साबुन आदि पदार्थोंकी अपेक्षा पानीके गुणोंपर ही अधिक निर्भर करता है। इसलिये

सबसे पहले यह जान लेना आवश्यक है कि वस्त्र धोनेके लिये कैसा पानी उपयोगी हो सकता है, वह कितने प्रकारका है तथा उसमें कौन २ से गुण होने चाहिये।

जलके प्रकार (भेद)

वैसे तो जलको खट्टा, मीठा, कडवा, खारा, तीखा तथा कसैला आदिके भेदसे छः प्रकारका माना गया है, किन्तु यहाँ वस्त्र धोनेकी दृष्टिसे उसे केवल तीन प्रकारका ही मानते हैं।

१ शुद्ध जल
२ मृदु जल
३ खारा या कठोर जल

शुद्ध जलकी पहचान तथा उसके गुण

जिस जलमें किसी प्रकारकी गन्ध, खारापन तथा भारीपन न हो और जिसके पीनेसे जल्दी २ प्यास न लगती हो, उस जलको शुद्ध जल कह सकते हैं। शुद्ध जलमें सबसे उत्तम गुण मधुरता है और वह छोटी हर्र खाकर उसके ऊपर जल पीनेसे अच्छी तरह प्रकट हो जाती है। यद्यपि हर्र कड़वी होती है तो भी उसके ऊपर जल पीनेसे मुंहमें कुछ मिठास आ जाती है, यह मिठास ही जलकी मधुरता है। यदि शुद्ध जलमें साबुन घोला जाय तो उसमें झाग तो उठते हैं किन्तु अधिक नहीं। इसलिये यह जल वस्त्र धोनेके लिये न अधिक उपयोगी (अच्छा) है और न अनुपयोगी (खराब) है।

मृदु जलकी पहचान तथा उसके गुण

मृदु जल शुद्ध जलसे प्रायः मिलता जुलता ही होता है किन्तु इस जलमें साबुन घोलते ही झाग उठने लगते हैं और देखते ही देखते पानीवाला बरतन झागोसे भर जाता है। इसलिये यह जल वस्त्र धोनेके लिये बहुत उपयोगी है। इससे वस्त्र बहुत शीघ्र साफ हो जाते हैं।

कठोर जलकी पहचान व उसके गुण

कठोर जलकी सबसे उत्तम पहचान यह है कि उसमे बढिया से बढ़िया तथा अधिकसे अधिक साबुन घोलनेपर भी झाग नहीं उठ सकते, क्योंकि उस जलमें नमक, गन्धक तथा खरिया मिट्टी आदि ऐसी भिन्न २ वस्तुओंका अंश मिला रहता है जो झाग उठनेमें रुकावट डाल देता है जिस जलमें झाग नहीं उठते उसमें वस्त्र कभी साफ नहीं हो सकते।

अब प्रश्न यह उठता है कि जलमें नमक, गन्धक और खरिया मिट्टीका भाग आया कहासे ? इसका उत्तर स्पष्ट है कि जहाकी मिट्टीमे नमक, गन्धक या खरियाका भाग मिला होता है वहाका जल भी उन पदार्थोंके गुणोंसे युक्त होता है।

यदि इस प्रकारके पानीको स्वच्छ करके वस्त्र धोनेके योग्य बनाना हो तो उसमे थोडीसी फिटकरी डालकर उसे गर्म कर लो। जब वह ठण्डा हो जाय तो उसे किसी स्वच्छ वस्त्रमें छान लो। फिर उसमें कपड़े धोओ, कपडे बिलकुल साफ हो जायंगे।

वर्षाका पानी

वर्षाका पानी भी कपड़े धोनेके लिये बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। नदी, तालाब तथा झील आदिके पानीमें वस्त्र अधिक साफ क्यों हो जाते हैं ? इसका एकमात्र उत्तर यही है कि उनमें अधिकतर वर्षाका ही पानी भरा रहता है।

सफेद सूती वस्त्र धोना

यद्यपि कपड़े धोना कोई नयी विद्या नहीं है, क्योंकि कपड़े पहलेसे ही धुलते-धुलाते चले आ रहे हैं परन्तु फिर भी यह तो अवश्य ही मानना पड़ेगा कि आजकल धुलाईके तरीकोंमें पहलेकी अपेक्षा बहुत कुछ परिवर्तन हो चुका है और होता जा रहा है। भारतकी वस्त्र धोनेकी जो प्राचीन रीति है वह बड़ी सादी तथा सस्ती है, ग्रामवासी तो अभीतक अपने वस्त्रोंको उसी रीतिसे धोकर साफ कर लेते हैं।

कपड़े धोनेकी प्राचीन रीति

पहले कपड़ोंको पानीमें तर करके उन्हें साबुन, सोडा, सज्जी या रे लगाकर किसी बर्तनमें रख दो और उसमें पानी डालकर भट्टीपर चढ़ा दो, जब वे खूब पक जायं तथा उनका सारा मैल फूल जाय तब उन्हें ठण्डा करके किसी पत्थर या पट्टे पर डालकर एक चिकने तथा मोटे सोटेसे कूट-पीटकर धो डालो, इस तरह कपड़े बिलकुल साफ हो जायंगे।

दूसरा रीति

पहले तो मैले वस्त्रोंको 'रे' (जो एक प्रकारकी खारी मिट्टी होती है) साबुन या सोडा आदि लगाकर धूपमें फैला दो, जिससे उनका मैल फूल जाय। फिर उन्हें पहली विधिके अनुसार धोकर सुखा लो।

प्राचीन रीतिसे वस्त्र धोनेके कुछ दोष

प्राचीन रीतिके अनुसार वस्त्र धोनेसे वे साफ तो अवश्य हो जाते हैं परन्तु जब उन्हें हर धुलाईमें पत्थर या पट्टेपर पीटा जाता है तो कुटते पिटते उनके तन्तु बहुत जल्द कमजोर हो जाते हैं, इसका परिणाम यह होता है कि कपड़े अपनी अवधिसे पहले ही फट जाते हैं।

इसके अतिरिक्त कभी २ ऐसा भी होता देखा गया है कि वस्त्रों में जहां 'रे' अधिक लग गया वहाँसे तो वे अधिक साफ हो जाते हैं और जहाँ 'रे' कुछ कम लगा हो वहाँसे मैले रह जाते हैं। क्योंकि उन बेचारे भोले-भाले ग्रामीणोंको यह ज्ञान ही नहीं होता कि कोई पदार्थ वस्त्रके हरएक भागमे किस तरह एक सा लगाया जाय, जिससे सारा वस्त्र एक-सा साफ हो सके।

वस्तुतः वस्त्रोंकी सफाई उनका मैल फूलनेपर निर्भर करती है, अगर उनका मैल अच्छी तरह फूल गया होगा तो वे बिना अधिक कूटे-पीटे ही साफ हो जायंगे और यदि मैल ही न फूला होगा तो वे कूटने-पीटने पर भी साफ़ नहीं हो सकते। हा! इधर उधरसे

घिरते फटते अवश्य दिखाई देंगे। इसलिये वस्त्र धोते समय उनका मैल फुलानेपर अधिक ध्यान देना चाहिये। ऐसा करनेसे वस्त्र साफ भी हो जायंगे और जल्दी कमज़ोर होकर फटेंगे भी नहीं; तथा उनके धोनेमें परिश्रम और समय भी अधिक नहीं लगेगा। यही कारण है कि धोबी एक ही दिनमें हजारों कपड़े धो डालते हैं।

मैल फुलानेकी सरल विधि

जो वस्त्र धोने हों उन्हें साबुन, सोडा या रे लगाकर हाथोंसे खूब मसलो जिससे वस्त्रोंमें लगाया हुआ पदार्थ उनके तमाम तन्तुओंमें समा जाय। फिर उन्हें धूपमें फैला दो। जब वे कुछ फरहरे हो जायं तब समझ लेना चाहिये कि अब इनका मैल फूल गया। बस! फिर उन्हें धूपसे उठाकर हाथोंसे ही कूट-पीट तथा मसलकर धो डालो।

दूसरी विधि

जितने वस्त्र धोने हों वे सब जितने पानीमें अच्छी तरह डूब सकें उतना पानी किसी खुले मुँहके बरतनमें गर्म होनेके लिये आग पर रख दो और उसमें एक सेर पानीमें पौन छटांकके हिसाबसे सज्जी पीसकर डाल दो। जब पानी खौलने तथा सज्जी बिलकुल घुल जाय तब उसमें मैले वस्त्र डालकर उन्हें कुछ देर तक पका लो, इस तरह उनका सारा मैल फूलकर पानीमें घुल जायगा। फिर उन्हें ठण्डे करके मसल मसल कर धो डालो। इसके बाद उनमें

थोड़ा साबुन लगाकर हाथोंसे कूट पीटकर स्वच्छ पानीसे धोकर साफ कर लो।

तीसरी विधि या भट्ठी चढ़ाना

मैल फुलानेकी एक विधि और भी है जिसे आजकल धोबी लोग काममें लाते हैं, इसे कपडोंकी भट्टी चढाना कहते हैं यदि आपको भी कपडोंकी भट्ठी चढ़ाना हो तो नीचे-लिखी विधिके अनुसार चढा लेना चाहिये।

पहले दस सेर ठण्डे पानीमे १ पाव सज्जी तथा तीन छटांक सोडा अच्छी तरह घोल लो। इस पानीमें मैले वस्त्रोको भिगो भिगोकर हल्के हाथसे निचोड लो जिससे उनमे पानीका कुछ अंश शेष रह जाय। फिर एक-एक वस्त्रको फैला-फैलाकर उनपर थोड़ा थोडा साबुन लगा दो, तथा जहा-जहां मैल अधिक प्रतीत होता हो वहां-वहां आवश्यकताके अनुसार कुछ अधिक साबुन लगा देना चाहिये। इसके बाद एक खुले मुंहका बड़ासा बरतन लेकर उसमें एक समान ऊंचाईके पत्थरके चार टुकडे रखो, उनके ऊपर बास या और किसी वस्तुकी खपच्चियां जमा दो और उसमे इतना पानी भर दो कि पत्थरके टुकड़े डूब जायं। फिर खपच्चियोंके ऊपर साबुन लगे हुये कपड़ोको गोलाकार करके इस तरह रखो कि जिससे बरतनकी तलीका भाग खाली चमकता रहे। फिर उन कपड़ोंके ऊपर एक कपडा इस विधिसे फेला दो जिससे वे कपड़े इधर-उधर न होने पावें। इसके बाद बरतनका मुंह ढक्कनसे अच्छी तरह बन्द करके उसे भट्टीपर चढा दो किन्तु उनके नीचे आग

जलाते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि न तो आग बहुत मन्दी हो और न बहुत तेज। क्योंकि यदि आग बहुत मन्दी होगी तो कपड़ोंका मैल फूलनेमें बहुत समय लगेगा और यदि तेज होगी तो बरतनका पानी बहुत शीघ्र जल जायगा, इससे कपड़ोंका मैल भी न फूल सकेगा तथा साथ ही उनके जलनेका भी खतरा पैदा हो जायगा। आगकी गरमाई पाकर जब पानी खौलने लगेगा तब उसकी भाप खपच्चियोंके बीचसे होकर ऊपर उठेगी परन्तु बरतन का मुंह बन्द होनेसे बाहर नहीं निकल सकेगी और चक्कर खाकर फिर नीचेको ही लौट लौटेगी, लेकिन नीचेसे ऊपरको आनेवाली भापसे बीचमें ही टकराकर इधर-उधर फैल जायगी। इस तरह सारा बरतन भापसे भर जायगा और वह गर्म भाप ज्यों-ज्यों उन वस्त्रोंमे समाती जायगी त्यों-त्यों उसकी गर्मीसे कपड़ोंका मैल फूलता जायगा। यदि २५ कपड़ोंकी भट्टी हो तो करीब डेढ़ घण्टा और ५० कपडोंकी हो तो तीन घण्टे तक आग जलानी चाहिये। अगर कदाचित् बीचमें ही बरतनका पानी समाप्त हो जाय तो उसमें और पानी डाल देना चाहिये, इससे कुछ हानि नहीं होगी। जब भट्टीके नीचे आग जलानेकी अवधि समाप्त हो जाय तब आग बुझा दो और भट्टी ठण्डी हो जानेपर कपड़ोंको निकालकर धो डालो परन्तु उन्हें धोते समय पानी की कंजूसी कभी नहीं करनी चाहिये, वरना उनमें मलका अंश रह जायगा, इसलिये जबतक कपड़ोंसे मैला पानी निचुरता रहे तबतक उन्हें स्वच्छ पानीसे धोते ही रहना चाहिये और जब साफ पानी निचुड़ने लगे तब उन्हें निचोड़कर सुखा देना चाहिये।

सूती रंगीन वस्त्र धोनेकी विधि

रंगीन वस्त्र धोते समय यह अवश्य देख लेना चाहिये कि उनका रंग कच्चा है या पक्का ? यदि रंग कच्चा हो तो ऐसे वस्त्रोंको भट्टी पर नहीं चढ़ाना चाहिये, क्योंकि गर्म पानीकी भभकती हुई भापसे कपडोंका कच्चा रङ्ग छूटकर भट्टीपर चढ़ाए हुए दूसरे सफेद वस्त्रों पर धब्बे डाल देगा और इस तरह सारे वस्त्र रंग-बिरंगे होकर भद्दे प्रतीत होने लगेंगे। इसलिये उन्हे अलग ही गर्म पानी तथा सोडे, साबुन आदिसे धो लेना चाहिये।

इसके अतिरिक्त जहांतक हो सके पक्के रङ्गके कपडोंको भी भट्टीपर चढ़ाना न चाहिये, क्योंकि भट्टीके वास्ते कोई भी रंग पक्का नहीं होता, हां ! अगर कदाचित् रंगीन कपडोंको भट्टीपर चढ़ाना ही हो तो उन्हें सबसे नीचे रखना चाहिये ताकि उनका पिघला हुआ रङ्ग नीचे ही टपकता रहे। इस तरह ऊपरके सफेद कपड़ोंमें रंगीन धब्बे नहीं पड सकेंगे।

रंगीन वरमोला व छींट धोनेकी विधि

इन कपडोंको भट्टीपर कभी भूलकर भी नहीं चढ़ाना चाहिये, वरना जहां-तहांसे उनका रङ्ग तथा बेल-बूंटे छूट जायंगे और वे चितकबरे होकर बदसूरत प्रतीत होने लगेंगे। इसलिये ऐसे कपड़ों-को निम्नलिखित सामान्य विधिसे ही धोकर साफ कर लेना चाहिये।

पहले आठ सेर ठण्डे पानीमें ५ तोले स्वच्छ सिरका मिलाकर उसमें कपड़ोंको अच्छी तरह मसलकर धो लो। फिर आठ सेर पानीमें मोटे चावलोंका एक सेर मांड मिलाकर उसमें कपड़े डालकर पका लो। जब उनका मैल पानीमें घुल जाय तब उन्हें स्वच्छ पानीसे धोकर सुखा लो। यदि उनपर इस्तरी करनी हो तो जब वे कुछ कुछ गीले हों तभी कर लेनी चाहिये। अगर उन्हें बिल्कुल सुखाकर इस्तरी की जायगी यो गर्म इस्तरीसे उनके जलने की सम्भावना हो जायगी क्योंकि ये वस्त्र बहुत बारीक होते हैं।

मरीजोंके कपड़े धोना

अगर किसी बीमार व्यक्तिके कपड़े धोने हों तो उन्हें स्वस्थ व्यक्तियोंके कपड़ोंके साथ मिलाकर नहीं धोना चाहिये। यदि इस नियमका पालन न किया जायगा तो बीमार आदमीके कपड़ोंमें जो कीटाणु होंगे वे दूसरे—(स्वस्थ व्यक्तिके) कपड़ोंमें भी समा जायंगे और इस प्रकार घरभरमें बीमारी फैलनेका खतरा हो जायगा। इसीलिये उन्हें अलग धोना ही अच्छा होगा॥

मरीजोंके कपड़े धोनेकी सरल विधि

पहले ठण्डे पानीमें 'कार्बोलिक' साबुनके झाग उठा लो, जब सारा पानी झागमय हो जाय तब उसे आगपर खूब गर्म कर लो और उसमें थोड़ासा आमोनिया मिला दो। फिर उसमें बीमार आदमीके कपड़े भिगो दो और उनका मैल फूल जानेपर धो डालो।

इसके बाद उन कपड़ोंको दूसरे साबुनसे धोकर सुखा लो। इस विधिसे वे साफ तो हो ही जायंगे, साथ ही उनके कीटाणु भी मर जायंगे और फिर पहननेवालेको उनसे कुछ नुकसान भी नहीं पहुंचेगा।

शरीर-शुद्धि

वसे तो हर प्रकारके वस्त्र धोनेके बाद शरीर शुद्धि आवश्यक है, किन्तु बीमार व्यक्तिके वस्त्र धोनेके बाद तो यह और भी आवश्यक हो जाती है, क्योंकि कपड़ोंके अन्दर पैदा हुए मैले कीटाणुओंका वस्त्र धोते समय हाथों तथा शरीरके अन्य अङ्गोंपर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है, वे हाथों तथा शरीरके दूसरे भागोंमें समा जाते हैं; किन्तु दिखाई नहीं पड़ते। इनके द्वारा शरीरमें तरह-तरहकी बीमारियां उत्पन्न हो जाती हैं, इसलिये मैले तथा बीमार व्यक्तिके वस्त्र धोनेके बाद अपने मुंह, हाथ, पैर आदिको आमोनिया मिले हुए गर्म पानी तथा कार्बोलिक साबुनसे धोकर, तेल लगा लेना चाहिये जिससे उनमें समाए हुए सारे कीटाणु मर जायं। अथवा पानीमें थोड़ा-सा 'माकरोलोशन' मिलाकर उससे हाथ वगैरह धो लेना चाहिये क्योंकि इससे भी अंगोंमें समाए हुए कीटाणु मर जाते हैं।

वस्त्र चमकानेके उपयोगी पाउडर

आपने देखा होगा कि कपड़े धोनेके बाद उनमें कुछ धुंधलापन सा आ जाता है, वे साफ होते हैं पर उनमें चमक दमक नहीं

होती। यदि धुले हुए कपड़ोंपर इन पाउडरोंका उपयोग किया जाय तो उनमें एक प्रकारकी अनोखी चमक आ जाती है। इन पाउडरों का बनाना भी कुछ विशेष कठिन नहीं प्रतीत होता।

पाउडर नं० १

१ कपड़े धोनेका सूखा साबुन १ छटांक
२ „ „ „ सोडा ४ „
३ „ „ „ सज्जी ३ „

इन तीनों चीजोंको कूट-छान कर रख लो और समय पर काममें लाओ।

पाउडर- नं० २

१ कपड़े धोनेका सूखा साबुन १ छटांक
२ „ „ „ सोडा ४ „
३ „ „ „ सुहागा १ „
४ „ „ „ सज्जी १॥ „

इन सब चीजोंको कूट छान कर रख लो और समय पर उपयोगमें लाओ।

पाउडर नं० ३

१ क्लोरेट् आफ पोसस ५ तोला
२ सांभर नमक १५ तोला

इन दोनोंको कपड़छान करके रख लो और अवसर पड़ने पर काममें लाओ।

पाउडर नं० ४

१ ब्लीचिङ्ग पाउडर ५ तोले
२ सोडा ३ तोले

इन दोनोंको परस्पर मिलाकर किसी टीनके डिब्बेमें रख लो अगर इसे डिब्बेमें बन्द करके न रखा गया तो इसकी सारी गैस निकल जायगी और फिर यह किसी भी कामका न रहेगा।

उपयोग-विधि

इन पाउडरोंका उपयोग उन्हीं कपडो पर करना चाहिये, जिन्हे पहिले साबुन आदिसे धोकर साफ कर लिया हो। जब किसी कपड़े पर इन पाउडरोंमें से किसी एक पाउडरका उपयोग करना हो तो उस (पाउडर) को ठण्डे पानीमे हल कर लो। यदि पानीका परिणाम ५ सेर हो तो उसमें ५ तोला पाउडर मिलाना चाहिये। पाउडरके पानीमे कपड़ोको धोकर फिर उन्हे स्वच्छ पानी से धो डालो और धूपमे सुखा लो। यदि पाउडर लगे हुए कपड़ोको धूपमें न सुखाया जायगा तो उनमें चमक नहीं आ सकेगी। और पाउडर लगानेका कुछ लाभ नहीं होगा।

—*—

अभ्यासार्थ प्रश्न

१ कपड़े धोनेकी क्या आवश्यकता है ?

२ कपड़े धोनेकी शिक्षा प्राप्त करनेका प्रयोजन क्या है ?

३ गृहस्थोंको घरोंमें स्वयं वस्त्र धोनेकी क्या जरूरत है ?

४ कपड़े धोनेका स्थान कैसा होना चाहिये ?

५ जल कितने प्रकारका है तथा वस्त्र धोनेके लिये कौनसा जल उपयोगी हो सकता है ?

६ भारतवर्षकी कपड़े धोनेकी प्राचीन रीति क्या थी और नवीन रीति क्या है ?

७ सूती छींट धोनेकी वह कौन-सी रीति है जिससे उसके बेल-बूटे खराब न हो सकें ?

८ रगीन कपड़े धोनेकी क्या विधि है ? धोबी कपड़ोंकी भट्टी किस तरह चढ़ाते हैं ?

९ धुले हुए सूती वस्त्रोंमें चमक उत्पन्न करनेकी क्या रीति है ?

१० मैले कपड़ोंका मैल कैसे कैसे फुलाया जाता है ?

११ वस्त्र धोनेके बाद शरीर-शुद्धि क्यों आवश्यक है और उसकी विधि क्या है ?

—०*०—

दूसरा अध्याय

कपड़ोंपर चिन्ह (निशान) लगाना

पहले यह जान लेना आवश्यक है कि कपडोंपर निशान क्यों लगाये जाते हैं।

कपड़ोंपर निशान लगानेकी तभी जरूरत होती है जब उनके आपसमे मिल जानेका या उनमें अन्य किसी प्रकारकी गडबड हो जानेका खतरा रहता है। छोटे-छोटे परिवारोंमें तो कपडोके आपस में मिल जानेका कुछ भय नहीं क्योंकि वहां तो कपडे, कोट, कमीज पाजामें, सलवार, जम्पर सूट आदि एकसे ही बने हों, एकसा ही कपडा हो, एक ही रंग हो तथा उनकी लम्बाई, चौडाई और सिलाई भी एक तरहकी हो तो कपड़ोंसे आपसमें मिल जानेका खतरा रहता है इसलिये परिवारके हरएक व्यक्तिको अपने अपने कपडोपर उनकी पहिचानके वास्ते किसी विशेष प्रकारके निशान लगानेकी आवश्यकता पड़ती है।

यदि हरएक व्यक्तिके कपड़ोपर अलग-अलग निशान न लगे हों तो बड़े बड़े परिवारोंके छोटे-छोटे बच्चोंका आपसमें लड़ाई झगड़ा होनेका भय हमेशा बना रहता है। एक कहता है 'वाह जी !

यह कमीज तो फटी हुई है यह मेरी नहीं है, तेरी है' दूसरा कहता है 'नहीं, यह मेरी कहांसे आयी मेरी तो नई थी" इत्यादि। देखा तो यहां तक गया है कि कभी-कभी बड़े आयुवाले स्त्री-पुरुष भी इस प्रकारकी 'तू तू मैं मैं' में भाग लेने लगते हैं। इस तरह सारा परिवार कलहका केन्द्र बन जाता है और घरेलू सुख-शान्ति दुःखाग्निमें भस्म हो जाती है।

यदि धोबी भी बिना निशान लगाये या बिना किसी प्रकारकी पहचान किये ही कपड़े धोना आरम्भ कर दें तो फिर क्या दशा होगी? बस, कपड़े लेते देते समय धोबीके साथ हमेशा आपकी 'तू तू मैं मैं' हुआ करेगी और किसीको तो नये कपड़ोंके बदलेमें पुराने तथा किसीको पुरानोंके बदले नये कपड़े मिल जाया करेंगे, इससे धोबीको नुकसान उठाना पड़ेगा; क्योंकि कभी-कभी उस बेचारेको गुम हुए कपड़ोंका मूल्य भी चुकाना पड़ता है। इसलिये सारी परेशानियोंसे बचनेके वास्ते परिवारवालोंकी तरह धोबियोंको भी अपने यहां धुलने आये हुए कपड़ोंपर किसी न किसी प्रकारके निशान करने आवश्यक हो जाते हैं।

कपड़ोंपर निशान लगानेके कुछ लाभ

१ वस्त्र सम्बन्धी चिन्ताओंसे छुटकारा।

२ धोबीसे वस्त्र लेते-देते समय 'तू तू मैं मैं' न होना।

३ कपड़ोंका आपसमें न मिलना।

४ परिवारमें किसीसे विरोध न होना।

५ नये कपड़ोंके बदले पुराने वस्त्र न मिलना।

६ परस्पर प्रेमसे काम बन जाना।

७ अपने कपड़े आसानीसे पहचान लेना।

८ धोबीका नुकसान न होना।

९ मालिकका धोबी द्वारा और धोबीका मालिक द्वारा अपमान न होना।

१० वस्त्र खो जानेपर भी निशानकी पहचानसे फिर मिल जाना।

निशान कैसे लगाये जायं ?

कपडोंपर निशान लगाना तो निश्चित हो गया; किन्तु अब प्रश्न यह होता है कि उनपर निशान कैसे लगाया जाय ? किस चीजसे लगाया जाय ? जो कपड़ोंको भट्टीपर चढाकर उबालने तथा धोनेसे वह उतर न जाय। इसलिये कपड़ेपर निशान लगानेके समस्त साधनोंका पूरा-पूरा ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है, जिससे यह मालूम हो जाय कि कौनसी वस्तु किस प्रकार उपयोगमें लायी जायगी और इस कामके लिये कौनसी वस्तु अधिक उपयोगी तथा सस्ती होगी।

कपड़ोपर निशान लगानेके साधन

१ किसी पक्के रंगका धागा।

२ जैटोलाइन मार्किंग इन्क।

३ भिलावेका पानी।

४ कपड़ेकी पट्टीपर बने हुए अक्षर।

पक्के रंगके धागेसे निशान करनेकी सरल विधि

जो बहिनें कसीदा निकालनेमें चतुर होंगी उनके लिये तो यह विधि बहुत सरल है, परन्तु जिन बहिनोंने कसीदा निकालना नहीं सीखा उन्हें चाहिये कि पहिले वस्त्रपर पैन्सिल या स्याहीसे जिस व्यक्तिका वह वस्त्र है उसके नामका पहला अक्षर, यदि नामके दो भाग हों तो दोनों भागोंका पहला २ अक्षर लिख लें। फिर सुई द्वारा पक्के रंगके धागेसे उसके ऊपर बारीक तथा सुन्दर जाली कर दें; जैसे, किसी बहिनका नाम सुखदा देवी है, यदि आप हिन्दीमें लिखना चाहें तो नामके पहले भागका 'सु०' और दूसरे भागका 'दे०' लिख लें। यदि अंग्रेजीमें लिखना हो तो Sukhda Devi नामके पहले भागका S. और दूसरे भागका D. लिख दें। धागा सूती हो या रेशमी, इसमें कुछ अन्तर नहीं होता, लेकिन जहांतक हो सके सुई अवश्य बारीक होनी चाहिये ।

जैटोलाइन मार्किङ्ग इङ्कसे निशान करनेकी विधि

यह एक विदेशी स्याही है जो शहरोंमें आसानीसे मिल जाती है। इसकी शीशी चीनीकी एक प्याली तथा कलमके साथ एक डिब्बेमें बन्द रहती है। शीशीमें से स्याहीकी कुछ बून्दें प्यालीमें

डालकर कलमसे कपड़ेके एक कोनेपर उसके मालिकके नामके दोनों भागका पहला २ अक्षर लिख दें। लेकिन भट्टीपर कपड़ा चढ़ानेपर इस स्याहीसे लगाया हुआ निशान कभी-कभी छूट भी जाता है, इसलिये वस्त्रोंपर निशान करनेका यह साधन कुछ उत्तम नहीं है।

यह स्याही घरपर भी बनाई जा सकती है। इसकी बनाने की दो विधियां हैं।

पहली विधि

(Nitrate of silver)

१	नाइट्रेट आफ सिलवर	एक भाग
२	गोंदका कुछ गाढ़ा पानी	तीन भाग
३	सादा पानी	तीन भाग

इन तीनो चीजोंको आपसमें अच्छी तरह मिलाकर किसी साफ शीशीमें भरकर रख लें।

दूसरी विधि

१	काला सुरमा	६ माशे
२	नाईट्रेट आफ सिलवर	२ रत्ती
३	गेरू	६ माशे
४	सादा पानी	२ तोला

पहले सुरमा और गेरू खरलमें पीसकर खूब बारीक कर लें

फिर नाईट्रेट आफ सिलवर और पानीको उनमें मिलाकर एक शीशीमें भरकर रख लें।

स्याही बनानेकी सब चीजें आपसमें मिलानेके लिये चीनी या कांचकी प्याली होनी चाहिये। तथा खरल भी कांच या किसी चिकने पत्थरका ही होना आवश्यक है।

भिलावेके पानीसे निशान करनेकी विधि

भिलावा एक दवा है यह एक पेड़का काले रंगका फल होता है पंसारी तथा हकीमोंकी दुकानोंपर मिल जाता है। जब इससे काम लेना हो तो पहिले इसे कानके पास हिलाकर देख लेना चाहिये यदि उसमें पानी हिलता सुनाई पड़े तब तो ठीक है अगर उसमें पानी हिलता न जान पड़े तो उसे आगपर कुछ गर्म कर लेना चाहिये। ऐसा करनेसे उसके अन्दर जमा हुआ जहरीला पानी पिघल जायगा। फिर उसके सिरेपर लगा हुआ टोपीनुमा छिलका उतार डालें इसके नीचे एक बारीक छेद निकल आवेगा। इस छेदसे एक मोटी सुई द्वारा भिलावेका पानी निकाल निकालकर कपड़ोंपर निशान लगाना आरम्भ करें निशान लगाते समय भिलावा बाएं हाथमें तथा सुई दहिने हाथमें रहनी चाहिए। जब निशान ठीक लग जाय तब उसके ऊपर चूनेका पानी लगा दें इससे निशान काला हो जायगा और फिर कभी उतरेगा भी नहीं।

चूनेका पानी भिलावेसे निशान करनेका कार्य आरम्भ करनेसे कुछ देर पहिले ही तैयार करके रख लेना चाहिये।

चूनेका पानी बनानेकी विधि

चूना बिना बुझा १ तोला
सादा पानी १० तोला

इन दोनों चीजोंको एक मिट्टीकी प्याली या टीनके डिब्बेमें डाल दो और लकड़ीकी डण्डीसे अच्छी तरह चलाकर रख दो जब चूना नीचे बैठ जाय और पानी नितरकर साफ हो जाय तब उसे काममें लाना चाहिये। भिलावेके पानीसे लगाये हुए निशानपर यह पानी हाथसे नहीं, लेकिन किसी पतलीसी लकड़ीके सिरेपर कपड़ा लपेटकर उसको पानीमें भिगोकर कपड़ेपर लगाये हुए निशानपर फेर देना चाहिये। इस प्रकार निशानपर चूनेका पानी भी लग जायगा तथा हाथका बचाव भी हो जायगा।

भिलावेका पानी और चूनेका पानी ये दोनों इतने खुश्क होते हैं कि शरीरके जिस भागमें लग जायँ वहीं खुजली कर देते हैं परन्तु सरसोंके तेलपर इनका कुछ असर नहीं होता, इस वास्ते जब कभी इनसे काम करना हो तब पहले हाथोंमें मामूलीसा सरसोंका तेल चुपड लेना चाहिये और इनसे कामकर चुकनेके बाद भी हाथोंको सरसोका तेल लगाकर साबुन, मिट्टी या गोबर आदि किसी भी चीजसे धोकर साफ कर लेना चाहिये। फिर खुजली होनेका खतरा नहीं रहेगा। परन्तु साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिये कि भिलावेका हाथ आंखोमें न लग जावे वरना और भी अधिक हानि होगी। भिलावा बच्चोंके हाथमें कभी नहीं देना

चाहिये। क्योंकि उनका स्वभाव हर एक वस्तुसे खेल करनेका होता है और यदि खेल ही खेलमें उन्होंने उसे आंख, नाक या मुखमें लगा लिया तो फिर बच्चेका जीवन खतरेमें पड़ जायगा।

४

कपड़ेकी पट्टीपर बने हुए अक्षरोंसे निशान करनेकी विधि

इन अक्षरोंकी पट्टी (फीता) शहरोंमें तो बाजारमें आसानी से मिल जाती है। पर ग्रामों तथा कस्बोंमें मिलनी असम्भव है इसमें प्रायः सभी अक्षर होते हैं। जिस अक्षरकी जरूरत हो उसे कैंचीसे काटकर सुई तागेसे कपडेपर लगा देना चाहिये।

नील

आजकल कपड़ा धोनेके बाद उन्हें नील देनेकी प्रथा प्रचलित है। नील केवल सूती तथा सफेद कपड़ोंमें ही दिया जाता है। क्योंकि सफेद सूती कपड़े धोनेके बाद कुछ मटियालेसे मालूम होने लगते हैं और साफ होनेपर भी मैलसे दिखाई देते हैं। यदि उन्हें नील दे दिया जाय तो वे चमक उठते हैं और धूपमें सुखानेपर वे बड़े सुन्दर मालूम होते हैं। अगर कपड़ा धोनेपर उसमें मैलका कुछ अंश रह भी जाय तो नीलकी चमक उसे अपने अन्दर छिपा लेती है। इसके अतिरिक्त किसी भी रंगीन सूती कपड़ेको नील नहीं देना चाहिये, क्योंकि रंगीन कपड़े तो धोनेके बाद आपही

चमक उठते हैं और रंगीन वस्त्रपर नीलका कुछ असर भी नहीं होता।

रेशमी, टसरी तथा ऊनी वस्त्रोंको भी नील नहीं देना चाहिये क्योंकि उनपर चमक उत्पन्न करनेके साधन इस (नील) से भिन्न हैं जो रेशमी धुलाईके प्रकरणमें लिखे गये हैं।

नील वैसे तो कई प्रकारका है किन्तु 'चिड़ी मार्का लाजवर-पाउडर' और 'उजीवाला नील' ये दो सबसे उत्तम होते हैं।

कपड़ोंमें नील लगानेकी विधि

यदि 'लाजवर पाउडर' हो तो आठ माशे और यदि 'उजीवाला नील' हो तो चार माशे लेकर उसे किसी साफ तथा बारीक कपड़ेमें बाधकर पोटली बना लें और एक खुले मुंहके बर्तनमें साफ पानी भरकर रख लें। फिर नीलकी पोटली हाथमे लेकर पानीमें झकोलती रहें जिससे नील कपड़ेमें से छन छनकर पानीमें घुलता रहे। जब कपड़ेके मोटेपन तथा उसकी लम्बाई-चौडाई व परिमाणके अनुसार नील पानीमे घुल जाय (नील मोटे वस्त्रमें अधिक तथा पतलेमें कम लगता है) तब नीलकी पोटली तो अलग रख दो और धुले हुए कपड़ोंमेसे एक-एक कपडा लेकर उसे खूब झाडकर (जिससे उसमें कहीं सिकुडन न रहे) नीलके पानीमें इस तरह डुबाओ कि डुबाते समय उसमें कहीं सलवटें न रहने पावें, वरना जहा २ सलवटें रह जायंगी वहा-वहां नील ठीक नहीं चढ़ेगा और वस्त्रपर सब जगह एकसा नील न चढ़नेसे वह बदरंग होकर बदसूरत मालूम होने

लगेगा। फिर नीलमें डूबे हुए वस्त्रको अच्छी तरह झकोलकर तथा एकसा निचोड़कर सुखा लो। बस! इसी तरह सारे वस्त्रोंको नील लगा लेना चाहिए। नील गीले तथा निचोड़े हुए वस्त्रोंको ही लगाना चाहिए, सूखे वस्त्रोंको नील लगानेसे उनपर धब्बे पड़ जाते हैं।

कपड़ोंको नील देते समय ध्यान देने योग्य बातें

१—जिन वस्त्रोंको नील देना हो वे बिलकुल स्वच्छ हों, क्योंकि मैले कपड़ोंपर नीलका असर नहीं होता। साथही नील देनेका बर्तन (भण्डा) तथा नील लगानेवाले व्यक्तिके हाथ भी स्वच्छ हों।

२—हमेशा गीले वस्त्रको ही नील लगाना चाहिये, यदि सूखे वस्त्र को लगाया जायगा तो धब्बे पड़ जायंगे।

३—पानीमें पोटली द्वारा नील घोलना चाहिये, वरना रङ्गदार पानी में नीलकी गरोड़िया रह जायंगी जो वस्त्रपर दाग डाल देंगी।

४—महीन वस्त्रोंको नील कम और मोटे वस्त्रोंको अधिक लगाया जाता है।

५—नील लगाये हुए वस्त्रोंको छायामें नहीं किन्तु धूपमें सुखाना चाहिये वरना उनपर नीलकी चमक-दमक नहीं आयगी।

६—नील केवल सफेद तथा सूती वस्त्रोंमें ही लगाना चाहिये।

७—वस्त्रोंमें नील लगानेको हमेशा ठण्डा पानी ही इस्तेमाल करना चाहिये।

माया (कलप)

वस्त्रोंमें माया लगानेकी आवश्यकता

आजकल धुले हुए कपडोंमें माया देनेका रिवाज भी प्रायः सभी जगह फैल चुका है। आप ही सोचिये यदि आप अपने काले घुंघराले बालोंको साबुन आदि भिन्न-भिन्न पदार्थोंसे धोकर स्वच्छ कर लें और उनमें तैल आदि चिकनी वस्तु न लगावें तो वे साफ होनेपर भी कितने रूखे सूखेसे प्रतीत होते हैं, उनमें चमक दमक या सौन्दर्यकी झलकका नाम भी नहीं होता, इसी तरह कपड़ों को भी साबुन आदि भिन्न भिन्न पदार्थोंसे धोकर उन्हे साफ कर लेनेपर नील देनेके बाद भी उनमें वह सुन्दरता नहीं आती जो उन्हें माया लगानेपर आ जाती है। इसलिये धुले हुए कपडोंकी शोभा बढ़ानेके वास्ते उसमें (माया) कलप लगाना भी आवश्यक प्रतीत होता है।

कलप बनानेकी चीजें

१ गेहूंका निशास्ता
२ कीकरका गोंद
३ आइजन ग्लोस
४ आरारोट
५ चावल
६ मैदा

इनमें 'आइजन ग्लोस, (एक प्रकारका सरेस) 'आरारोट' (एक प्रकारका विलायती मैदा) ये दो चीजें विदेशी तथा शेष स्वदेशी।

निशास्तेका कलप बनाना

पहले किसी साफ बर्तनमें तीन पाव पानी गर्म होनेके लिये आग पर चढ़ा दें, जब वह उबलने लगे तब उसमें 'तीन छटांक गीला निशास्ता' 'एक पाव ठण्डे पानी' में घोलकर डाल दें और किसी लकड़ी या कर्छीसे चलाते रहें तथा जब तक वह पकते-पकते रबड़ी की तरह गाढ़ी होकर चिपकने न लगे तबतक उसे चलाते ही रहें वरना उसमें गरोड़ियां पड़कर बर्तनकी तलीमें जम जायगी और कलप बिलकुल खराब हो जायगा। इसके बाद उसे नीचे उतार लें और ठण्डा होनेपर काममें लावें।

दूसरी विधि

किसी देगचीमें तीन छटांक गीला निशास्ता एक सेर ठण्डे पानीमें घोलकर आगपर चढ़ा दो और जब तक वह अच्छी तरह पककर चिपकने न लगे तबतक उसे चलाती रहो वरना गुड़ी पड़ जायगी। जब तैयार हो जाय तब नीचे उतारकर ठण्डा करके काममें लाओ।

तीसरी विधि

बिना आग निशास्तेका कलप बनाना

तीन छटांक सूखा निशास्ता लेकर उसे कपड छन कर लें। फिर उसे कुएंके बिलकुल ताजे तीन पाव पानीमें डालकर लकडीसे चलावें, जब वह रबडीकी तरह गाढ़ा हो जाय तब चारमाशे सुहागा पीसकर उसे उबलते हुये आधपाव पानीमें घोलकर निशास्तेमें डाल दें और उसे खूब चलावे बस। कलप तैयार हो जायगा।

निशास्ता सूखा तो नगरोंमें प्रायः पसारियोंकी दूकानोंपर मिल ही जाता है और गीला उसके बनानेवालोंकी दूकानोंपर मिल सकता है। यदि किसी आवश्यक अवसरपर गीला निशास्ता मिलनेकी सम्भावना न हो तो वह अपने घर भी बनाया जा सकता है।

निशास्ता बनानेकी विधि

किसी खुले मुंहके वर्तन साफ किये हुये एक सेर गेहूं भिगो दीजिये। उन्हे तबतक भीगे रहने दें जबतक कि उनमेंसे अंकुर न निकल आवे। अंकुर निकलनेके बाद उन्हे पानीमेंसे निकालकर दूसरे स्वच्छ पानीमें डाल दें और खूब जोर जोरसे हाथोंसे मसलना आरम्भ करें। जब बीचका गूदा पानीमें बिलकुल घुल जाय तथा छिलके पानीके ऊपर तैरने लगें तब एक चौड़े छेदोंकी छलनी द्वारा पानीमेंसे वे छिलके उतारकर फेंक दें और गूदा मिले हुए पानीको हाथोंसे तबतक झकोलती रहे जबतक उसका रंग निखरकर दूधके

समान सफेद न हो जाय और जबतक गेहूंके गूदेमें चिकनाई न आ जाय। फिर उसके बर्तनको ऐसी जगह रख दें जहां उसमें गर्द वगैरह न पड़ सके। जब उसका पानी निथरकर बिलकुल साफ हो जाय और गेहूंका गूदा नीचे जम जाय तब धीरेसे पानी उतारकर फेंक दें। बस! नीचे जमा हुआ गेहूंका सफेद गूदा ही निशास्ता कहलाता है। चाहे आप उसे गीला काममें लावें, चाहें धूपमें सुखाकर रख लें।

गोंदका कलप बनाना

आधपाव कीकरका गोंद तथा चार माशे सुहागा लेकर दोनोंको अलग २ खूब बारीक पीस लें। फिर गोंदको एक सेर ताजे पानी में घोलकर किसी बारीक वस्त्रमें छान लें। इसके बाद छने हुए पानीको मंदी आंचपर पकाएं और किसी चम्मच आदिसे उसे चलाती रहें। जब उसमें लुवाब उठने लगे तब पिसा हुआ सुहागा उसमें मिलाकर उसे नीचे उतार लें और ठण्डा करके बोतलमें भर-कर रख लें। जब किसी कपड़ पर गोंदका कलप लगाना हो तब १० सेर ठण्डे पानीमें एक छटांक गोंदका लुवाब मिलाकर लगा लेना चाहिये। यदि १ सेर पानीसे अधिक पानीकी जरूरत हो तो उपरोक्त हिसाबसे गोंदके लुवावकी मात्रा भी बढ़ा देनी चाहिये।

दूसरी विधि

एक छटांक गोंद खूब बारीक पीसकर उसे किसी चीनीके

बरतनमें डाल लो और उसमें डेढ़ पाव गर्म पानी भर दो, जब गोंद घुल जाय तब उसे बारीक वस्त्रमें छानकर काममें लाओ।

आइज़न ग्लोसका कलप बनाना

इसका कलप बनानेके लिये एक ऐसा डिब्बा होना चाहिये जिसके अन्दर एक छोटा डिब्बा नलकी तरह लगा हो। फिर नीचे के डिब्बेमें पानी भरकर उसे गर्म होनेके लिये आगपर रख दो जब पानी गर्म हो जाय तब बीचके डिब्बेमें थोड़ा पानी डालकर उसमें 'आइज़न ग्लोस' डाल दो और उसे एक लकड़ीसे चलाती रहो जब वह पक जाय तथा उसमेंसे तार छूटने लगें तब नीचे उतार कर काममे लाओ। इसे पकाते समय आच मन्दी जलानी चाहिये।

अरारोटका कलप बनाना

एक साफ बरतनमे आधसेर पानी गर्म होनेको आगपर चढ़ा दे, जब वह उबलने लगे तब उसमें तीन छटांक अरारोट, डेढ़ पाव ठण्ढे पानीमें घोलकर डाल दें तथा जब तक वह पककर चिपकने न लगे तब तक उसे किसी लकड़ी आदिसे चलाती रहें। पकते समय उसमें चार माशे फिटकरी पीसकर डाल दें। जब अच्छी तरह पक जाय तब उसे नीचे उतार लें और ठण्डा करके काममें लावें।

चावलोंका कलप बनाना

किसी बरतनमें डेढ़ सेर पानी आग पर चढ़ा दें जब वह उबलने लगे तब उसमें तीन छटांक मोटे चावल या उनकी कनी धोकर डाल दें। जब वे खूब पक जांय और फूट-फूट कर पानीमें मिलने लगें तब नीचे उतार लें, लेकिन यह ध्यान रहे कि इनका मांड़ न सूखने पावे। जब वे ठण्डे हो जायं तब हाथोंसे मसलकर उनको लप्सीकी तरह बना ले और किसी स्वच्छ तथा बारीक वस्त्रमें छानकर कपड़ोंपर लगानेके लिये ठण्डे पानीमें मिलाकर इस्तेमाल करे।

दूसरी विधि

जिस तरह खानेके लिये चावल बनाये जाते हैं उसी तरह मोटे चावलोंको पकाकर उनका गाढा मांड (पिच्छल) उतार लें और उसे बारीक वस्त्रमें छानकर काममें लावें।

मैदेका कलप बनाना

किसी बरतनमें आध सेर पानी गर्म होनेको आगपर रख दो जब वह खौलने लगे तब आध पाव छना हुआ मैदा एक पाव ठण्डे पानीमें घोल कर पानीमें डाल दो और किसी लकड़ी आदिसे चलाते रहो। जब वह अच्छी तरह पक जाय तथा चिपकने लगे तब नीचे रखकर ठण्डा करके काममें लाओ। यदि इसमें पकते समय चार माशे फिटकरी बारीक पीसकर डाल दी जाय तो कलप और भी अच्छा हो जायगा।

दूसरी विधि

एक सेर ठण्डे पानीमें तीन छटाक मैदा घोलकर चूल्हेपर चढा दें और शुरूसे ही लकडी द्वारा चलाना भी आरम्भ कर दें नहीं तो मैदा बरतनकी तलमें जम जायगा। जब वह पक जाय तब नीचे रखकर काममें लाव।

(सूचना) 'मैग्नेशियम क्लोराईड' का भी गीले निशास्तेके-साथ मिलाकर माया (कलप) बनाया जाता है। आध पाव मैग्नेशियम क्लोराइड रेजेदार तीन छटांक ठण्डे पानीमें घोल लें और आधी छटाँक निशास्ता एक छटाँक पानीमे घोलकर दोनोंको एकमे मिलाकर पका लें, बस। माया तैयार हो गया। किन्तु यह माया केवल पालिश करनेके काममें ही आता है कपडोंमे नहीं लगाया जाता। इसलिये माया बनानेके पदार्थों में इसकी संख्या नहीं बढायी गई।

किस वस्त्रपर कौनसा माया लगाया जाय ?

पहले यह बतलाया जा चुका है कि वस्त्रोपर मायेका प्रयोग वस्त्रकी चमक-दमक बढानेके लिये किया जाता है, इसलिये जिस वस्त्रके लिये जो माया उपयोगी है वह नहीं लगाया जायगा तबतक वस्त्रमे वास्तविक झलक नहीं आ सकती। इसलिये पहले यह जान लेना भी आवश्यक है कि किन किन वस्त्रोंपर कौन-कौनसा माया लगाना चाहिये।

१—**निशास्ते** का माया प्राय नर्म तथा बारीक वस्त्रोंके

लिये बहुत उपयोगी है, इसलिये इसे रेशम, मरीना, सिल्क, मलमल आदिके वस्त्रोंमें ही लगाना चाहिये।

२—**गोंद** का माया भी प्रायः नर्म तथा बारीक वस्त्रोंके लिये ही अधिक उपयोगी पाया गया है अतः इसका उपयोग रेशम, मरीना, टसर, डोरिया तथा अन्य बारीक वस्त्र मलमल आदिपर करना चाहिये।

३—**आइजन ग्लोस** के मायेका उपयोग प्रायः ऐसे गर्म वस्त्रोंपर किया जाता है जिनमें रोंगटेला काम न हो तथा जो छूनेमें चिकने प्रतीत होते हों। इसलिये इसे गर्म व मरीने आदिके वस्त्रोंमें लगाना चाहिये।

४—**आरारोट** का माया वैसे तो हर प्रकारके वस्त्रोंमें लगाया जा सकता है किन्तु अधिक उपयोगी रेशम तथा मलमलके वस्त्रोंके लिये ही है इसलिये इन्हीं पर इसे इस्तेमाल करना चाहिये।

५—**चावल** का माया केवल सूती वस्त्रोंके लिये ही अधिक उपयोगी है चाहे वे बारीक हों या मोटे। खद्दरके लिये यह माया बहुत अच्छा सिद्ध हुआ है।

६—**मैदा** का माया हर प्रकारके वस्त्रोंमें लगाया जा सकता है किन्तु रेशम, टसर, मरीना आदिके वस्त्रोंके लिये उतना उपयोगी नहीं है। लट्ठा तथा अन्य धारीदार मोटे-पतले विभिन्न प्रकारके सूती वस्त्रोंपर विशेषतया इसीका प्रयोग करना चाहिये।

अगर रंगीन छींटके वस्त्रोंमें माया लगाना हो तो इसीका माया अधिक बढ़िया होगा।

कितने पानीमें कितना माया मिलावें

जबतक किसीको यह ज्ञान न हो कि हमें कितने पानीमें कितना माया मिलाना चाहिये तबतक किसी भी वस्त्रमें माया ठीक २ नहीं लग सकेगा, इसलिये यह समझ लेना बहुत जरूरी है कि कितने जलमें कितना माया मिलावें जिससे वस्त्रोंमें कलप ठीक ठीक हो सके।

१ निशास्तेका १ पाव माया ५ सेर पानीमें मिलाना चाहिये
२ गोंद ,, १ छटांक ,, १० ,, ,, ,,
३ आइजन० ,, ,, ,, ,, ,, ,,
४ आरारोट ,, १पाव ,, ,, ५ सेर ,, ,,
५ चावल ,, ,, ,, ,, ,, ,,
६ मैदा ,, ,, ,, ,, ,, ,,

कपड़ोंमें माया कब लगाया जाय ?

वैसे तो साधारणतया कपड़े धोनेके बाद उन्हें सुखानेसे पहले ही माया लगा देना चाहिये किन्तु यदि किसी वस्त्रको माया अधिक लगाना हो तो वस्त्र सुखाकर फिर मायाका पानी अधिक मात्रामें खप जाता है।

पानीमें माया घोलने व वस्त्रोंमें लगानेकी विधि

एक खुले मुंहके बरतनमें पानी भर लो और एक मज-बूत तथा साफ वस्त्रमें मायेकी पोटली बना लो। फिर अपने बाएं हाथमें पोटलीका ऊपरका सिरा पकड़कर उस (पोटली) को पानीमें डुबा दो और दहिने हाथसे धीरे-धीरे मसलते जाओ जिससे वस्त्रों में से माया छन-छनकर पानीमें मिलता जाय, किन्तु ध्यान रहे कि पोटलीवाले कपड़ेमें छेद न हो वरना मायेकी गरोड़ियां निकलकर पानीमें मिल जायंगी, जिन्हें घोलनेमें बड़ी कठिनाई होगी और यदि वे घुल न सकीं तो वस्त्रोंमें चिपक चिपककर उन्हें बदसूरत बना देंगी। आखिर जब सब माया पानीमें घुल जाय तब पोटली वाला वस्त्र नो अलग रख दो और धुले हुयेमें से एक एक वस्त्र उठाकर मायेके पानीमें अच्छी तरह झकोल झकोलकर तथा निचोड़कर सुखाते जाओ। इसी तरह सब वस्त्रोंमें माया लगा लो।

वस्त्रोंमें नील और माया साथ २ लगाना

अपने अमूल्य समयकी कुछ बचत करनेके लिये वस्त्रोंमें नील और माया एक साथ भी लगाया जा सकता है। इस विधिमें एक यह भी सुविधा है, कि दुगुना पानी खर्च होनेकी अपेक्षा आधे पानीमें ही काम चल जाता है।

पहली विधि

किसी खुले मुंहके बरतनमें पहले नील घोलकर फिर उसी (नीलवाले पानी) में माया घोल लो और वस्त्रोंमें लगा लो।

दूसरी विधि

पहले माया और नील दोनोंको अलग-अलग बर्तनमें थोड़े-थोड़े पानीमे घोल लो। फिर दोनो पानियोंको एक जगह मिला लो; किन्तु दोनोको मिलाते हुए यह ध्यान रखना चाहिए कि 'मोटे' वस्त्रोंमे नील अधिक व माया कम और 'बारीक' वस्त्रोंमें नील कम व माया अधिक लगता है, इसलिये मोटे कपड़ोंके वास्ते 'नीलका पानी मायेके पानीसे तिगुना' और बारीक कपड़ोंके वास्ते 'नीलका पानी मायेके पानीसे दुगुना' होना चाहिये।

स्टार्च

एक सुगन्ध तथा रससे हीन सफेद पाउडरका नाम स्टार्च है। यह आलू तथा चावलोसे बनाया जाता है, यह शहरोंमें आसानीसे मिल जाता है। इसका उपयोग भी माया बनानेके लिये ही किया जाता है, किन्तु इसका माया प्रायः टसरी वस्त्रोंके लिये ही उपयोगी होती है।

स्टार्चका माया बनानेकी विधि

सवा सेर सादे पानीमें ५ तोले 'स्टार्च' अच्छी तरह घोल लो,

माया तयार हो गया। इसमें कपड़ेको कुछ देर भिगोकर रख दो, फिर उसमें से निकालकर तथा निचोड़कर सुखा लो।

दूसरी विधि

तीन तोले स्टाच, चार तोले सादा पानी, एक तोला तारपीनका तेल, पहले इन तीन चीजोंको एक जगह मिलाकर फिर खौलते हुए सवा सेर पानीमें मिला दो और उसी समय आगसे नीचे उतार लो, बस ! फिर उसे वस्त्रोंमें लगानेके काममें लाओ।

वस्त्र सुखानेका स्थान

जिन वस्त्रोंको धोकर साफ करनेके लिये अथक परिश्रम किया गया हो, जिन्हे खूबसूरत तथा पूर्ण चमकीले बनानेके लिये उनपर नील व माया आदि विभिन्न पदार्थोंका उपयोग किया गया हो यदि उनके सुखानेका स्थान साफ-सुथरा तथा धूपवाला न हो तो फिर उनकी क्या दशा होगी ? इस बातको प्रिय पाठक व पाठिकाएं स्वयं समझ सकता हैं।

आजकल धोबी लोग तथा हमारे बहिन भाई अपने धुले हुए वस्त्रोंको प्रायः झाड़ी, पेड़, घास, ईटोंके चट्टे और लकडियोंके ढेर आदि पर डालकर सुखाते हैं परन्तु उनका यह तरीका ठीक नहीं, क्योंकि,—

१—झाड़ियोंके ऊपर वस्त्र सुखानेसे कभी-कभी वे काटोंमें उलझकर फट जाते हैं, इससे कीमती कपड़ोंका सर्वनाश हो जाता है।

२—पेड़ोंके नीचे वस्त्र पहले सूखते ही देरमें है क्योंकि वहां

पत्तोंकी तरावट छाया कपड़ोंपर धूपकी तेजी नहीं पहुंचने देती। इसके अतिरिक्त वहां पक्षियोंके वोट आदि करनेका बड़ा खतरा रहता है और यदि उन्हें छोटे-छोटे पेड पौधोके ऊपर फैलाकर सुखाया जाय तो उनसे चिपटी हुई धूल-मिट्टी सारे वस्त्रोंको गन्दा कर देती है। पक्षी आकर उनके ऊपर किलोल करते हैं जिनके पंजोंमें फंसकर कपड़े फट जाते हैं।

३—घासके ऊपर कपडे सुखानेमें एक नहीं अनेक दोष हैं। पहले तो वहा कपडे धूल-मिट्टीसे ही नहीं बच सकते, इसके अतिरिक्त हर समय कपडोकी रखवालोके लिये वहा खड़े रहना पड़ेगा अन्यथा कोई घासका भूखा जानवर वहातक आ पहुचा तो वह घासपर फैले हुये कपड़ोंको चबायगा नहीं तो भी कमसे कम अपने खुरोसे रौंद-कर या गोबर करके उन्हे गन्दा तो अवश्य ही कर देगा।

४—ईंटोंपर कपड़े सुखानेसे उनमें ईंटोंकी जर्दी लग जानेका पूरा अन्देशा रहता है।

५—लकड़ियोंके ढेरपर सुखाये हुए कपड़े भी सुरक्षित नहीं रह सकते, क्योंकि वहां भी उनके फटनेका खतरा बना रहता है।

कपड़े सुखानेके लिये रस्सी बेत व बांसका उपयोग

एक लम्बी तथा साफ-सुथरी रस्सी लेकर वहां बांध दो जहां खूब तेज धूप हो, क्योंकि छायामें कपड़े सुखानेसे उनमें उतनी चमक

नहीं आ सकती जितनी धूपमें सुखानेसे आ जाती है। बस ! अब रस्सीपर धुले हुए वस्त्र फैलाकर सुखा लो।

यदि कोई लम्बा बेंत या बांस मिल जाय तो उसके दोनों सिरे किसी जगह अटकाकर उन्हें खूब मजबूत बांध दो जिससे वे नीचे न गिर सकें, फिर किसी पुराने कपडेसे उसके ऊपर लगा हुआ मिट्टी-गर्दा बिलकुल साफ कर दो ताकि सुखाए जानेवाले वस्त्र मैले न हो सकें। इसके बाद धुले हुए वस्त्रोंको फैलाकर सुखा लो।

अन्य उपाय

यदि कहीं रस्सी या बेंत आदिके बांधनेकी सुविधा न हो तो क्या किया जाय ?

आप ६ डण्डे ऐसे ले लीजिये जिनकी ऊंचाई एक समान हो, उनमेंसे तीन २ डण्डोंको एक जगह मिलाकर उनके ऊपरवाले सिरों को मजबूत बांधकर जमीनपर इस तरह खड़े कर दें कि जिस तरह दूकानदार तुलाईका कांटा टांगनेके लिये तीन डण्डे बांधकर खड़े कर लेते हैं। इस तरह आपके पास डण्डोंके तीन स्तम्भ (खम्भे) हो जायंगे। उन्हें आप एक सीधमें खड़े करके उनके ऊपर रस्सी तान दें, जितनी लम्बी रस्सी आपको बांधनी हो उतनी ही दूर दूर खम्भों को खड़े कर दीजिये। उनके ऊपर तनी हुई रस्सी पर धुले हुए कपड़े फैलाकर सुखा लो।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—वस्त्रोंको धोनेसे पहले उनपर निशान क्यों और किस प्रकार लगाने चाहिये।

२—वस्त्रोपर निशान करनेके लाभ और साधन क्या हैं ? उनपर निशान न लगानेसे क्या हानि होगी ?

३—जैटोलाइन मार्किंग इंक (स्याही) कच्ची है या पक्की ? इसके बनानेकी क्या रीति है ?

४—वस्त्रोंको नील और माया क्यों लगाया जाता है ? उसके लगाने की विधि क्या है ? नील किन-किन वस्त्रोंपर लगाना चाहिये ।

५—माया किन-किन पदार्थोंसे बनाया जाता है और कैसे-कैसे ?

६—किस वस्त्रपर किस पदार्थका माया उपयुक्त हो सकता है ?

७—रेशमी वस्त्रोंपर किस चीजका माया लगाया जाता है ?

८—क्या वस्त्रोंको नील और माया एक साथ लगाया जा सकता है, यदि हां ? तो किस प्रकार ?

९—धुले हुए वस्त्र सुखानेका स्थान कैसा होना चाहिये ?

१०—निशास्ता कैसे बनाया जाता है ? मिलावा क्या है ? किस-किस काममें आता है, इसका उपयोग कैसे किया जाता है ?

तीसरा अध्याय

पिछले अध्यायोंमें सूती कपड़े धोनेकी विधि तथा उनके लिये उपयोगी पाउडर आदि विविध पदार्थोंका वर्णन किया गया है परन्तु हम देखते हैं कि ज्यों-ज्यों मौसम बदलते हैं त्यों-त्यों हमें मौसमके अनुसार अपने शरीरकी रक्षाके लिये कपड़े भी बदलने पड़ते हैं इसके साथ ही उनकी धुलाईमें भी विशेष अन्तर आ जाता है इसलिए इस अध्यायमें उन कपड़ोंके धोनेकी विधि तथा उनकी रक्षाके लिये उपयोगी पदार्थोंका वर्णन किया जायगा जो भिन्न-भिन्न मौसिमों पहने जाते हैं। वे कपड़े वैसे तो कई प्रकारके होते हैं किन्तु मुख्य रूपसे उनके दो विभाग किये जा सकते हैं—

१ रेशमी २ ऊनी

रेशमका मूल्य सूतकी अपेक्षा अधिक होता है इसलिये रेशमी कपडोंके धोनेमे सूती कपड़ोंकी अपेक्षा अधिक ध्यान रखना पड़ता है। उन्हें धोनेके लिये जो पदार्थ (सोडा-साबुन आदि) उपयोगमें लाए जाते हैं वे बिलकुल स्वच्छ और अचूक होने चाहिए। उन्हें धोनेमें साबुन और सोडेका ही विशेष उपयोग किया जाता है यदि

साबुन स्वच्छ होगा तो वस्त्र भी स्वच्छ हो जायंगे इसलिए साबुनकी स्वच्छताका विशेष ध्यान रखना चाहिए।

रेशमी वस्त्र धोनेकी पहली विधि

पहले आधसेर पानीमें ५ तोले सोडा अच्छी तरह घोलकर उसे किसी स्वच्छ तथा बारीक वस्त्रमें छान लो, फिर उसमें आठ सेर पानी और मिला लो, इस पानीमें मैले रेशमी वस्त्रोंको खूब तर कर लो और बीस मिनट तक उसीमें भीगे रहने दो। इसके बाद उन्हें सोडेके पानीसे निकालकर साबुनके पानीमें (जो पहलेसे ही तैयार रखना चाहिये) डाल दो और उसमें अच्छी तरह झकोले देकर नम्बरवार एक-एक कपड़ेका थोड़ा-थोड़ा भाग बाएं हाथपर रखकर उसे दहिने हाथसे रगड़ो इससे दो लाभ होंगे, एक तो साबुन कपड़े के तमाम तन्तुओंमें समा जायगा, दूसरे वस्त्रोंका मैल बहुत जल्दी फूल जायगा। जब मैल कुछ २ फूलने लगे तब उन्हे धूपमे फंला दो। जब वे कुछ फरहरे हो जायं तब उन्हे फिर पहलेकी तरह मल-मलकर स्वच्छ पानीसे धो डालो। इसके बाद उन्हें फिर साबुनके साफ पानीमें तर करके जहां-जहां मैलसा प्रतीत होता हो वहां-वहांसे मलकर स्वच्छ गर्म पानीसे सारे कपड़े धो डालो जिससे उनमें कहीं साबुनका अंश न रहने पावे। इस तरह करनेसे रेशमी वस्त्र बिलकुल साफ हो जायंगे।

साबुनका पानी बनानेकी विधि

रेशमी वस्त्र धोनेका एक पाव साबुन बारीक काटकर उसे एक

सेर पानीमें उबाल लो, जब साबुन और पानी एक हो जाय तब उसमें आठ सेर पानी और मिलाकर एक उबाल फिर दे दो, बस! यही साबुनका पानी है।

रेशमी वस्त्र धोनेकी दूसरी विधि

रेशमी वस्त्र धोनेका एक पाव साबुन बारीक काटकर उसे डेढ़ सेर पानीमें डालकर आगपर चढ़ा दो, जब तमाम साबुन पानीमें घुल जाय तथा उसकी लप्सी-सी बन जाय तब उसमें ५ तोले सोडा तथा आठ सेर पानी और मिलाकर उबाल लो। इसके बाद पानीका बरतन आगसे नीचे उतारकर उसमें मैले रेशमी वस्त्र भिगो दो और आधे घण्टे तक उसीमें पड़े रहने दो जिससे उसमें जमा हुआ सारा मैल फूल जाय। फिर कपड़ेको पहली विधिके अनुसार हाथोंसे मसलकर स्वच्छ गर्म जलसे धोकर साफ कर लो।

सर्ज धोना

सर्ज धोनेके लिये ठण्डे पानीमें साबुनके झाग निकालकर उसमें वस्त्रको आध घण्टे तक भिगो रखो। इसके बाद सर्जका थोड़ा-थोड़ा-भाग बाएं हाथपर रखकर एक दूसरे हाथसे धीरे-धीरे मसलो। जब सारा मैल कट जाय तब उसे तुरन्त गर्म पानीमें डाल दो और अच्छी तरह धोकर छायामें सुखा लो।

लेकिन धोनेसे पहले उसे ब्रशसे अवश्य झाड़ लेना चाहिये, जिससे उसके रोंओंमें समाई हुई गर्द वगैरह साफ हो जाय।

काश्मीरा धोना

काश्मीरेको धोनेसे पहिले ब्रश द्वारा झाड लो। फिर गर्म पानीमें साबुनके झाग निकाल लो। जब सारा पानी झागयुक्त हो जाय तब उसमे थोडा-सा अमोनिया मिला लो, इससे वस्त्र साफ करनेमें सुविधा रहेगी। इसके बाद काश्मीरेको उस पानीमें भिगो दो और करीब आधे घण्टे तक भीगा रहने दो जिससे कपड़ेका सारा मैल अच्छी तरह फूल जाय। फिर धीरे-धीरे उसकी सलवटे खोलकर उनका थोडा-थोडा भाग बाएं हाथकी हथेलीपर रखकर दाहिने हाथ की हथेली द्वारा मसलकर सारा कपडा साफ कर लो तथा स्वच्छ पानीसे धो डालो जिससे उसमे साबुनका अंश न रहने पावे। इसके बाद एक बरतनमें आठ सेर थोडे गर्म पानीमें चार तोले नमक मिलाकर उस (नमक वाले) पानीमें काश्मीरेको अच्छी तरह झकोलकर निचोड लो और धूपमें फैलाकर सुखा लो।

मरीना धोना

मरीनेको भी धोनेसे प्रथम ब्रश द्वारा झाड़ लेना आवश्यक है। इसे धोनेके लिये किसी खुले मुंहके बरतनमे ठण्डा पानी लेकर उसके (साबुनके) झाग उठा लो। जब सारा पानी झागमय हो जाय तब उसमें थोडासा अमोनिया मिला दो। इस (अमोनिया मिले हुए साबुनके) पानीमे मरीनेके वस्त्र भिगा दो और करीब आध घण्टे तक भीगे रहने दो जिससे उनका मैल फूल जाय। फिर

उन्हें काश्मीरेकी विधिसे धोकर साफ कर लो। इसके बाद पांच सेर ठण्डे पानीमे ६ माशे नीम्बूका सत घोलकर धूपमें सुखा लो।

सर्ज, मरीना और काश्मीरा धोते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि इनपर कभी साबुनको रगड़ा न जाय, इन्हें मरोड़ कर न निचोड़ा जाय और न कभी पछाड़ कर या कूट-पीटकर धोया जाय, वरना वे बदसूरत तो हो ही जायंगे, साथ ही फट भी जा सकते हैं।

पहले तो ब्रशसे साफ की हुई फलालैनको 'साबुनके पानी' में धोकर साफ कर लो, फिर उसे 'नमकके पानी' में धो डालो। इसके बाद उसे 'तीसरे बरतनमें भरे हुए सादे पानी' में धोकर सुखा लो। इसे धोते समय मरोड़ कर नहीं, किन्तु काश्मीरेकी तरह मसल कर साफ करना चाहिये।

यदि फलालैनका वस्त्र सफेद हो तो तीसरे बर्तनमें भरे हुए स्वच्छ सादे गर्म पानीमें थोड़ा-सा नील घोल लेना चाहिये और यदि किसी दूसरे रङ्गका हो तो नील न घोलकर पानीमें एक चम्मच सिरका डालना चाहिये। इन दोनों विधियोंसे दोनों तरहके कपड़ोंकी चमक दमक बढ़ जायगी।

कसीदेवाली रेशमी साड़ी धोना

कसीदेवाली रेशमी साड़ी तथा इससे भिन्न रेशमी वस्त्रोंकी धुलाईमें केवल इतना ही अन्तर है कि दूसरे रेशमी वस्त्र तो चाहे जितने गर्म पानीमें धोए जा सकते हैं किन्तु रेशमी साड़ी (जिसपर

रेशमी धागोंसे बेल-बूंटे तथा कसीदा किया हुआ हो) को अधिक गर्म पानीमें नहीं धोना चाहिये वरना उसके कसीदेके धागोंका रङ्ग धोना चाहिये वरना उसके कसीदेके धागोंका रङ्ग छूट जायगा (क्योंकि उनका रङ्ग अधिकतर पक्का नहीं होता) और फिर साडी-पर जहा-तहा रङ्ग-बिरंगे धब्बे पड जायंगे इससे वह बिलकुल बदसूरत हो जायगी । इसके धोनेकी शेष विधि अन्य रेशमी वस्त्रों जैसी ही है ।

पशमीना धोना

पहले दो बड़े बरतनोंमे अलग-अलग 'सनलाइट साबुन' के झाग ठण्डे पानीमें उठा लो । एकमे तो पशमीनेको ब्रशसे झाडकर भिगो दो और दूसरेको गर्म कर लो । जब वह पकने लग जाय तब उसे नीचे उतार कर उसमें १ तोला सोडा मिला दो और पशमीनेको ठण्डे पानीसे निकाल कर इसमे भिगो दो । फिर आध घंटे बाद उसे काश्मीरेकी तरह धोकर सुखा लो ।

ऊनी (गर्म) वस्त्रोंपर रीठोंकी उपयोगिता

ऊनी वस्त्र धोनेके लिये रीठे बहुत उपयोगी हैं उनसे वस्त्र बिलकुल साफ हो जाते हैं । वैसे तो आजकल नगरोंमें ऊनी वस्त्र धोनेके लिये 'लक्स' तथा 'सनलाइट सोप' का भी उपयोग किया जाता है किन्तु इनमें रीठोंकी सी उपयोगिता नहीं है ।

रीठोंसे ऊनी वस्त्र धोनेकी विधि

रीठोंको पत्थरसे तोडकर उनके अन्दरसे निकलनेवाली गुठलियां तो फेंक दें और छिलकोंको थोड़ेसे पानीमें उबाल लें। जब वे गल जायं तब उन्हें आगसे नीचे उतारकर पहलेसे दुगुना ठण्डा पानी और मिला दें। इसके बाद रीठोंको हाथोंसे मसल-मसलकर पानीमें उनके झाग उठा ले। फिर झागवाले पानीको छानकर रीठोंके फोकसकी तो पोटली बना लें और पानीमें ऊनी वस्त्र भिगो दें। जब उनका मैल फूल जाय तब उन्हें किसी पट्टे या पक्के फर्शपर फैलाकर पहले तो ब्रशसे और फिर रीठोंके फोकसवाली पोटलीसे रगड़-रगड़कर धो लें। वस्त्र बिलकुल स्वच्छ हो जायंगे।

लक्ससे ऊनी वस्त्र धोनेकी विधि

धोये जानेवाले वस्त्रोंके अनुसार जितने लक्सकी आवश्यकता समझी जाय उतना लक्स लेकर उसे खौलते हुए पानीमें घोल दो और उसे इतना ठण्डा कर लो जिसमें हाथ डाला जा सके फिर उसमें ऊनी वस्त्र भिगो दो। जब उनका मैल फूल जाय तब उन्हें 'ब्रश' द्वारा धोकर स्वच्छ पानीसे साफ करके धूपमें सुखा दो किन्तु धोते समय यह ध्यान अवश्य रखना चाहिये कि उनमें कहीं लक्स-का अंश न रह जाय वरना वस्त्र कमजोर हो जायंगे।

फलानैन धोनेकी विधि

फलानैनको भी धोनेसे पहले ब्रशसे अच्छी तरह साफ कर लेना चाहिये और नीचे लिखी बातोंपर अधिक ध्यान देना चाहिये।

१—फलानैनको साबुनके उबले हुए पानीमें धोना चाहिये लेकिन पानी न बहुत गर्म हो और न बहुत ठण्डा।

२—फलानैनको जल्दीसे जल्दी सुखानेकी कोशिश करनी चाहिये वरना उसमें दुर्गन्ध पैदा हो जायगी।

३—इसे यदि ठण्डे पानीमें धोया गया तो कपडा सिकुडाकर बद-सूरत प्रतीत होने लगता है।

४—पानीमें कपड़ा डालनेसे पहले थोड़ीसी 'ग्लेसरीन' मिला लेनी चाहिये इससे न तो कपडे सख्त होंगे और न उनके सिकुडने का ही भय रहेगा।

५—इसे धोनेके लिये तीन बर्तनोंकी आवश्यकता होती है एकमें तो पूर्व विधिके अनुसार बनाया हुआ 'साबुनका पानी' दूसरेमें 'गर्म नमकीन पानी' और तीसरेमें 'सादा गर्म पानी' भरा होना चाहिये।

६—इसे मरोडकर नहीं निचोडना चाहिये। इस तरह निचोडनेसे इसके फटनेका खतरा रहता है।

सनलाइट सोपसे ऊनी वस्त्र धोना

सनलाइट सोप चाकूसे बारीक २ काटकर उसे थोडेसे पानीमें उबाल लो। जब साबुन और पानी एक हो जाय तब उसमें धोए जानेवाले वस्त्रोके अनुसार और पानी मिलाकर फिर उबाल लो। इसके बाद उसे आगसे नीचे उतारकर उसमें वस्त्र भिगो दो। जब उनका मैल फूल जाय तब उन्हें ब्रश द्वारा धोकर तथा स्वच्छ जलसे साफ करके धूपमें सुखा लो।

रेशमी व ऊनी वस्त्रोंपर चमक करनेकी विधि

यदि रेशमी व ऊनी वस्त्रोंको चमकदार बनाना हो तो दस सेर थोड़े गर्म पानीमें चार तोले सिरकेका या तीन तोले नमकका अथवा पांच तोले गन्धकका तेजाब मिला लो। उस (तेजाब मिश्रित) पानीमें धुले हुए गीले रेशमी व ऊनी वस्त्रोंको अच्छी तरह झकोले दे लो और निचोड़कर धूपमें सुखा लो। इस तरह सारे वस्त्र चमकदार हो जायेंगे।

रेशमी व ऊनी वस्त्र धोनेके लिये जहां जहां साबुनका उपयोग बतलाया गया है वहां या तो 'सनलाइट सोप' या रेशमी वस्त्र धोनेके खास साबुन अथवा साबुन बनानेके प्रकरणमें लिखे हुए रेशमी व ऊनी वस्त्र शोधक साबुनका इस्तेमाल करना चाहिये।

अगर किसी रेशमी वस्त्रको 'माया' लगाना हो तो माया बनानेके प्रकरणमें देख लेना चाहिये कि किस वस्त्रके लिये कौनसी वस्तुका कलप अधिक उपयोगी होगा। यदि रेशमी वस्त्रोंको माया लगाया ही न जाय तो और भी उत्तम होगा और लगाना आवश्यक हो तो तेजाबके बाद बहुत मामूली लगा देना चाहिये जिससे वस्त्रोंमें विशेष 'अकड़ाहट' न आ जाय। क्योंकि रेशमी-वस्त्र मुलायम ही अच्छे प्रतीत होते हैं।

कपड़ोंमें तेजाब लगानेके बाद हाथोंको साबुनसे धोकर तेल लगा लेना चाहिये।

गर्म कपड़ोंपर सूखी धुलाई

Dry clean

जैन्टिलमैनों (Gentlemen) के वर्तमान फैशन-युगमें इस धुलाईको बहुत पसन्द किया जाता है इसलिये हमने भी इसपर कुछ प्रकाश डालना आवश्यक समझा।

इसके लिये पांच चीजोंकी आवश्यकता होती है—

१ मेज, २ ब्रश, ३ चिलमची, ४ पेट्रोल, ५ मैथीलेटेड स्प्रिट।

पहले चिलमचीको साफ करके उसमें "पेट्रोल" तथा 'मैथीलेटेड स्प्रिट' को मिलाकर तैयार कर लो। अगर 'पैट्रोल' तीन पाव हो तो उसमे 'मैथीलेटेड स्प्रिट' एक पाव मिलानी चाहिये बस। यही 'ड्राई क्लीन' करनेका मसाला है।

फिर मेजपर एक मोटा कपडा 'जो सुकड़ न सके' फैलाकर उसके ऊपर कोई स्वच्छ चादर बिछा दो। उसके ऊपर वह कपडा फैला लो जिसे साफ करना है। पहले तो उसे ब्रशसे अच्छी तरह साफ कर लो जिससे उसके रोंगटोंमें भरा हुआ तमाम गर्दा मिट्टी निकल जाय। फिर उसके ऊपर ब्रश द्वारा चिलमचीमें तैयार रखे हुए मसालेकी पालिश करना आरम्भ कर दो और साथ ही साथ (ब्रशसे) रगड़-रगड़कर उसे साफ भी करते जाओ। इस प्रकार सारा वस्त्र साफ होकर चमक उठेगा। फिर उसे पहले तो कुछ देर छायामे बादमें धूपमे डाल दो ताकि कपड़ेमें समाई हुई पैट्रोलकी गन्ध उड़ जाय। इसके बाद उसपर इस्तरी कर लो।

लेकिन ध्यान रहे कि 'ड्राइक्लीन' करते समय आसपासमें कहीं आग नहीं रहनी चाहिये। क्योंकि पैट्रोल तथा स्प्रिटसे आग बहुत जल्द भभक उठती है, इसलिये ये दोनों ही बड़ी खतरनाक चीजें हैं, ऐसी चीजें कभी बच्चोंके हाथमें नहीं पड़ने देना चाहिये।

दूसरी विधि

इस विधिमें और पहली विधिमें केवल इतना ही अन्तर है कि पहली विधिमें 'पैट्रोल' के साथ 'मैथिलेटेड स्प्रिट'का उपयोग किया जाता है और इस विधिमें केवल 'पैट्रोल' ही इस्तेमाल किया जाता है।

तीसरी विधि

इस विधिमें और सब बातें तो प्रथम विधिके ही अनुसार हैं, अन्तर केवल इतना ही है कि इस विधिमें 'बैनजन' (Bengan) द्वारा 'ड्राइक्लीन' की जाती है। यह पदार्थ भी पैट्रोलकी तरह पतला तथा उसीके समान गुणोंवाला होता है। इसमें भी आग बहुत जल्दी असर करती है।

चौथी विधि

इस विधिमें तथा प्रथम विधिमें केवल इतना ही अन्तर है कि वहां तो पैट्रोल आदिसे वस्त्र साफ किये जाते हैं और यहां 'बैनजोल (Bengol) से। यह पदार्थ भी पतला ही होता है। इसमें पैट्रोल के और तो सब गुण वर्तमान हैं, तथा इसके उपयोगकी विधि भी

पैट्रोल जैसी ही है, किन्तु इसमें जल्दीसे आग लगनेका भय नहीं रहता और यह है भी पैट्रोलसे सस्ता।

पांचवीं विधि

सूखी धुलाई (Dry clean) कोई नया आविष्कार नहीं; किन्तु एक प्राचीन स्वदेशी विधिका ही सुधार है। इसकी प्राचीन विधि यह है—

रे (कल्लर) एक प्रकारकी खारी मिट्टी होती है यह स्वदेशी तथा विदेशी दोनों ही तरहकी मिलती है। आप दोनोंमेंसे चाहे जौन सी ले लें। उसे पानीमें घोलकर रबडी सी बना लें। इसकी ऊनी वस्त्रपर पालिश करके धूपमें सुखा लें। फिर ब्रश द्वारा रे को छान डालें—कपडा बिलकुल साफ निकल आयेगा। उसकेबाद उसपर इस्तरी कर लें।

गर्म वस्त्रोंमें कीड़ा लगना

आपने देखा होगा कि जब शरद ऋतु आती है और सब कोई सर्दीसे शरीरको बचानेके लिये अपने अपने गर्म वस्त्र सन्दूकोंसे बाहर निकालते हैं तो उनमें कहीं कहीं छोटे-छोटे छेद हुए दिखाई देते हैं। आपको मालूम है, ये छेद कहासे आ गये? उन छेदोंके करनेवाले एक प्रकारके कीडे होते हैं जो हमें दिखाई तो नहीं देते, किन्तु यदि कभी सन्दूकमें रखे हुए गर्म वस्त्रोंमें नमी आ जाय तो फौरन वहा जन्म लेकर कपडा कुतरना आरम्भ कर देते हैं।

इसीको 'कुरा' लगना भी कहते हैं। परन्तु सूत मिले हुए गर्म वस्त्रों में भी कभी कीड़ा नहीं लगता।

गर्म वस्त्रोंको कीड़ोंसे बचानेके उपाय

१, जहा तक हो सके, गर्म वस्त्रोंको सन्दूकमें दबाकर नहीं रखना चाहिये, किन्तु उन्हें उल्टाकर जिससे उनका सूती कपड़ा बाहर तथा ऊनी कपड़ा अन्दरकी ओर आ जाय, किसी साफ खुंटी पर टाग देना चाहिये। अगर किसी कारणसे उन्हें न उल्टाया जा सके तो उनके ऊपर कोई सूती वस्त्र ढक देना चाहिये जिससे उनमें गर्दा वगैरह न भर सके।

२, अमीर घरोंमे बड़ी बड़ी शीशेदार आलमारियां होनी चाहिये जिनमें खुंटियां लगी हों। उनपर ऊनी वस्त्र टांगकर आलमारीका ताला बन्द कर दें।

३, यदि ऊनी वस्त्र सन्दूकमें ही रखने हों तो उनकी प्रत्येक तहमें सूती वस्त्रकी तह लगा दो तथा उनकी जेबों और आस्तीनों में नीमकी सूखी पत्तियां रख दो, फिर उन्हे सन्दूकमें रखनेमें कुछ भय नहीं, किन्तु सन्दूक भी ऐसी जगह रखा जाय जहां नमी न हो।

४, ऊनी वस्त्रोंको समय-समयपर धूपमें सुखाते रहना चाहिये इससे उनमें नमी आयगी और न कीड़ा-कुरा लगेगा, किन्तु बरसात की मौसममें उनका विशेष ध्यान रखना चाहिये।

ऊनी वस्त्रोंको कीड़ोंसे बचानेकी सामग्री

१ तमाखु
२ नीमकी सूखी पत्ती
३ फिटकरीका चूर्ण
४ काली मिर्चोंका चूर्ण
५ लौंगका चूर्ण
६ कपूर
७ चन्दनका बुरादा
८ मरवेके पत्ते
९ फिनाइलकी गोलियां
१० इमलीके सूखे पत्ते
११ सांपकी कांचली
१२ कलौंनी
१३ कस्तूरी
१४ चम्पाके फूलोंका बुरादा
१५ पीपरमेण्ट

उपर्युक्त सामग्रीकी उपयोग विधि

फिनाइलकी गोलियां तो ऊनी वस्त्रोंकी तहों, आस्तीनों और जेबोंमें वैसे (खुली हुई) ही डाल देनी चाहिए। उसके अतिरिक्त अन्य वस्तुओंमेंसे जिस वस्तुका उपयोग करना हो, किसी बारीक वस्त्रमें उसकी छोटी-छोटी पोटलियां बनाकर वस्त्रोंम रख देनी चाहिए। उन सब वस्तुओंकी गंधके मारे कीड़े वस्त्रोंके पास नहीं फटकने पाते। सांपकी कांचली यदि बिना पोटली बनाए हुए भी वस्त्रोंमें रख दी जाय तो कुछ हानि या खतरा नहीं।

कीड़ा लगे हुए वस्त्र व सन्दूककी रक्षा

अगर किसी ऊनी वस्त्रमें कीड़ा लगना आरम्भ हो गया हो तो उसे मेज या पट्टे पर फैलाकर उसके ऊपर एक बारीक कपड़ा भिगो कर फैला दो और उसके ऊपर गर्म इस्तरी फेर दो। इस विधिसे

कपड़े में एक प्रकारकी गैस उत्पन्न हो जायगी, जो तमाम कीड़ोंको फूंक देगी। इसके बाद कपड़ोंको धूपमें सुखाकर उसमें तमाखुके पत्तोंकी पोटलियां, या फिनाइलकी गोलियां डालकर रख दो फिर उसमें कीडा लगनेका भय नहीं रहेगा।

यदि किसी कम्बल, लोही अलवान, अण्डी, दुशाले या गलीचेमें कीडा लगना आरम्भ हो जाय तो उसपर प्रथम तो पूर्व विधिके अनुसार इस्तरी फेर लो जिससे उसके तमाम कीड़े जल जायं। फिर उसे धूपमें सुखाकर पहले तो उसपर 'अर्ककपूर' छिड़क दो। फिर उसमें फिटकरी या तमाखुके चूर्णकी पोटलियां, अथवा फिनाइलकी गोलियां डालकर रख दो, ऐसा करनेसे फिर उसमें कीडा लगनेका खतरा नहीं रहेगा।

यदि किसी आलमारी या लकड़ीके सन्दूकमें कीड़ा (दीमक) लग गया हो या लगना आरम्भ हो गया हो तो उसमें तमाखुका काढ़ा बनाकर पोत देना चाहिए। इससे पहले लगे हुए कीड़े तो मर ही जायंगे किन्तु साथ ही जबतक इसको गन्ध वर्तमान रहेगी तब तक उसमें कभी कीड़ा नहीं लग सकेगा।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—सूती और रेशमी वस्त्रोंकी धुलाईमें क्या अन्तर है? मरीना और सर्ज धोनेकी क्या विधि है?

२—सूखी धुलाईकी कितनी और कौनकौन सी विधियां हैं?

३—सफेद फलालैन तथा रंगीन फलानैन की धुलाईमें कितना अन्तर है?

४—ऊनी तथा रेशमी वस्त्रोंको तेजाब क्यों लगाया जाता है ?

५—गर्म कपड़ोंको कीड़ा लगनेसे किस तरह बचाया जा सकता है ?

६—ठण्डे वस्त्रोंमें कीड़ा क्यों नहीं लगता ?

७—जिस वस्त्रपर कीड़ा लग गया हो उसे किस प्रकार सुरक्षित रखा जा सकता है ?

८—कसीदेवाली रेशमी साड़ी कैसे धोई जायगी ?

९—पशमीना और कश्मीरा धोओ ?

१०—गर्म कपड़ोंमें कीड़ा कैसे लगता है ?

चौथा अध्याय

इस्तरी

इस्तरीकी उपयोगिता

आपने देखा होगा—कि जब कपड़े धोनेके बाद उन्हे धूपमें सुखाया जाता है तो चाहे वे रेशमी हों या सूती उनमें सलवटें पड़ जाती हैं। जिनसे वस्त्रोंकी सारी शोभा नष्ट हो जाती है; किन्तु आधुनिक संसारके आविष्कर्ताओंसे यह बात भी छिपी न रही, झट 'इस्तरी'का आविष्कार हो गया। यह वस्त्रोंकी सलवटें दूर करनेके लिये बड़ी उपयोगी वस्तु है।

वस्त्रोंपर इस्तरी करनेकी साधारण विधि

जिन कपड़ोंपर इस्तरी करनी हो, सबसे पहले उनपर ठण्डे पानीके कुछ छींटे देकर उन्हें दबाकर रख दो जिससे उनमें नमी आ जाय। फिर किसी मेज़ या लकड़ीके चौड़े पट्टेपर खेस या कम्बल आदिका एक इञ्च मोटा गदेला लगाकर तथा उसके ऊपर एक स्वच्छ चादर बिछाकर उसके ऊपर एक ओर इस्तरी किये

जानेवाले कपड़ेको रख लो। किन्तु नीचे बिछाये हुए कपड़ोंमें कोई सिकुड़न नहीं होनी चाहिये वरना वह कपड़ोंपर इस्तरी करते करते समय बीच २ में बाधा डालती रहेगी। कपड़ोंपर इस्तरी फेरनेसे पहले उसकी तली खूब साफ कर लेनी चाहिये जिससे उसपर कहीं मिट्टी आदि न लगी रह जाय, नहीं तो उससे कपड़े भी मटीले हो जायंगे। इसके बाद जब वस्त्रोंपर इस्तरी फेरना आरम्भ करो—तो जिस ओरसे आरम्भ करो उसके सामनेका भाग अपने दूसरे हाथसे खींचे रहो, जिससे कपड़ेकी सलवटें दूर होकर उसपर इस्तरी करनेमे सुविधा रहे।

इस्तरी गर्म करनेकी विधि

इस्तरीकी अङ्गीठीमें कोयले भरकर उसे गर्म कर लो। उसकी गर्मीकी परीक्षा करनेके लिये उसे मेजपर बिछी हुई चादरपर फेर-कर देख लो। यदि ताप अधिक समझो तो उसे किसी गीले वस्त्रपर फेरकर कम कर लो। यदि (ताप) कम प्रतीत हो तो उसे और गर्म कर लो।

गर्म इस्तरीको रखनेकी विधि

वैसे तो गर्म इस्तरी रखनेके लिये लोहेकी एक फुट ऊँची तिपाई जिसका मुंह ऊपरसे खुला हो, अति उत्तम है। किन्तु इसके अभावमे साधारणतया ईंटोंकी तिपाई-सी बनाकर उसके ऊपर भी इस्तरी रखी जा सकती है, हां। लकड़ी तथा जमीनपर भी नहीं रखनी चाहिये। क्योंकि लकड़ीके जलने और जमीनपर

इस्तरीकी तलीमें मिट्टी लगानेका अन्देशा रहता है। अगर इस्तरी तिरछी करके रखी जाय तो और भी उत्तम होगा, इससे उसकी राख नीचेको झड़ती रहेगी।

भिन्न २ वस्त्रोंपर इस्तरी तथा उनकी तह करनेकी विधि

कमीज—पहिले कमीजके कफ, आस्तीन, कालर और बैनपर इस्तरी करके फिर उसके आगे पीछेका भाग मेज़पर फैलाकर उसे इस्तरीसे अच्छी तरह साफ कर लो। फिर लम्बाईके दोनों सिरे आस्तीनों समेत पीछेकी ओर मोड़कर उनपर इस्तरी फेर दो। इसके बाद उसे चौड़ाईकी तरफसे बीचमेंसे दुहरा दो। इसके अतिरिक्त जम्पर, ब्लौज, फ़राक, गाउन, कुर्ता और बनियान आदि पर भी इस्तरी करनेकी यही विधि है।

कोट—पहले कोटके नपेल तथा कालरपर इस्तरी करके फिर उसके दोनों पासों (पर्दों) पर करो। उसके बाद शेष सारे कोटपर इस्तरी करके फिर उसके कन्धोंपर करो। तह करते समय कोटके बैकसीमके पास दोनों आस्तीनोंके सिरोंको मिलाकर दोनो सामनोंको बैकसीमके साथ मिला लो तथा उसे दुहराकर फिर चौहरा कर लो। अचकनपर इस्तरी इसी तरह करनी चाहिये।

वेस्टकोट—पहले बेस्टकोटके कालर, दोनों सामनों व गायवियोंपर इस्तरी करके फिर उसके सब बैकपर इस्तरी करो।

फिर उसके कन्धों तथा सामनेके किनारोंकी ओरसे मोड़कर कोट की तरह चौहरी तह कर लो।

नेकर—पहले नेकरके दोनों मोहरोंपर इस्तरी फेर लो। फिर उसके मुहरोंकी दोनों ओरकी दराज़ोंको मिलाकर उनपर दुबारा इस्तरी करके नेकरको बीचमेंसे दुहरा कर उसकी तह कर लो।

पतलून—पतलूनको मेजपर फैलाकर पहले उसकी सब बाडी पर इस्तरी कर लो। फिर उसके पहुंचोंकी दोनों ओरकी सिलाईकी दराजोंको मिलाकर उनपर इस्तरी करके पतलूनको बीचमेंसे दुहरा कर उसकी तह कर लो।

ब्रिजिश—पहले इसकी सब बाडीपर इस्तरी फेरकर फिर घुटने तथा खुच्चको साफ कर लो। उसके बाद उसको दराज़ मिलाकर तथा बीचमेंसे मोड़कर तह कर लो।

सलवार—पहले सलवारके पहुंचोंपर इस्तरी फेरकर फिर उसके आगे भागपर फेर लो और दोनो पहुंचों (मोहरों) को आपसमें मिलाकर उसके आसनकी तह करके सलवारको बीचसे दुहरा दो। उसके अतिरिक्त पाजामे और पेटीकोटपर इस्तरी तथा उनकी तह करनेकी भी यही विधि है।

साड़ी—पहले साड़ीके सारे भागपर इस्तरी फेर लो फिर लम्बाईकी ओरसे उसे चौहरी करके उसके ऊपर फिर इस्तरी

फेरो जिससे उसमें कहीं शिकन न रहने पावे। उसकी तह करनेमें कोई विशेषता नहीं, चाहे लम्बाईकी ओरसे करें या चौड़ाईकी ओर से। किन्तु उसके जिस पल्लेपर बेल-बूंटे चित्रित हों वह (पल्ला) अवश्य ऊपरकी ओर आ जाना चाहिये।

साल-दुशाले, दुपट्टे व चादर आदिपर यदि इस्तरी करनी हो तो साड़ीकी विधिसे होकर लेनी चाहिये।

इस्तरी किये हुए धराऊ वस्त्रोंको स्वच्छ रखनेके उपाय

बहुधा देखा गया है कि हमारी शिक्षिता बहनें भी धुले हुए तथा इस्तरी किये हुए वस्त्रोंकी गठरियां बांध-बांधकर रख देती हैं, इससे सारे वस्त्र सिकुड़कर खराब हो जाते हैं, उनकी सारी शोभा नष्ट हो जाती है, उनमें हवातक नहीं पहुंचती; इसीसे उनमें कभी कभी दुर्गन्ध तक पैदा हो जाती है। सो उन्हें पहिननेपर शारीरिक बीमारीका कारण बन बैठती है। इससे बचनेके लिये इन बातोंपर विशेष ध्यान रखना चाहिये।

१ धराऊ वस्त्रको गठरी नहीं बांधनी चाहिये।

२ उन्हें किसी आलमारी या सन्दूकमें रखना उचित है।

३ कपड़ोंके सन्दूक व आलमारीमें फिलाइनकी गोलियां डाल देनी चाहिये।

४ सन्दूकमें वस्त्रोंको बहुत दबा-दबा नहीं भरना चाहिये, वरना गठरीवाले दोष उसमें भी आ पहुंचेंगे।

५ समय-समयपर वस्त्रोंको धूपमें सुखाते रहना चाहिये जिससे उनमें नमी पैदा न हो सके।

प्रति दिन पहनने के वस्त्र स्वच्छ रखने के उपाय

गर्म या रेशमी वस्त्रोंको पहननेके बाद जब उतारा जाय तो उन्हें ब्रशसे साफ करके किसी खूंटीपर टांगकर उनके ऊपर एक साफ कपड़ा डाल देना चाहिये, जिससे उनपर गर्द वगैरह न पड़ सके। अगर उनमें पसीना लगा हो तो उन्हे धूपमें सुखा लेना चाहिये वरना उनमे बदबू पैदा हो जायगी।

सूती वस्त्रोंको उतारनेके बाद धूप या हवामें सुखाकर तथा उनकी गर्द झाड़कर उन्हे खूंटीपर इस ढंगसे टागना चाहिये जिससे उनमें सलवटें न पड़ सकें। पहननेके वस्त्रोसे हाथ-मुंह या कोई अन्य चीज नहीं पोंछनी चाहिये।

इस्तरीको जंग लगनेसे बचानेका उपाय

आपने देखा होगा कि प्राय: वर्षा ऋतुमे लोहे पीतलकी चीजों पर नमीके कारण जंग लग जाता है, उन्हींमेसे इस्तरी भी एक वस्तु है, इसपर जंग नहीं लगने देना चाहिये वरना वस्त्रो पर इस्तरी करते समय उनके ऊपर भी जंगके दाग लग जाया करेंगे।

१ यदि इस्तरीकी तलीपर मोमजामेका गिलाफ चढ़ाकर रखा जाय तो कभी उसपर जंग लगनेका भय नहीं रहता।

२ इस्तरीकी तलीपर तारपीनका तेल लगाकर रखनेसें भी उसपर जङ्ग नहीं लगता।

३ यदि इस्तरीके तलीपर सफेद राखकी पालिश चढ़ाकर रखी जाय तब भी उसके ऊपर जंग नहीं लग सकेगा।

४ इस्तरीपर सादी वैसलीन लगाकर रखनेसे भी जंग नहीं लग पाता।

इस्तरीका जंग छुड़ानेकी विधि

यदि इस्तरीपर जंग लग गया हो तो उसे ईंटके चूरेसे खूब रगड़-रगड़कर मांज लो। फिर उसे तारपीनका तेल लगाकर एक टाटके टुकड़ेसे खूब रगड़ो। इससे जंग बिल्कुल साफ हो जायगा। फिर उसे रेगमालसे साफ कर लो, इससे इस्तरीका लोहा या पीतल चमक उठेगा।

गर्म इस्तरीके ऊपर पानी कभी नहीं डालना चाहिये क्योंकि इससे भी उसपर जंग लगनेका खतरा रहता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—धुले हुए वस्त्रोंपर इस्तरी करनेसे क्या लाभ है ?

२—वर्षाकालमें इस्तरीको सुरक्षित कैसे रखा जा सकता है ?

३—कोटपर इस्तरी किस रीतिसे की जाती है ?

४—ब्रिजिस और पतलूनपर इस्तरी करनेमे क्या अन्तर है ?

५—यदि इस्तरीपर जङ्ग लग जाय तो वह किस तरह छुड़ाया जाय ?

६—कमीजपर इस्तरी कहांसे आरम्भ करनी चाहिये ?

७—इस्तरी करते समय किन-किन बातोंका विशेष ध्यान रखना चाहिये ?

८—जम्पर और गाउनपर इस्तरी कैसे की जाती है ?

६—इस्तरीको गर्म और ठण्डी किस तरह किया जाता है ?

१०—इस्तरीको पालिश कैसे बनती है ?

पांचवां अध्याय

कपड़ोंके धब्बे छुड़ाना

जैसे मनुष्यके शरीरपर फोड़े, फुन्सी तथा शीतला आदिके धब्बे (दाग) पड़ जाते हैं और वे शरीरकी शोभा घटा देते हैं; वैसे ही कपड़ोंपर भी अनेक प्रकारके धब्बे पड़ जाते हैं और वे उनकी सारी चमक-दमक नष्ट कर डालते हैं। परन्तु जिस प्रकार मनुष्य औषध आदि विविध पदार्थोंके उपयोगसे अपने शरीरके दाग मिटाकर उसकी शोभा बढ़ानेमें पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेते हैं उसी प्रकार सोडा सुहागा आदि विविध पदार्थोंके उपयोगसे कपड़ोंके दाग उड़ानेमें भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। इसलिये इस अध्याय में उन्हीं पदार्थोंका विशेष वर्णन किया गया है जिनके उपयोगसे कपड़ोंपर पड़नेवाले अनेक प्रकारके दाग दूर किये जा सकें।

फलोंके रसके नये धब्बे छुड़ानेकी विधि

पहले कपड़ेके दागी स्थलको गर्म पानी द्वारा साबुनसे धो डालो फिर कपड़े धोनेके सोड़ेकी एक पोटली बना लो और उसे गर्म पानीमें भिगोकर उनसे वस्त्रके दागी स्थलको कुछ देर तक

खूब रगड़ो। जब दाग छूट जाय तब उसे गर्म पानीसे धोकर धूपमें सुखा लो।

दूसरी विधि

उबलते हुए तीन पाव पानीमें तीन तोले सुहागा मिला लो और वस्त्रके दागी स्थलको किसी कटोरे या लोटेपर तानकर बांध दो। फिर उसके ऊपर सुहागेका उबलता हुआ पानी धीरे-धीरे धार बाध कर डालना आरम्भ करो। यह पानी वस्त्रके दागी स्थलमेंसे छन-कर ज्यो-ज्यो नीचेको निकलता जायगा त्यों-त्यों दाग भी उड़ता जायगा और कुछ देर बाद उसका निशान तक न रहेगा।

तीसरी विधि

आध पाव पानीमें एक तोला कबूतरकी बीट औटाकर उससे दागी स्थलको मल-मलकर धो डालो, दाग छूट जायगा।

फलोंके पुराने दाग छुड़ानेकी विधि

एक चीनी या काचकी प्यालीमे पांच तोले 'क्लोराइड आफ लाइम' भरकर रख लो। उसके पास ही एक खुले मुंहके बरतनमें ५ सेर ठण्डा पानी भरकर तैयार रखो। फिर वस्त्रके पुराने दाग-वाले स्थलको 'क्लोराइड आफ लाइम' में भिगोकर तुरन्त ही ठण्डे पानीमें धो डालो। यदि 'क्लोराइड आफ़ लाइम' लगाते ही कपड़ेको खुले पानीमें न धोया गया तो वह वहासे जल जायगा, जहा 'क्लोराइड आफ़ लाइम' लगाया गया है। क्योंकि उसमें तेजाबी शक्ति विद्यमान रहती है।

दूसरी विधि

एक चीनी या कांचकी प्यालीमें ५ तोले 'ह्विस्की शराब' भर लो और कपड़ेको किसी मेज आदिपर फैलाकर उसके दागी थलपर एक ब्रश द्वारा शराबका लेप-सा करके खूब रगडो। यदि कपड़ेपर शराब सूखती जाय तो वहां और लगाते जाओ। इस तरह कुछ देरमें दाग बिलकुल साफ हो जायगा। फिर कपडेमेंसे शराबकी गंध उडानेके लिये उसे धूपमें डाल दो, बस। देखते-देखते ही गन्ध उड़ जायगी।

तीसरी विधि

एक कागजी नीबू लेकर उसे बीचमें काटकर वस्त्रके दागी स्थलपर उसका रस टपकालो तथा उसी नीबूसे दागी स्थलको खूब रगड़ो। जब दाग छूट जाय तब उसे ठण्डे पानीसे धोकर सुखा लो।

चौथी विधि

पुराने सिरकेमें बराबर पानी मिलाकर औटा लो। उसमें वस्त्र के दागी स्थलको १५ मिनट तक भिगो रखो। इसके बाद उसे धोकर सुखा लो, दाग उतर जायगा।

रंगीन वस्त्रोंपरसे हर रङ्गकी स्याहीके धब्बे उड़ानेकी विधि

किसी चीनीकी प्यालीमें एक पाव खौलते हुए पानीमें 'ऐक्जा-

लिक एसिड' की १० बूंद मिला लो और उसे 'स्पंज' द्वारा वस्त्रके दागी स्थलपर अच्छी तरह मलो, दाग उतर जायगा।

कभी-कभी ऐसा भी होता देखा गया है कि इस विधि द्वारा स्याहीका कोई-कोई धब्बा नहीं भी छूटता। ऐसी दशामें दूसरी विधिका उपयोग करना चाहिये।

दूसरी विधि

एक चीनी या काचकी प्यालीमें ५ तोले 'क्लोशियम क्लोराइड' भर लो, उसके पास ही एक खुले मुंहके बर्तनमें ५ सेर ठण्डा पानी भरकर तैयार रखो। फिर वस्त्रके दागी स्थलको 'क्लोशियम क्लोराइड' में डोब देकर तुरन्त ठण्डे पानीमें डोब देकर धो डालो। यदि दागका कुछ अंश रह जाय तो फिर उसी तरह करो।

तीसरी विधि

इस विधिमे 'क्लोशियम क्लोराइड' की जगह 'क्लोराइड आफ लाइम' काममें लाया जाता है, जिसके उपयोगकी विधि पहले लिखी जा चुकी है।

सफेद कपड़ेपर पड़े हुए लाल स्याहीके धब्बे उड़ानेकी विधि

एक स्वच्छ शीशीमे ६४ डिगरीका ३ तोले 'अलकोहल' तथा दो तीन बूंद 'ऐसिटिक एसिड' डालकर दोनोंको अच्छी तरह मिला लो और वस्त्रके दागी स्थलपर लगाकर ठण्डे पानीसे मसल-मसल-

कर धो डालो। यदि एक बार लगानेसे दाग न उतर सके तो दूसरी-तीसरी बार लगाओ। दाग अवश्य छूट जायगा।

हर प्रकारकी स्याहीके धब्बे छुड़ानेकी विधि

एक पहाडी या देशी आलू लेकर उसका छिलका उतार दो और वस्त्रके दागी-स्थलको ठण्डे पानीमें भिगोकर छिले हुए आलूसे रगड़ना आरम्भ करो, कुछ देरमें दाग उतर जायगा।

दूसरी विधि

मुर्गी, कबूतर या बत्तखके अण्डेके अन्दरकी सफेदीको थोड़ेसे पानीमें घोलकर कपड़ेके दागी स्थलपर उसका लेप कर दो और बीस मिनट बाद उसे कुछ गर्म पानीसे मसलकर धो डालो। यदि दागका अंश बाकी रह जाय तो फिर उसी तरह करो, दाग उड़ जायगा।

तीसरी विधि

कपड़ेके दागी स्थलको कागजी नीबूके रसमें तर करके ऊपर पिसा हुआ सांभर नमक बुरक दो फिर नीबूसे ही खूब रगड़ो। जब दाग उतर जाय तब गर्म पानीसे धोकर सुखा लो।

हर तरहके रंगीन वस्त्रोंके सब तरहके पुराने धब्बे छुड़ाना

एक चीनीकी प्यालीमें ५ तोले 'लिक्युर अमोनिया' भरकर उसमें वस्त्रके दागी स्थलको भिगोकर हाथोंसे खूब मसलो। कुछ

कुछ देर बाद मसलनेसे दाग मिट जायगा। फिर उसे नित्रासे पानीसे धोकर सुखा लो।

दूसरी विधि

पाच तोले 'ऊंटकी मेंगन' बारीक पीसकर आध सेर ठण्डे पानीमें घोल लो और उसमें वस्त्रके दागी स्थलको २४ घण्टे तक भीगा रहने दो। उसके बाद धोकर 'हींग तथा साबुनके पानी' में आध घण्टे भिगो रखो। फिर उसे स्वच्छ गर्म जलसे धोकर सुखा लो। हींग और साबुनका पानी बनानेके लिये आध सेर ठण्डा पानीसे दो माशे हींग तथा तीन तोले साबुन घोल लेना चाहिये।

हर तरहके वस्त्रोंसे चिकनाईके धब्बे छुड़ानेकी सरल विधि

कपड़ेको किसी मेज या पट्टे पर फैलाकर उसके दागी स्थलके नीचे ऊपर दोनों ओर नया 'बिलाटिंग पेपर' (स्याही चूस कागज) या फिलटर पेपर रख दो और उसके ऊपर एक बारीक वस्त्र फैला दो फिर उसपर गर्म-गर्म 'इस्तरी' फेरो। इस्तरी की गर्मी दागी जगह पहुंचते ही चिकनाईको पिघला देगी और बिलाटिंग पेपर उसे तुरन्त ही चूस लेगा। इस प्रकार जब कपड़ेकी सारी चिकनाई छूट जाय तब उसे गर्म पानी तथा साबुनसे धोकर सुखा लो।

दूसरी विधि

एक पाव खौलते हुए पानीमें कपड़े धोनेका तीन तोले सोड़ा

घोलकर उसमें वस्त्रके दागी भागको भिगो दो। जब उसकी चिक-नाई छूटकर पानीके ऊपर तैरने लगे तब उसे स्वच्छ गर्म जलसे साबुन द्वारा धो डालो।

तीसरी विधि

एक कांच या चीनीकी प्यालीमें 'तारपीन' का तेल लेकर उसे 'स्पंज' द्वारा वस्त्रके चिकने भागपर अच्छी तरह मलो। इस तरह मलते-मलते कुछ देरमें सब चिकनाई छूट जायगी। फिर उसे कुछ देर धूपमें सुखा लो जिससे तेलकी दुर्गन्ध उड़ जाय। इसके बाद उसे गर्म पानीसे धो डालो।

चौथी विधि

पहले कपड़े धोनेके रीठे कूट-पीसकर कपड़छान कर लो। फिर आधसेर पानी उबालकर उसमें 'चार तोले रीठोंका चूर्ण' तथा चार तोले वस्त्र धोनेका सोडा घोल लो। जब उसमें झाग उठने लगें तब वस्त्रका चिकना भाग उसमें भिगो दो और १५ मिनट बाद उसे मसलकर धो डालो, दाग बिलकुल साफ हो जायगा।

पांचवीं विधि

थोड़ेसे ठण्डे पानीमें एक छटांक 'रे' (कल्लर) और डेढ़ तोला पिसा हुआ 'नौसादर' मिलाकर उसकी लप्सी जैसी बना इसको वस्त्रके चिकने भागपर पोतकर धूपमें सुखा लो।

वस्त्रकी सारी चिकनाई सोख लेगा। फिर उसे ब्रश द्वारा झाड़कर गर्म पानी और साबुनसे धो डालो।

छठी विधि

एक पाव ठण्डे पानीमें १ तोला चूना तथा एक तोला साम्भर नमक घोलकर उसमें वस्त्रके चिकने भागको कुछ देर तक भिगो रखो। फिर साबुन तथा गर्म पानीसे धोकर सुखा लो।

सातवीं विधि

यदि वस्त्रपर घीकी चिकनाई लगी हो तो उसके, चिकने भाग पर सरसों या तिलका तेल लगाकर धूपमें रख दो और बीस मिनट बाद ठण्डे पानीमें बेसन घोलकर उसके ऊपर पोत दो। इसके बाद 'एक पाव खौलते हुए पानी' में 'एक तोला पिसी हुई सज्जी' तथा 'दो तोले सोडा' घोलकर उसमे वस्त्रका चिकना भाग भिगो दो, जब पानी ठण्डा होने लगे तब उसे धोकर धूपमे सुखा लो।

मखमली वस्त्रोंकी चिकनाई छुड़ाना

फूँचचाक (यह एक प्रकारकी खरिया मिट्टी होती है) को बारीक पीसकर कपड़ेमे छान लो, फिर ठण्डे पानीसे गाढ़ा-गाढ़ा घोलकर कपड़ेके चिकने भागपर पोत दो तथा धूपमें सुखाकर ब्रशसे झाड़ दो, चिकनाई छूट जायगी।

रेशमी वस्त्रोंकी चिकनाई छुड़ाना

रेशमी वस्त्रके चिकने भागपर कपडछन किया हुआ सूखा चूना

(बुझा हुआ) और नमक बुरक कर धूपमें रख दो। कुछ देर बाद उसके ऊपर खूब बारीक पिसी हुई अलसी बुरक दो। ये तीनों पदार्थ वस्त्रकी सारी चिकनाई सोख लेंगे। आध घण्टे बाद कपड़ेके चिकने भागको गर्म पानी तथा 'सनलाइट' साबुनसे धोकर सुखा लो चिकनाईका निशान तक न रहेगा। किन्तु इस विधिमें हमेशा बुझा हुआ चूना ही कपड़छन करके उपयोगमें लाना चाहिए, यदि बिना बुझा चूना उपयोगमें लाया गया तो कपड़ा उसीकी गर्मी (आग) से जल जायगा।

पशमीनेकी चिकनाई छुड़ाना

दो सेर पानीमें तीन छटाक 'जौकी भूसी' औटा लो और उसे छानकर पानीमें तो पशमीनेके कपड़ेका चिकना भाग भिगोकर रख दो तथा उसमेंसे निकली हुई भूसीमेंसे दो तोले भूसीकी एक पोटली बना लो। अब वस्त्रकी चिकनाई पानीकी गर्मीसे तैरने लगे तब भूसीकी पोटली द्वारा कपड़ेके दागी स्थलको रगड़ रगड़कर धो डालो। इसके बाद उसे गन्धककी धूनीका धुआ दो, चिकनाई बिलकुल साफ हो जायगी।

सर्ज व मरीनेकी चिकनाई छुड़ाना

सर्ज व मरीनेके वस्त्रके चिकने भागको मेज या पट्टे पर फैलाकर उसके नीचे, ऊपर दोनों ओर नया 'बिलाटिंग पेपर' रख दो तथा उसके ऊपर एक बारीक वस्त्र फैलाकर उसपर 'इस्तरी' फेरो।

इस्तरीकी गर्मीसे कपड़े की चिकनाई पिघलकर 'बिलार्टिंगग पेपर में समा जायगी। इसके बाद कपड़ेके दागी स्थलको गर्म जल व 'सनलाइट' साबुनसे धोकर सुखा लो, चिकनाईका निशान तक दिखाई न देगा।

दुशाले-धूसे-कम्बल व लोइयोंकी चिकनाई छुड़ाना

इन वस्त्रोंपर जहां चिकनाई लगी हो वहां खट्टा दही मथकर पोत दो और उसे बीस मिनट तक धूपमें सुखाकर गर्म पानी द्वारा मल मलकर धो डालो। इसके बाद एक सेर खौलते हुए पानीमें तीन तोले रीठोंका चूर्ण घोल दो, जब सारा पानी झागमय हो जाय तब उसमे कपड़ेका चिकना भाग भिगोकर रख दो और दस मिनट बाद उसे उसी पानीसे ब्रश द्वारा धोकर साफ कर लो। फिर दूसरे स्वच्छ गर्म पानीमें अंगूरी सिरका मिलाकर उसमें वस्त्रका दागी भाग धोकर धूपमें सुखा लो। इस विधिसे प्रत्येक ऊनी वस्त्र धोया जा सकता है, किन्तु एक सेर निवासेमें आधे तोलेसे अधिक सिरका कभी नहीं मिलाना चाहिये।

दरी तथा गलीचोंकी चिकनाई छुड़ाना

दरी या गलीचेपर जहां चिकनाईका दाग लगा हो वहां 'रे' या 'खरिया' मिट्टी घोलकर पोत दो तथा उसे धूपमें सुखा लो और किसी सख्त ब्रशसे झाड दो। अगर चिकनाईका कुछ अंश बाकी

रह जाय तो फिर इसी तरह करो, चिकनाई बिलकुल छूट जायगी। फिर उसे 'साबुनके गर्म पानी' से धोकर सुखा लो।

वैसलीनकी चिकनाईके दाग छुड़ानेकी विधि

एक पाव ठण्डे पानीमें आधी छटांक साबुन घोलकर उसमें दो तोले 'एनी लाइन आयल' मिला लो और उसमें कपड़ेका वैसलीनकी चिकनाईका दागी भाग भिगोकर रख दो। बीस मिनट बाद उसे मलकर स्वच्छ ठण्डे पानीसे धोकर धूपमें सुखा लो। इस विधिसे हर प्रकारके वस्त्रोंकी वैसलीनकी चिकनाई छुडाई जा सकती है।

दूसरी विधि

वैसलीनकी चिकनाई 'पैट्रोल' द्वारा 'ड्राइक्लीन' के तरीकेसे छुड़ा लो। किन्तु यह विधि रेशमी तथा ऊनी कपड़ोंके लिये ही विशेष उपयोगी है, सूती वस्त्रोंपर इसका उपयोग नहीं करना चाहिये।

वस्त्रोंपरसे लोहेके जंगका दाग छुड़ानेकी विधि

पोटासियम बाई ओक्सामेट १ माशा, ग्लैसरीन १ मासा, ठण्डा पानी ४ तोले, इन तीनों चीजोंको एक चीनीकी प्यालीमें आपसमें मिलाकर 'फिल्टर पेपर या विलाटिंग पेपर' में छान लो और उसमें वस्त्रके दागी स्थलको भिगोकर रख दो। फिर चार घण्टे बाद उसे हाथोंसे मसल-मसलकर स्वच्छ ठण्डे पानीसे धोकर सुखा लो।

दूसरी विधि

कपड़ेके दागके परिमाणके अनुसार 'पोटासियम फेरोसाइनेड' लेकर तथा दो तीन बूंदे गंधकके तेजाबके साथ मिलाकर उसे वस्त्र के दागी स्थलपर लगाकर ठण्डे पानीसे तुरन्त ही धो डालो। इस तरह करनेसे दाग नीले रंगका हो जायगा। फिर उसे पोटास या चूनेके पानीसे धो डालो, दाग साफ हो जायगा।

खूनका दाग छुड़ानेकी विधि

अगर दाग ताजा हो तो वस्त्रके दागी स्थलको कच्चे दूधमें और यदि पुराना हो तो खौलते हुए दूधमें, भिगोकर रख दो; फिर आध घण्टे बाद उसे पहले तो उसी दूधमें मसल-मसलकर साफ कर लो, इसके बाद गर्म पानीसे धोकर सुखा लो। इस विधिसे हर प्रकारके खूनके दाग छूट जाते हैं।

दूसरी विधि

ठण्डे पानीमें नमक घोलकर उसमें कपडा धोनेसे खूनके दाग छूट जाते हैं, किन्तु यह विधि खूनके ताजे दाग छुड़ानेके लिये ही अधिक उपयोगी है।

पानका दाग छुड़ानेकी विधि

वस्त्रपर जहां पानका दाग लगा हो, पहले उस जगहको गर्म पानीसे भिगो लो, फिर एक कच्चा अमरूद काटकर दागी स्थलपर रगड़ो, कुछ देरमें दाग छूट जायगा।

टिंचर आयोडीनके दाग छुड़ाना

इसका ताजा दाग तो 'मेथिलेटिड स्प्रिट' द्वारा 'ड्राइक्लीन' के तरीकेसे छुडाया जा सकता है, यदि दाग पुराना हो गया हो तो ठण्डे पानीमें 'सोडा बाइ कार्ब' गाढ़ा-गाढा घोलकर उसे स्पंज द्वारा वस्त्रके दागी स्थलपर रगड़ना चाहिये पुराना दाग छूट जायगा।

हर प्रकारके रोगनका गीला दाग छुड़ाना

कपड़ेपर जहां रोगनका दाग लगा हो तो वहां 'तारपीन' का तेल 'स्पंज' द्वारा मलो, थोड़ी देरमें छूट जायगा।

हर प्रकारके रोगनका सूखा दाग छुड़ाना

वस्त्रपर जहां रोगनका दाग लगा हो, यदि वह सूखा हुआ हो तो पहले ता उसे सोडा मिले हुए गर्म पानीसे धो लो। फिर उसके ऊपर यदि 'क्लोरोफार्म' मल दिया जाय तो वह बिलकुल साफ हो जायगा। इसके बाद उसे स्वच्छ गर्म पानीसे धोकर सुखा लो। किन्तु क्लोरो फार्मकी गंध मुंह तथा नाकमें बिलकुल न जाने पावे, वरना दागके साथ ही जीवन भी समाप्त हो जायगा।

चायके धब्बे छुड़ाना

वस्त्रके जिस भागपर चायका दाग लगा हो और वह ताजा हो तो उसे उबलते हुए दूधमें भिगो दो; एक घण्टे बाद मसलकर धो डालो, वस्त्र साफ हो जायगा। अगर दाग पुराना हो तो

खौलते हुए एक पाव पानीमें दो तोले सुहागा मिलाकर उसमें वस्त्र का दागी भाग भिगो दो। फिर एक घण्टे बाद उस जगह सुहागेकी डली रगडो। जब दाग साफ हो जाय तब उसे गर्म जलसे धोकर धूपमे सुखा लो।

वस्त्रोंपर लगे घासके हरे दाग छुड़ाना

घासका हरा दाग यदि सूती वस्त्रपर लगा हो तो सोडा तथा रीठोंका चूर्ण मिले हुए गर्म जलसे, यदि रेशमी वस्त्रपर लगा हो तो ''पैराफ्न' या 'सन लाइट सोप' द्वारा गर्म पानीसे धोनेसे साफ हो जाता है।

हर तरहके वस्त्रोंके पसीनेके दाग छुड़ाना

फरटाइल सोप २ तोले, नौसादर २ तोले, ठण्डा पानी १० तोले इन तीनो चीजोंको एक जगह घोलकर 'स्पंज' द्वारा वस्त्रके दागी स्थलपर मलो, जब दाग छूट जाय तब गर्म पानीसे धो डालो।

साड़ीपर लगे हुए रेशमी व मखमली फीतेके दाग छुड़ाना

स्पंजको 'मैथिलेटिड स्प्रिट' में भिगोकर, साड़ीपर जहां-जहा फीतेके दाग हों वहां-वहा रगड़ते जाओ, थोडी-सी देरमें सब दाग दूर हो जायेंगे।

दूसरी विधि

एक सेर पानीमें चार तोले सनलाइट सोप घोलकर उसे गर्म कर लो। इस पानीमें साडीके दागी स्थलोंको अच्छी तरह मसलकर धोनेसे फीतेके सारे दाग छूट जायंगे।

स्टार्च या मायाके दाग छुड़ाना

थोड़ेसे गर्म पानीमें 'जैतून' का साबुन घोल लो, उसमें स्पंजको भिगो-भिगोकर स्टार्च या मायाके दागवाले वस्त्र-भागपर रगड़ो, या बिना स्पंजके ही गर्म पानी द्वारा वस्त्रके दागी स्थलको 'जैतून' के साबुनसे धो डालो।

मेंहदीके रंगका दाग छुड़ाना

ताजे दूधको औटाकर उसमें मेंहदीके दागवाला वस्त्र-भाग धोनेसे उसके दाग बिलकुल साफ हो जाते हैं।

नीलका दाग छुड़ानेकी विधि

वस्त्रके जिस भागपर नीलका दाग लगा हो उसे गर्म दूधमें धो लेना चाहिये। यदि फिर भी नीलका कुछ अंश कपड़ेपर रह जाय तो उसे कबूतरकी बींट डालकर उबाले हुए पानीसे धोकर साफ कर लेना चाहिये।

सफेद रेशमी वस्त्रोंका पीलापन दूर करना

रेशमी सफेद वस्त्र धोनेके बाद पानी या मसालेके दोषसे उनमें

कुछ पीलापन-सा झलकने लगता है, उसे दूर करनेके लिये ५ सेर ठण्डे पानीमें दो तोले 'टाटरी' मिलाकर उसमें धुले हुए रेशमी वस्त्र भिगो दो और कुछ देर बाद उन्हे निचोडकर धूपमें सूखा लो, इस विधिसे उनका सारा पीलापन दूर हो जायगा।

रेशमी वस्त्रोंका दाग छुड़ाना

साबुन, चूना, बारीक नमक ये तीनों चीजें एक-एक तोला लेकर नीबूके ५ तोले अर्कमें घोल लो और उसे रेशमी कपड़ेके दागपर पोतकर धूपमें रख दो, कुछ देर बाद उसे ठण्डे पानी द्वारा मल-मलकर धो लेनेसे दाग बिलकुल छूट जायगा।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—वस्त्रोंके धब्बे दूर करनेसे क्या प्रयोजन है।

२—नीबू किन-किन पदार्थोंके धब्बोंको साफ कर सकता है ?

३—खून तथा पानीके दाग मिटानेकी विधि क्या है ?

४—ऊनी (गर्म) वस्त्रोंपर पड़े हुए घी या तेलके दाग बिना पानी लगाये किस प्रकार दूर किये जा सकते हैं ?

५—रेशमी वस्त्रोंपर से आम और जामुनके दाग किस तरह साफ किये जायंगे ?

६—मखमलसे स्याहीके दाग कैसे साफ होंगे।

७—चायके दाग कैसे साफ किये जायंगे ?

८—हर प्रकारके कपड़ोंपर से हर प्रकारकी चिकनाई दूर कर करने का सबसे सरल उपाय क्या है ?

९—रेशमी साड़ीपर लगे हुए रेशमी फीतेके दाग मिटानेके लिये कौन-कौनसे पदार्थका कैसे-कैसे उपयोग किया जाता है।

१०—यदि किसी रेशमी वस्त्रपर लोहेके जंगका दाग लग जाय तो वह कैसे साफ किया जायगा।

—oo—

छठा अध्याय

ब्लीचिंग पाउडर

कोरे कपड़े व सूतकी पान दूर करना तथा उन्हे ब्लीच (चमकदार) करना

शायद ही कोई ऐसा मनुष्य हो, जो यह न जानता हो कि आजकल विदेशी वस्त्र तथा सूतमे पान (माडी) लगानेका रोग कितनी तीव्र गतिसे बढ़ता जा रहा है, जिसका मुख्य उद्देश्य कपड़े और सूतको खूबसूरत बनाना तथा उसके ऊपर चिकनी पालिश करना ही होता हैं। माडी कितने जीवोकी हत्याका परिणाम है, उसकी चिकनी पालिश तैयार करनेके लिये प्रति दिन कितने निर-पराध तथा अबोध जानवरोंके जीवनका बलिदान होता है, यह बात भी किसीके कानो तथा ज्ञान-नेत्रोसे छिपी नहीं है। आजकल एक नहीं किन्तु अनेक भारतीय-परिवार ऐसे हैं जो विदेशी वस्त्रों से तो नही, पर उस मांडीसे अवश्य घृणा (नफरत) करते हैं, इसीलिये वे इन वस्त्रोको स्वच्छ जलसे धोये बिना अपने उपयोगमें नहीं लावे। यदि वे लोग कोरे कपड़ोको धोनेके बाद 'ब्लीचिंग'

पाउडर' द्वारा ब्लीच कर लें तो वस्त्र बड़े चमकदार हो जायं, किन्तु जब तक कपड़े या सूतकी पान न निकाल दी जायगी तबतक उसपर 'ब्लीचिंग पाउडर' का कुछ असर नहीं होगा। इसलिये पहिले कोरे कपड़े तथा सूतकी मांडी निकाल देना आवश्यक है।

कोरा वस्त्र तथा सूत धोने (उसकी पान निकालने) की विधि

सवा सेर सूत या कपड़ा धोनेके लिये किसी बरतनमें बारह सेर पानी, ५ तोले सोडा और ५ तोले देशी साबुनका चूरा डालकर आगपर चढ़ा दो। जब साबुन पानीमें अच्छी तरह घुल जाय और वह खौलने लगे तब उसमें सूत या कपड़ा डाल दो तथा उसे डेढ़ घंटे तक पकने दो, किन्तु कभी-कभी उसे लकड़ीके डण्डेसे चलाते भी रहना चाहिये जिससे उसके जलनेका खतरा न रहे। इसके बाद उसे ठण्डा करके साफ पानीसे अच्छी तरह धोकर 'ब्लीचिंग पाउडर' से ब्लीच कर लो।

ब्लीच करनेकी विधि

सवा सेर सूत या कपड़ा ब्लीच करनेके लिये ५ तोले ब्लीचिंग पाउडर' की एक कपड़ेमें पोटली बनाकर उसे ५ सेर ठण्डे पानीमें घोल लो। उसमें धुला हुआ गीला कपड़ा भिगो दो तथा उसे करीब एक घण्टा भीगा रहने दो। इसके बाद उसे धोकर स्वच्छ पानीसे अच्छी तरह साफ कर लो ताकि उसमें ब्लीचिंग पाउडरका अंश न रहे वरना वह कपड़े तथा सूतेको कमजोर बना देगा।

वस्त्रोंको ब्लीच करनेके संक्षिप्त लाभ

१—कोरे कपड़ेको धोनेके बाद उसमें कुछ मटियालापन झलकने लगता है जिससे कपडा मैला तथा भद्दा-सा दिखाई देता है। इस दशामें यदि उसे ब्लीच कर लिया जाय तो उसमे विशेष चमक आ जाती है। अगर इच्छा हो तो ब्लीच किये हुए कपडेको नील भी दिया जा सकता है इससे वह और भी अधिक चमकदार हो जायगा।

२—कभी-कभी ऐसा भी होता देखा गया है कि कपडा रंगते समय बड़ी सावधानी करनेपर भी अचानक ही उसमें धब्बे पड़ जाते हैं, अर्थात् कहीं तो रङ्ग अधिक हो जाता है और कहीं थोडा रह जाता है, इस दशामें १ सेर पानीमें २ तोले ब्लीचिंग पाउडर (जो रंग बेचनेवालोंकी आम दूकानों पर बहुत सस्ता मिलता है) मिलाकर उसमें एक घंटे तक उस कपड़ेको भिगो रखना चाहिये, बस। कपड़ेका सारा रङ्ग उड़ जायगा और वह सफेद निकल आयगा। फिर उसे स्वच्छ पानीसे अच्छी तरह धोकर तथा नमकके पानीमें झकोल कर रंग लो। किन्तु यह पाउडर केवल सूती वस्त्रों के कच्चे रंगोको साफ कर सकता है और इसमें हमेशा ठण्डा पानी ही उपयोगमे लाना चाहिये अगर गर्म पानीमे काम लिया गया तो सम्भव है, कपडा जहां-तहांसे फटकर छन्ना बन जायगा।

३—आजकल प्रायः सभी घरोंमे साबुनसे कपड़े धोये जाते हैं यदि धोनेके बाद २५ मिनट तक ब्लीचिंग पाउडरके पानीमें

भिगोकर रख दिया जाय और उसमेंसे निकाल कर तथा स्वच्छ पानीसे धोकर उन्हें थोड़ा-सा नील लगा दिया जाय तथा बादमें उन्हें धूपमें सुखाकर इस्तरी कर लिया जाय तो वे (कपड़े) धोबीसे भी अधिक साफ तथा चमकीले हो जायंगे।

४—आपको मालूम होगा कि कपडे रंगनेके बाद हाथोंको रंगका कुछ न कुछ अंश लगा ही रह जाता है। उस समय आप ठण्डे पानी द्वारा ब्लीचिंग पाउडरसे हाथ धो लें तो कहीं रंगका निशान तक न रहेगा। इसके बाद हाथोंको साबुनसे धोकर तेल चुपड़ लें जिससे ब्लीचिंग पाउडरकी खुश्की मिट जाय।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—ब्लीचिंग पाउडर क्या वस्तु है? इसके इस्तेमाल करनेकी रीति क्या है?

२—कपड़ोंको ब्लीच करनेका क्या फायदा है।

३—कोरे कपड़ों तथा सूतमें से पान किस तरह निकाली जाती है?

४—ब्लीचिंग पाउडरको ठण्डे पानीमें क्यों इस्तेमाल करते हैं?

५—हाथोंमें लगा हुआ रंग किस तरह छुड़ाया जा सकता है?

—०*०—

दूसरा भाग

पहला अध्याय

रङ्गीला संसार

हम कैसे रंगे ?

विधाताका विधान (संसार) कितना अनोखा, कितना रंगीला है। इसे हम कल जिस दशा और जिस रंगमें रंगा देखते थे, आज न तो उसकी वह दशा ही वर्तमान है और न वह रंग ही, यही कारण है कि उसे परिवर्तनशील संसार कहते हैं। भला जब साक्षात् परमात्माको ही अपनी रची सृष्टिका सादा एक रंग न भाया और वह भी नित नये रंगमे रंगे सौन्दर्यका उपासक या पुजारी बन बठा, तो फिर यह कब सम्भव हो सकता था कि उसीकी सृष्टिमें निवास करनेवाले स्त्री-पुरुष इस रंगीले सौन्दर्यके पुजारी बननेसे पीछे रहते, वे उससे भी एक कदम आगे बढकर रहे। यदि इसका परिणाम (नतीजा) देखना हो तो किसी भारतीय-परिवारमें

जाकर देखिये, वहां आपको एक अजीब नजारा नजर आयगा। बड़ी-बड़ी देवियोंकी तो कौन कहे परिवारकी छोटी-छोटी कुमारी बालिकाएं भी इस रंगीले संसारकी लाल-हरी लहरोंमें लहलहाती दिखाई देंगी, उन्होंने रंगोंको अपनी सौन्दर्य-वृद्धि (खूबसूरती बढ़ानेका) एक अनमोल विषय बना लिया है, अब उन्हें पहननेके लिये नित नये रंगोंमें रंगी हुई धोतियां, साड़ियां, चुन्नियां और भिन्न कपड़े चाहिये, क्योंकि आज जो रंग पसन्द है, कल वही नापन्द हो जाता है। हां उससे रंगरेजों (ललारियों) की मुट्ठी भी खूब भर्पूर रहती है।

इस दशामें यदि हमारी माताएं और बहने आजकलके प्रचलित (चालू) रंगोंमें कपड़े रंगनेकी कला (काम) की अच्छी जानकार हों तो उन्हें कितना लाभ हो, इस बातका अनुमान वे स्वयं ही लगा सकती हैं। ऐसा होनेपर क्या फिर वे अपने वस्त्रोंको अपने मनमानें रंगोंमें नहीं रंग सकेंगी? यदि हां। तो फिर अपनी इस घरेलू-कलाको बाजारका सौदा न बनाकर इस प्रकारके कामोंमें उन्हें स्वयं कुशल (पूर्ण जानकर) तथा सफल होना चाहिये। जिससे रंगाईसे सम्बन्ध रखनेवाले किसी कामके लिये भी उन्हें बाजार या किसी अन्य व्यक्तिकी ओर न ताकना पड़े।

—०*०—

दूसरा अध्याय

भारतकी प्राचीन रंगाई

भारतकी प्राचीन रंगाई कितनी पक्की, कितनी सुन्दर और कितनी सस्ती होती थी, इस विषयका कुछ धुंधला चित्र वे ही देख सकते हैं जिन्होंने प्राचीन भारतकी शिल्पकलाके इतिहासके फटे-पुराने पन्ने बदलते हुए रातें बिताई हों, भारतवर्षकी पुरानी शिल्पकलाकी खोज और उसका तजुर्बा प्राप्त करनेमें दिन बिताये हों। वह जमाना कितना आनन्दमय होगा जब प्राचीन भारतीय परिवारोंकी प्रत्येक नारीको यह ज्ञान होता था कि अमुक अमुक (इस-इस) पेड़की छाल तथा अमुक-अमुक जंगली बूंटियोंको पानीमें पका-पकाकर अमुक-अमुक (यह-यह) रंग तैयार हो जाता है, किन्तु आजकल दशा बिलकुल विपरीत है, पुरानी रंगाईका तो लोपसा हो गया और उसका स्थान आजकलकी नवीन (नये) ढंगकी रंगाईने लिया, तिसपर इन नये-नये रंगोंकी संख्याका तो कहना ही क्या है।

प्रचलित रंगोंकी संख्या

यदि आप किसी रंग बेचनेवालेकी दूकानपर जाकर देखें तो आपको मालूम हो जाय कि आजकल रंगोंकी संख्या कौनसी सीमा को पारकर रही है या किसी बजाजकी दूकानपर जाकर देखे कि रंगोंकी कितनी भरमार हो रही है, चारों ओर अंग्रेजी ढंगके नये रंगोंका अभूतपूर्व (जैसा पहिले कभी न हुआ) प्रचार हो रहा है परन्तु यहां इन रंगोंसे कपड़े रंगनेका पूर्ण ज्ञान रखनेवाले व्यक्ति इने-गिने ही मिलेंगे।

इस छोटीसी किताबमें आजकलकी नवीन रंगाईके अनुसार जितने रंगोंका वर्णन किया गया है पहले उन सबका नाम लिख देना भी आवश्यक है—

रंगोंके नाम

प्याजी	स्लेटी	हरा
गुलाबी	मेंहदी	लाल
फल गुलाबी	बसन्ती (पाली)	नीला
आरसी गुलाबी	सरदई	बिलू
नसूरी	जंगली	खाकी
लसुडिया	फिरोजी	कत्थई
जोगिया	अंगूरी	सुपारी
सिन्दूरी	घिया कपूरी	ऊंटनी
तरबूजी	तोता	किसमिसी

गुलाबासी	धानी	कपासी
संदली	केलई	जीरा
शरबती	तवासीरी	तमाखु
बादामी	बदली	बेलगिरि
सफेद मोतिया	आसमानी	नुस्वारी सुर्ख
मीठा मोतिया	उनाबी	नुस्वारी काला
जम्बू मोतिया	किरमिची	खूनी
बिस्कुटी	शीशी	सुआ
सन्तरा	अमरसी	काला
केसरी	गाजरी	नीबुआ
कासनी	लवेण्डरी	गुलानार
बिलम्बरी	जहर मोहरा	सुनहरी
जामुनी	मूंगिया स्याह	टसरी
फालसा	मूंगिया जर्द	सावा
बैंगनी	खाकी	लाखा
कबूतरी	दालचीनी	रसौत
फाख्ता	मलयागिरी	पिस्तई

इनमेंसे कुछ रंग तो ऐसे हैं जो कच्चे व पक्के दोनों प्रकारके होते हैं और कुछ ऐसे भी हैं जो केवल पक्के ही होते हैं। इनमें बैंगनी, उनाबी, किरमिची, जहरमोहरा, मूंगिया दोनों, खाकी कत्थई, काही ये रंग केवल पक्के तथा शेष रंग कच्चे और पक्के दोनो प्रकारके होते हैं। इसलिये जब कच्चे रंगकी आवश्यकता हो

तब बाजारमें दूकानदारसे कच्चा और जब पक्के रंगकी आवश्यकता हो तो पक्का रंग कहकर खरीदना चाहिये।

आजकलकी रंगीली सभ्यतासे प्रेम करनेवाली देवियां और कुमारिया प्रायः इन्हीं रङ्गोंसे अधिक प्रेम करती हैं, परन्तु ये सारे रङ्ग बाजारमे नहीं मिल सकते, वहां तो केवल कुछ गिने चुने रङ्ग ही मिलते हैं जिनके नाम नीचे दिये गये हैं और उन्हें बाजारू रङ्गोंके नामसे पुकारा गया है।

बाजारू रङ्ग

गुलाबी	फिरोजी	सन्दली
सिन्दूरी	आसमानी	काला
गुलानार	स्लेटी	खाकी
लाल	नुस्वारी	मूंगिया
पीला	ऊदा	खाकी
हरा	वसन्ती	जहर मोहरा

इन्हीं बाजारू रङ्गोंके मेल-जोलसे उपरोक्त रङ्ग तैयार किये जाते हैं। इस अध्यायमें उन सबके तैयार करनेकी सरल विधि लिखी जायगी। किन्तु इससे पहले यह लिख देना भी आवश्यक है कि पूर्वोक्त रङ्गोंसे कपड़े रङ्गते समय किन-किन बातोंका ध्यान रखना चाहिये।

कपड़े रङ्गते समय ध्यान रखने योग्य बातें

१—कोरे और मैले कपडेसे धुले हुए कपड़ पर रङ्ग अच्छा चढता

है इसलिये जिस कपड़ेको रङ्गना हो बिलकुल साफ धुला हुआ होना चाहिये।

२—रङ्गाईकी सफाई उस (रङ्गाई) के सामानपर निर्भर होती है। इसलिये रङ्ग, पानी, हाथ तथा रङ्गनेका बरतन, ये चीजें बिलकुल साफ हों और बरतन जहां तक हो सके, खुले मुंहका होना चाहिये।

३—पहले कपड़ेको ठण्डे पानीमें भिगोकर निचोड लो तब उसे रङ्गो। सूखा कपडा रङ्गनेसे उसमें धब्बे पड़ जाते हैं।

४—रङ्गवाले पानीकी मिक्दार इतनी होनी चाहिये जिसमें कपड़ा अच्छी तरह डूब सके।

५—कपड़ेको रङ्गवाले पानीमें डालते ही चुस्तीके साथ दोनों हाथों से जल्दी-जल्दी इधर उधर फिराना चाहिये जिससे उसकी सारी सलवटें खुल जाय और सारे वस्त्रपर एकसा रङ्ग चढ़ जाय यदि ऐसा करनेमें थोडी भी सुस्ती कर दी तो कपड़ेमें जहा-तहा धब्बे पड़ जायंगे।

६—कुछ रङ्ग ऐसे भी हैं जो कपड़ेको बडी सावधानीसे रंगनेपर भी धब्बे डाल देते हैं इसलिये कपडा रंगनेसे पहले उसे नमक या फिटकरी मिले हुए पानीमें अच्छी तरह झकोल लेना चाहिये ऐसा करनेसे उसके धब्बे पडनेका भय बिलकुल जाता रहेगा और साथ ही रगभी शोख जायगा।

७—यदि कपडेको रंगनेके बाद उसी (रंगदार) पानीमें छः माशे नीबूका सत मिलाकर उसमें झकोल लिया जाय तो रंगा हुआ

कपड़ा अत्यन्त चमकीला हो जायगा। यदि समयपर नीबूका सत न मिल सके तो अंगूरी सिरकेकी १५ बूंदें या ६ माशे फिटकरी अथवा एक कागजी नीबूका अर्क ही पानीमें मिला लेना चाहिये।

८—कपड़ा रंगनेके बाद रंगदार पानी फेंक दो और यदि कपड़ेपर माया लगाना हो तो उसमेंसे थोड़ासा पानी रख लो जिसमें वह रंगा हुआ कपडा मुश्किलसे भीग सके। उस पानीमें कपड़ेके परिमाणके अनुसार माया घोल लो और उसमें रंगा हुआ कपड़ा डालकर दोनों हाथोंसे खूब मसलो जिससे कपडेके तमाम तन्तुओंमें मायाका अंश समा जाय और खूबसूरती वास्ते कपड़ेको अभ्रक भी लगाना हो तो उसे भी मायेके पानीमें ही मिला देना चाहिये। फिर कपडेको एकसा निचोड़कर तथा अच्छी तरह झाडकर छायामें सुखा लो, किन्तु उसे किसी जगह फैलाकर सुखानेसे उसमें सलवटें पडनेका पूर्ण अंदेशा रहता है, इसलिये यदि उसे दोनों ओरसे दो व्यक्तियों द्वारा पकडकर, हिला-हिलाकर सुखाया जाय तो फिर उसमें सलवटें पड़नेका कुछ खतरा नहीं रहेगा।

९—कच्चे रंगसे रंगे हुए कपड़ोंको धूपमें कभी नहीं सुखाना चाहिये क्योंकि धूप लगनेसे कच्चा रंग उड जाता है। इसके अतिरिक्त रंगीन रेशमी वस्त्रोंको जहां तक हो सके, छायामें ही सुखाना चाहिये।

१०—जब पानीमें रंग घोलना हो तो किसी साफ वस्त्रमें उसकी

पोटली बनाकर घोलना चाहिये। ऐसा करनेसे पानीमें रंगकी कोई डली नहीं रहने पाती। यदि रंगकी पोटली न बनाई जाय और उसे वैसे ही पानीमें घोल दिया जाय तो अवश्य ही पानीमें रंगकी कोई न कोई डली रह जायगी और वह कपडेसे चिपट-कर उसमें धब्बा डाल देगी जिससे कपड़ा बदसूरत हो जायगा।

११—अगर कपडा धोबीके घरका धुला हुआ हो तो उसे भी रंगनेसे प्रथम स्वच्छ पानीसे खूब मसलकर धो लेना चाहिये। जिससे उससे लगा हुआ नील, माया तथा ब्लीचिंग पाउडर आदि निकल जाय। अन्यथा कपडेपर रंग अच्छा नहीं चढ़ सकेगा, क्योंकि ब्लीचिंग पाउडरके ऊपर रंगका कुछ असर नहीं होता, किन्तु वह तो रंगको काटकर फेक देता है।

कच्ची रङ्गाईमें हमेशा ठंडापानी बर्तना चाहिये

१२—यदि किसी कच्चे रंगके कपडेपर कोई दूसरा रंग करना हो तो पहले ब्लीचिंग पाउडर द्वारा उसका पुराना रग काटकर साफ कर दो, क्योंकि अगर पुराने रंगके ऊपर दूसरा नया रंग चढाया जायगा तो वह (नया रंग) भी पहलेकी तरह धुंधला सा दिखाई देने लगेगा।

१३—कच्ची रंगाईके प्रकरणमें रंगोका जो परिचय बताया गया है वह केवल महीन कपड़ोकी रंगाईके लिये ही है। मोटे कपड़ोंके लिये रंगोंकी मात्रा दोगुनी तथा पानीकी मात्रा डेढ़ गुनी कर देनी चाहिये। इसके अतिरिक्त यदि किसी मोटे या महीन

वस्त्रका रंग अधिक शोख (गाढ़ा) करना हो तो अपनी इच्छा-
नुसार रंग-पानीकी मात्रा बढ़ा लेना चाहिये।

१४—कपड़े रंगते समय सारा रंग एक ही बार पानीमें नहीं घोल देना चाहिये, बल्कि पहले थोड़ासा रंग घोलकर उसमें कपड़ा रंग लो, फिर आवश्यकता होनेपर और रंग घोलकर उसमें वस्त्र रंग लो, इस तरह कपड़ोंपर धब्बे पड़ने तथा कहीं रंग अधिक और कहीं थोड़ा होनेका भय नहीं रहेगा।

१५—कपड़ा रंगनेके बाद उसे तुरन्त ही माया नहीं लगा देना चाहिये किन्तु पहले रंगे हुए कपड़ेको रंगीन पानीमें ही दोनों हाथोंसे खूब मसलो जिससे कपड़ेके तन्तुओंके प्रत्येक अंशमें रंग समा जाय। फिर उसमें कपड़ा छनकर माया लगा दो।

१६—रंगका परिमाण जितना कपड़ा रंगनेके लिये बतलाया गया है यदि उससे अधिक कपड़ा हो तो उसीके अनुसार रंग-पानीकी मात्रा भी बढ़ा लेनी चाहिये।

१७—रेशमी तथा ऊनी कपड़ोंको मरोड़कर निचोड़नेसे उनके फटने का अंदेशा रहता है इसलिये जहां तक हो सके उन्हें मुट्ठियोंमें दबा-दबाकर ही निचोड़ लेना चाहिये। कपड़े सुखानेका विधान प्रथम अध्यायमें हो चुका है।

कच्ची रङ्गाई

इस प्रकरणमें बाजारू रंगोंके मेल-जोलसे पूर्वोक्त सारे रंगोंके बनाने तथा उनसे कपड़े रंगनेकी विशेष विधि लिखी जायगी।

प्याजी

यह रंग बनानेके वास्ते बाजारसे 'फूलगुलाबी' रंग लाकर फी चार गज मलमल या महीन वस्त्र रंगनेके लिये २॥ ढाई सेर ठण्डे पानीमें एक रत्ती रंग घोलना चाहिये। क्योंकि चार माशे 'फूल-गुलाबी' रंगसे (जिसकी कीमत एक पैसा होती है) एक गज पत्ते (अर्ज) वाली १२८ गज मलमलका प्याजी रंग किया जाता है।

गुलाबी

गुलाबी रंग बनानेके वास्ते प्याजी रंगकी दोगुनी मात्रा कर देनी चाहिये अर्थात् चार गज मलमल या कोई महीन वस्त्र रंगनेके लिये ५ सेर ठण्डे पानीमे २ रत्ती 'फूलगुलाबी' रंग घोलना चाहिये।

आसमानी गुलाबी

यह रंग 'कच्चे गुलानार' और 'फूल गुलाबी' रगको आपसमें एक जगह मिला देनेसे बनता है। ढाई गज मलमल या महीन वस्त्र रंगनेके लिये एक सेर पानीमे 'ढाई रत्ती कच्चा गुलानार' तथा 'ढाई रत्ती फूलगुलाबी' रग घोलना चाहिये।

फूल गुलाबी

यह रंग बनानेके वास्ते प्याजी रंगकी तिगुनी मात्रा कर देनी चाहिये किन्तु इसमें पानीकी मात्रा नहीं बढ़ानी चाहिये, अर्थात् चार

गज बारीक वस्त्र रंगनेके लिये ढाई सेर पानीमें तीन रत्ती फूल-गुलाबी रंग घोलना चाहिये।

नसूरी

यह रंग 'सिन्दूरी' और 'फूलगुलाबी' रंगको मिलाकर बनता है। चार गज महीन वस्त्र रंगनेके लिये ढाई सेर ठण्डे पानीमें 'तीन रत्ती सिन्दूरी रंग' तथा 'आधी रत्ती फूल गुलाबी' रंग घोलना चाहिये।

लसूड़िया

यह रंग भी 'सिन्दूरी' तथा 'फूलगुलाबी' रंगके मेलसे ही बनता है। चार गज़ कपड़ा रंगनेके लिये ढाई सेर पानीमें ३॥ साढ़े तीन रत्ती 'सिन्दूरी' और 'आधी रत्ती फूलगुलाबी' रंग घोलना चाहिये।

जोगिया

यह रंग भी 'सिन्दूरी' तथा 'फूलगुलाबी' रंगके मेलसे बनता है। चार गज वस्त्र रंगनेके लिए ढाई सेर पानीमे ढाई रत्ती 'सिन्दूरी और आधी रत्ती 'फूलगुलाबी' रग घोलना चाहिये।

सिन्दूरी

जोगिया रंगकी कुछ मामूलीसी मात्रा बढ़ा देनेसे यह रंग बन बन जाता है मगर इसमें पानीकी मात्रा नहीं बढ़ानी चाहिये।

तरबूजी

यह रंग 'सिन्दूरी' तथा 'फूल गुलाबी' के मेलसे बनता है।

चार गज कपड़ा रंगनेके लिये ढाई सेर पानीमें तीन रत्ती 'सिन्दूरी' तथा 'डेढ़ रत्ती फूलगुलाबी' रंग घोलना चाहिये।

गुलाबासी

यह आसमी गुलाबीका ही दूसरा नाम है इसलिये इसे भी उसी की तरह बनाना चाहिये।

संदली

बाजारसे सन्दली रंग लाकर चार गज कपड़ा रंगनेके लिये ढाई सेर पानीमें चार रत्ती रंग घोलना चाहिए।

शरबती

यह रंग, 'सन्दली' तथा 'सिन्दूरी' रंगके मेलसे बनता है। चार गज वस्त्र रंगनेके लिए ढाई सेर पानीमें तीन रत्ती 'सन्दली' और एक रत्ती 'सिन्दूरी' रंग घोलना चाहिए।

बादामी

यह रंग भी 'सन्दली' तथा 'सिन्दूरी' रंगके मेलसे बनता है। चार गज महीन वस्त्र रंगनेके लिए ढाई सेर पानीमें ढाई रत्ती सन्दली और एक या डेढ़ रत्ती सिन्दूरी रंग घोलना चाहिए।

सफेद मोतिया

यह रंग सन्दली रंगसे बनता है। सात गज मलमल रंगनेके लिए ५ सेर पानीमें दो रत्ती 'सन्दली' रंग घोलना चाहिए।

मोठा मोतिया

यह रंग 'बसन्ती' रंगसे बनता है। सात गज महीन कपड़ा रङ्गनेके लिये ५ सेर पानीमें एक रत्ती 'बसन्ती' रङ्ग घोलना चाहिये।

जम्बू मोतिया

यह रङ्ग बसन्ती तथा कच्चे फिरोजी (चाहे वह दानेदार हो या पिसा हुआ) रङ्गको मिलाकर बनाया जाता है। सात गज महीन वस्त्र रङ्गनेके लिये पौन रत्ती बसन्ती और आधी रत्ती फिरोजी रङ्गको ५ सेर पानीमें घोलना चाहिये।

बिस्कुटी

यह रङ्ग 'स्लेटी काला' तथा 'सन्दली' और 'सिन्दूरी' रङ्गके मेलसे बनता है। पहले ढाई सेर पानीमें दो रत्ती काला स्लेटी रङ्ग घोलकर उसमें चार गज वस्त्र रङ्ग लो। फिर उसी पानीमें ढाई रत्ती 'सन्दली' तथा दो रत्ती 'सिन्दूरी' रंग घोलकर उस (स्लेटी रंगके कपड़े) को रग लो उनका बिस्कुटसा रंग हो जायगा।

सन्तरा

यह रंग सन्दली तथा सिन्दूरी रंगसे बनाया जाता है। ढाई गज महीन वस्त्र रंगनेके वास्ते सवासेर पानीमें दोनों रंग तीन-तीन रत्ती घोल लेने चाहिये।

केशरी

यह रंग सन्दली, सिन्दूरी और कच्चे लाल रंगके मेलसे बनता है। ढाई गज कपडा रंगनेके लिए सवासेर पानीमे तीन-तीन रत्ती सन्दली तथा सिन्दूरी और डेढ़ रत्ती लाल रंग घोलना चाहिए।

कासनी

यह रंग दानेदार 'ऊदा रंग' से बनाया जाता है। यदि चार गज कपड़ा रंगना हो तो एक रत्ती 'ऊदा रंग' किसी कटोरीमें डालकर तथा उसमें चार तोले पानी मिलाकर उसे आगपर उबाल लो। फिर कपड़ेमें छानकर ५ सेर पानीमें मिला दो और उसमें वस्त्रको रंग लो।

लिलम्बरी

यह रंग ऊदा और गुलाबी रंगके मेलसे बनता है। इस रंगसे ५ गज कपडा रंगनेके लिए चार सेर पानीमें डेढ़ रत्ती 'दानेदार ऊदा' और आधी रत्ती 'गुलाबी' रंग घोलना चाहिए।

जामुनी

यह रंग भी दानेदार ऊदा और गुलाबी रंगके मेलसे तैयार किया जाता है। ५ गज कपडा रंगनेके वास्ते चार सेर पानीमें ढाई [illegible] ऊदा और डेढ रत्ती गुलाबी रग घोलना च[illegible]

फालसा

यह रंग ऊदा और गुलाबी या कच्चे गुलानार रंगको मिलाकर बनाया जाता है। ५ गज कपड़ा रंगनेके लिए चार सेर पानीमें दो रत्ती दानेदार ऊदा और डेढ़ रत्ती गुलाबी या गुलानार रंग घोलना चाहिए।

बैंगनी

यह रंग दानेदार ऊदा रङ्गसे बनता है। तीन गज कपड़ा रङ्गनेके लिए ३ माशे ऊदा रंग एक कटोरीमें पानीके साथ उबाल लो, किन्तु रंग उबाल खाकर कटोरीसे बाहर निकलने न पावे फिर उसे कपड़ेमें छानकर ढाई सेर पानीमें मिला लो और उसमें कपड़ा रंग लो, उसका बैंगनी रंग हो जायगा।

कबूतरी

यह रंग 'काले स्लेटी' रंगसे बनता है। ढाई सेर पानीमें एक माशा स्लेटी रंग घोलकर उसमें तीन गज कपड़ेका कबूतरी रंग किया जा सकता है।

फ़ाख्ता

कबूतरी रंगका ही दूसरा नाम 'फ़ाख्ता रंग' है अतः इसे भी उसीकी तरह बनाना चाहिए।

स्लेटी

यह रंग तो बाजारमें मिलता ही है, वहींसे लेकर वस्त्रपर

इतना स्लेटी रंग चढ़ाना चाहिए जिससे उसका रंग बालकोंके लिखनेकी रंगतका हो जाय।

मेंहदी

यह रंग 'काले स्लेटी' और 'बसन्ती' रंगके मेलसे बनता है। यदि तीन गज कपड़ा रंगना हो तो पहले चार सेर पानीमें १ माशा स्लेटी रंग घोलकर उसमें वस्त्रको रंग लो फिर उसी पानीमें या दूसरे स्वच्छ पानीमें दो माशे बसन्ती रंग घोलकर उसमें उस वस्त्र को रंग लो, कपड़ेका मेंहदी रंग हो जायगा।

बसन्ती

यह रंग तो बाजारमें मिल ही जाता है। कपड़ेपर इतना बसन्ती रंग चढ़ाना चाहिए जिससे कपड़ेका रंग सरसोंके फूलोंकी रंगतका हो जाय।

सरदई

यह रंग फिरोजी रंगसे बनाया जाता है। दो सेर पानीमें डेढ़ रत्ती फिरोजी रंग घोलकर उसमें दो गज कपड़ेका सरदई रंग किया जा सकता है।

जंगाली

सरदई रंगकी दोगुनी मात्रा कर देनेसे जंगाली रंग बन जाता है। किन्तु इसमें पानीकी मात्रा नहीं बढ़ानी चाहिए।

फिरोजी

यह रंग भी बाजारमें मिल ही जाता है। दो गज कपड़ा रंगनेके लिये दो सेर पानीमें एक माशा रँग घोलना चाहिए।

अंगूरी

यह रंग 'फिरोजी' और 'बसन्ती' रंगके मेलसे बनता है। पांच गज कपड़ा रंगनेके लिए ५ सेर पानीमें ५ माशे फिरोजी और एक माशा बसन्ती रंग घोलना चाहिए।

धियाकपूरी

यह रंग भी फिरोजी और बसन्ती रंगको मिलाकर बनाया जाता है। पांच गज कपड़ा रंगनेके लिए ५ सेर पानीमें दो माशे फिरोजी तथा डेढ़ माशा बसन्ती रंग घोलना चाहिए।

तोता

यह रंग भी फिरोजी तथा बसन्तीको मिलाकर ही बनाया जाता है। पांच गज कपड़ा रंगनेके लिए ५ सेर पानीमें डेढ़ माशे फिरोजी और ६ रत्ती बसन्ती रंग घोलना चाहिए।

धानी

यह रंग भी फिरोजी और बसन्ती रंगके मेलसे ही तैयार किया जाता है। पांच गज मलमल रंगनेके लिए ५ सेर पानीमें १ माशा फिरोजी और दो माशे बसन्ती रंग घोलना चाहिए।

केलई

यह रंग भी फिरोजी और बसन्ती रंगके मेलसे ही बनता है। पांच गज कपडा रंगनेके लिए ५ सेर पानीमें दो माशे फिरोजी और एक माशा बसन्ती रंग घोलना चाहिए।

तवासारी

यह रंग आसमानी रंगसे तैयार किया जाता है। पांच गज कपडा रंगनेके लिए ५ सेर पानीमें 'चवन्नी मारका रंग' अथवा 'आसमानी पाउडर' ५ रत्ती घोलना चाहिए।

बदली

तवासीरी रंगकी दुगुनी मात्रा कर देनेसे बदली रंग बन जाता है किन्तु पानीकी मात्रा नहीं बढानी चाहिए और यदि इसमें आधी रत्ती फिरोजी रंग मिला दिया जाय तो वस्त्र बडा च मकदार हो जायगा।

आस्मानी

यह रंग तो बाजारमें मिलता ही है किन्तु कपडेपर आसमानी रंग इतना चढाना चाहिए कि जिससे उसका रंग आसमान जैसा हो जाय।

उनाबी

यह रंग भी बाजारमे मिलही जाता है। इस रंगसे कपडा रंगने की [illegible]। और पानीकी मात्रा वही है जो 'बैंगनी की है।

किरमिची

यह उनाबी रंगका ही दूसरा नाम है अतः इसे भी उसीकी तरह बनाना चाहिए।

शीशी

यह 'उनाबी' का तीसरा नाम है इसलिए उसीकी तरह बना लेना चाहिये।

अमरसी

यह रंग सन्दली और सिन्दूरी रंगको मिलाकर बनाया जाता है। तीन गज कपड़ा रंगनेके लिए दो सेर पानीमें ६ रत्ती सन्दली और एक रत्ती सिन्दूरी रंग घोलना चाहिए।

गाजरी

यह रंग किरमिची और काले स्लेटी रंगके मेलसे बनाया जाता है। तीन गज कपड़ा रंगनेके लिए ढाई सेर पानीमें चार रत्ती 'किरमिची' और एक रत्ती 'काला स्लेटी रंग घोलना चाहिए।

लवेण्डरी

कपड़ेपर बिल्कुल फीका 'सन्दली' या सिन्दूरी रंग चढा देनेसे इसका लवेण्डरी रंग हो जाता है और यह वास्तवमें 'मोतिया' रंगका ही दूसरा नाम है।

जहरमोहरा

प्रथम तो यह रंग बाजारमें मिल ही जाता है और यदि स्वयं ही तैयार करना हो तो पूर्वोक्त 'अंगूरी' रंगमें एक माशा 'काला स्लेटी' रंग मिलाकर तैयार कर लेना चाहिये।

सुंगिया स्याह

यह रंग भी बाजारमें मिल जाता है और यदि स्वयं बनाना हो तो 'अंगूरी' रंगमें डेढ़ माशा 'काला स्लेटी' रंग मिलाकर बना लेना चाहिये।

मूंगिया जर्द

यह रङ्ग भी बाजारमें मिल ही जाता है और अगर स्वयं बनाना हो तो 'अंगूरी' रङ्गमें ६ रत्ती बसन्ती तथा १ माशा 'काला स्लेटी' रङ्ग और मिला देना चाहिये।

खाकी

यह रङ्ग बाजारमे मिल जाता है और यह केवल पक्का ही होता है इसकी उपयोग विधि पक्की रंगाईमें लिखेंगे।

दालचीनी

यह रग 'स्लेटी, सन्दली, सिन्दूरी' के मेलसे बनता है। तीन गज कपड़ा रगनेके लिये तीन सेर पानीमें तीन माशे सिन्दूरी' 'तीन माशे 'स्लेटी' और 'एक माशा सन्दली' रंग घोलना चाहिये।

मलयागिरि

फिटकरीकी लागसे कपडेपर चढ़ने वाले 'सुर्ख नुस्वारी' रंग एक माशेमें दो रत्ती सन्दली रंग मिला देनेसे यह रंग तैयार हो जाता है।

हरा, लाल, नीला, बिलू, काही, कथई

ये सारे रंग बाजारमें मिल जाते हैं। इन्हे अपनी इच्छाके अनुसार मात्रामें कपड़े पर चढा लेना चाहिये।

सुपारी

यह रंग 'दालचीनी' रंगकी तरह बनाया जाता है।

ऊंटनी

'दाल चीनी' रङ्गमेंसे एक माशा 'काला स्लेटी' रंग कम कर देनेसे यह रङ्ग तैयार हो जाता है।

किशमिसी

'दालचीनी' रङ्गमेंसे ६ रत्ती स्लेटी रंग कम और उसमें ६ रत्ती सिन्दूरी रङ्ग अधिक कर देनेसे किशमिसी रंग बन जाता है।

कपासी

यह 'सुर्ख नुस्वारी' रंगका ही दूसरा नाम समझना चाहिये।

जीरा

यह रग काले स्लेटी तथा खाकी रंगके मेलसे बनाया जाता है।

तीन गज कपड़ा रंगनेके लिये चार सेर निवासे पानीमें ३ जाफी और एक माशा स्लेटी रंग घोलना चाहिये।

तमाखु

'दालचीनी' रंगमे सन्दली तथा सिन्दूरीकी डेढ़ गुनी और स्लेटी रंगकी दुगुनी मात्रा कर देनेसे 'तमाखु' रंग बन जाता है।

बेलगिरि

यह रंग सन्दली व सिन्दूरी रंगके मेलसे बनता है। इस रंगसे तीन गज कपड़ा रंगनेके लिये दो सेर पानीमें दोनों रंग डेढ़ रत्ती घोलने चाहिये।

नुस्वारी सुर्ख-नुस्वारी काला

ये दोनों रंग बाजारमे मिलते हैं। इन्हे अपने इच्छानुसार मात्रामें कपड़े पर चढ़ा लेना चाहिये।

खूनी

यह रंग 'गुलानार' और 'गुलाबी' रंगको बराबर-बराबर मिलानेसे तैयार हो जाता है।

सुआ

कपड़े पर इतना गाढ़ा 'फूल गुलाबी' रंग चढ़ाना चाहिये जिससे उसकी रंगत तोतेकी चोंच जैसी हो जाय, बस! इसीको 'सुआ रंग' कहते हैं।

काला

यह रंग बाजारमें मिल जाता है, इसे अपने इच्छानुसार मात्रामें वस्त्रोंपर चढ़ा लेना चाहिये।

नीबुआ

यह रंग 'धानी' रंगकी तरह बनाया जाता है।

गुलानार

यह रंग बाजारमें मिल जाता है। इसे अपने इच्छानुसार मात्रामें वस्त्रपर चढ़ा लो।

सुनहरी

चार हिस्से 'सन्दली' और एक हिस्सा 'सिन्दूरी' रंगके मेलसे यह रंग तैयार हो जाता है।

टसरी

बादामी रंगमें 'गुलाबी, स्लेटी तथा खाकी' रंग तीन-तीन रत्ती मिला देनेसे 'टसरी रंग' बन जाता।

सावा

यह तोते रंगका ही दूसरा नाम है।

लाखा

यह उनाबी रंगका ही एक नाम है।

रसौत

मेंहदी रंगमें एक माशा बसन्ती तथा एक माशा स्लेटी रंग और मिला देनेसे 'रसौत' रंग बन जाता है।

पिस्तई

'जम्बू मोतिया' रंगको दुगुनी मात्रा कर देनेसे यह रंग बन जाता है, किन्तु इसमें पानीकी मात्रा नहीं बढ़ानी चाहिये।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—कच्चे रंगोंका अधिक प्रचार क्यों है? कच्चे रंगोंसे कपड़े रंगनेमें किन-किन बातोंका ध्यान रखा जाता है?

२—रंग चमकाने तथा उसे शोख करनेको किन पदार्थोंका उपयोग किया जाता है?

३—पानीमें रंग कैसे घोलने चाहिये। कपड़ोंको दाग पड़नेसे कैसे बचाना चाहिये?

तीसरा अध्याय

——०※०——

पक्की रङ्गाई

पक्के रंग वे होते हैं जो कपड़ों पर चढ़ जानेके बाद फिर कभी नहीं उतरते। परन्तु धोबीकी भट्टीके वास्ते कोई भी रंग पक्का नहीं होता। पक्के रंगोंको आपसमें मिलाकर उनसे भिन्न २ रंग बनाने की विधि तो वही है जो कच्चे रगोंकी है किन्तु वस्त्र रगनेकी विधि 'कच्ची रगाई' से सर्वथा भिन्न है।

पक्के रङ्गोंसे वस्त्र रंगनेकी विधि

एक खुले मुंहके बरतनमें गर्म होनेके लिये इतना पानी रक्खो जिसमें रंगा जाने वाला कपडा अच्छी तरह उबाला जा सके। जब वह गर्म हो जाय तब उसमें पक्का रंग घोल दो और उसी समय कपड़े धोने वाला सोडा भी डाल दो (सोडा १ सेर पानीमें ६ माशेके हिसाबसे डालना चाहिये) फिर उसमें कपडा डाल दो और उसे इधर-उधर चलाओ। जब उस पर अच्छी तरह रंग चढ़ जाय तब रंगीन पानीमेंसे कपड़ेको ऊपर उठा कर पानीमें सोडेसे आधा-पिसा हुआ नमक मिला कर फिर कपड़ा डाल दो और चुस्तीके

साथ उसकी सारी सलवट खोलकर उसको चारों तरफसे चलाओ वरना कपड़े पर कहीं रंग अधिक और कहीं थोड़ा हो जायगा। इसके बाद जब कपड़ा अच्छी तरह पक जाय तब उसे नीचे उतार कर तथा ठण्डे पानीसे धोकर सुखा लो। यदि उसमें माया-लगाना हो तो उसे ठण्डे पानीसे धोनेके बाद लगाना चाहिये।

पक्के रंगोंमे सोडा डालनेसे कपड़ेपर एकसा रंग चढ़ता है और नमक डालनेसे रंगके पानीसे बचा हुआ सारा रंग कपड़ेपर चढ़ जाता है तथा कपड़ेका रंग शोख भी हो जाता है।

यदि पक्के रंगमे रंगते समय कोई कपडा खराब हो जाय। अर्थात उसमे धब्बे पड जाय तो उसे सोडे तथा साबुनके पानीमें अच्छी तरह उबालकर साफ कर लो और फिर पहलेकी तरह सावधानीसे रंगलो।

प्राचीन भारतकी सूती रंगाईका नमूना

कच्चा गुलबी रंग

कुसुम्बेके आधसेर पीले फूल सवासेर निवासे पानीमे एक घंटे तक भिगो रखो। जब फूलोंका रंग पानीसें घुल जाय तब फूल निकालकर फेंक दो। और रंगदार पानीमें तीन तोले सोडा तथा तीन सेर पानी और मिला दो। फिर उसमें कपडा भिगो दो। एक घंटेके बाद उसमेंसे कपड़ेको निकालकर नीम्बूके सतकी खटाईके पानीमें डोब देलो। इस प्रकार वस्त्र कच्चे गुलाबी रंगका हो जायगा।

पक्का गुलाबी रंग

पांच सेर पानीमें तीन छटांक साबुन काटकर उबाल लो और उसमें २५ मिनट तक वस्त्रको पाह देकर (भिगोकर) निचोड़कर सुखालो। फिर आध पाव मजीठका चूर्ण तथा आधी छटांक फिटकरी ६ सेर पानी डालकर उबाल लो। फिर ७ सेर पानीमें २ छटांक सोडा डालकर और उसीमें वह कपड़ा डालकर उबाल लो और धो, निचोडकर सुखालो, कपड़ेका पक्का गुलाबी रंग हो जायगा।

पक्का बैंगनी रंग

पहले आठ सेर पानीमें तीन छटांक पतंगका चूर्ण और आधी छटांक फिटकरी डालकर पकालो। फिर उसमें आध घण्टे तक कपड़ेको भिगो रखो। इसके बाद उसे उसमेंसे निकालकर सोडा मिले हुए निवासे पानीमें झकोलकर तथा निचोड़कर सुखा लो।

पक्का नारंगी रंग

पहले तो ७ सेर पानीमें तीन छटांक हार-सिंगारके फूल उबाल कर उसमें कपड़ा रंग लो फिर ६ सेर पानीमें आधपाव कुसुम्भेके फूल उबाल कर उसमें रंगलो और सुखालो। इसके बाद सूखे वस्त्रको खटाईके पानीमें डोब देकर सुखालो।

पक्का केसरिया रंग

आधपाव मजीठका चूर्ण, आधपाव अनारके छिलके, आधपाव हारसिंगारकी डण्डियां, इन सबको १२ सेर पानीमें उबालकर

उसमें कपडा रंगलो और फिर उसे खटाईके ठण्डे पानीमे डोब देकर सुखालो।

पक्का कादी रंग

अनारके पावभर छिलके ढाईसेर पानीमें उबाल लो। फिर कपडे को प्रथम नीलके पानीमें रंगकर बादमें पके हुए रंगमें रगलो। इसके बाद उसे फिटकरीके पानीमे धोकर सुखालो।

पक्का बदामी

पहले पांच सेर पानीमें एक छटाक हीराकश घोलकर उसमें कपडा भिगो दो। आध घण्टे बाद उसमेंसे निकालकर एक छटांक चूना मिले ठण्डे पानीमें धोकर सुखालो। सूख जानेके बाद उसे सोडा मिले ठण्डे पानीमें धोकर सुखालो।

पक्का खाकी

पावभर बडी हरडोंको ठण्डेमें पानी भिगो दो, जब वे फूल- जायं तो उन्हें पीसकर आठसेर पानीमें पकालो। जब उबाल आ जाय तब उसे छानकर उममें कपड़ेको पकालो। इसके बाद एक छटाक कसीस मिले हुए ४ सेर ठण्डे पानीमें उसे अच्छी तरह सुखालो।

कासनी रंग

पहले ५ सेर पानीमें १ छटांक नील घोकर उसमें कपड़ेको रंग -लो। फिर ५ सेर पानीमें आधपाव कुसुम्भेके फूलोका रंग बनाकर

इसमें रंगकर सुखा लो। फिर सूखे हुएको खटाईके पानीमें धोकर सुखालो।

पक्का हरा रंग

पहले पक्के आसमानी रंगके पानीमें कपड़ेको पकालो। फिर उसे हल्दीके पानीमे पकालो, कपड़ा हरे रंगका हो जायगा।

स्लेटी रङ्ग

थोड़ेसे रद्दी कागज जलाकर उनकी छाईको पानीमें उबालकर उसमे कपड़ा रंग लो।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—कपड़ोंपर पक्का रंग क्यों चढ़ाया जाता है? कौन २ से वस्त्र पक्के रंगसे अधिकतर रंगे जाते हैं?

२—पक्के रंगसे वस्त्र रंगनेकी विधि क्या है?

३—कच्चे और पक्के रंगोकी रंगाईमें कितना अन्तर है?

४—पक्के रंगोंमें सोडा क्यों डाला जाता है?

५—रंगोमे नमक डालनेका क्या प्रयोजन है?

६—भारतकी प्राचीन और नवीन रंगाइमें क्या अन्तर है?

—००—

चौथा अध्याय

ऊनी (गर्म) वस्त्रोंकी रंगाई

ऊनी कपडोंके रंग सूती कपडोंके रंगोंसे भिन्न ही होते हैं और वे ऊनी रंग, रेशमी रंग, गर्म रंग, तेजाबी रंग इन चार नामोंसे पुकारे जाते हैं। इसलिये रंग खरीदते समय इस बातका विशेष रूपसे ध्यान रखना चाहिये।

पुराने गर्म वस्त्रोंको रंगनेसे पहले धोकर साफ कर लेना चाहिये वरना उनपर रंग अच्छी तरह नहीं चमक सकेगा। और यदि कपडा नया हो तो उसे रंगनेके पहले 'पाह दे देनी चाहिये। इससे नये कपड़ेपर रंग बहुत अच्छा चढ़ता है तथा शोख भी हो जाता है। इसके अतिरिक्त यदि इच्छा हो तो सूती तथा रेशमी वस्त्रोंपर भी 'पाह' दी जा सकती है। वस्त्रोंको रंगनेसे पहले कुछ विशेष मसालों (पदार्थों) में पानी द्वारा तर करनेका नाम 'पाह देना' है।

पाह देनेके कुछ पदार्थ

फिटकरी माजू नासपालु

सज्जी	त्रिफला	पीपलकी छाल
नीला थोथा	सुपारी	कीकरकी छाल
	बड़ी हड़	

यदि कपड़ेपर काला, नुस्वारी या उनाबी रंग चढ़ाना हो तो उसे माजू कीकरकी छाल, सज्जी, फिटकरी, सुपारी इनमेंसे किसी एक चीजकी पाह दी जा सकती है।

यदि कपड़ेपर लाल या पीला रग करना हो तो उसे नासपाल, पीपरकी छाल, त्रिफला, बड़ी हड़ इनमेंसे किसी एक चीजकी पाह दी जा सकती है।

यदि कपड़ेपर नीला रंग करना हो तो उसे नीले थोथेकी तथा शेष सारे रंगोंके वास्ते फिटकरीकी पाह देनी चाहिये।

पाह देनेकी विधि

यदि नीला थोथा, सज्जी या फिटकरीकी पाह देनी हो तो उसे बारीक पीसकर ठण्डे पानीमें घोलकर कपड़ेसे छान लो और उसमें कपड़ा भिगो दो। इसके अतिरिक्त यदि किसी दूसरी वस्तुकी पाह देनी हो तो उसे २४ घण्टे पहले ठण्डे पानीमें भिगो दो, जब वह फूल जाय तब उसे घोट-पीस तथा पानीमें घोलकर कपड़छन करलो फिर उसमें कपडा भिगो दो। वस्त्रको पाहके पानीसे कमसे कम ६ घण्टे बाद निकालना चाहिये अन्यथा वस्त्रपर मसालेका कुछ भी असर न होगा। इसके बाद उसे स्वच्छ पानीसे एकबार धोकर रंग लेना चाहिये।

ऊनी रङ्गाईकी विधि

एक तांबे या पीतलका बरतन लेकर उसमें गर्म होनेके लिए इतना पानी रखो जिसमें रंगा जानेवाला कपडा अच्छी तरह उबाला जा सके जब वह कुछ २ गर्म हो जाय तब उसमें १ सेर पानीमें एक तोलेके हिसाबसे गन्धक या नमकका तेजाब मिला दो और उसमें कपड़ेको डुबोकर खूब तर कर लो जिससे वस्त्रके तमाम तन्तुओंमें तेजाबी अंश समा जाय। फिर उसे बाहर निकालकर तथा निचोड-कर रख दो और पानीमें तेजाबी रंग घोल दो। इसके बाद उसमें कपडा डालकर पका लो, जब उसपर अच्छी तरह रंग चढ़ जाय तब उसे नीचे उतार ठण्डे पानीसे धोकर सुखा लो किन्तु ठण्डे पानी द्वारा उसका सारा तेजाबी अंश निकाल देना चाहिये अगर उसमें थोडासा भी तेजाबी अंश रह जायगा तो कपडा गल जायगा अगर कपड़ेका रग अधिक शोख करना हो तो तेजाबकी मात्रा बढ़ा देनी चाहिये, क्योंकि तेजाब जितना अधिक डाला जायगा, वस्त्रपर उतना ही अधिक गाढ़ा रंग चढ़ेगा, किन्तु १ सेर पानीमें दो तोलेसे अधिक तेजाब कभी नहीं डालना चाहिये।

इसमें तेजाब डालनेकी आवश्यकता इसलिए पड़ती है कि ये तेजाबी रंग तेजाबकी लागके बिना कपडों पर चढ़ते ही नहीं।

रेशमी तथा ऊनी, दोनों प्रकारके कपड़े रंगनेके लिये एक गज पनेके २॥ ढाई गज लम्बे कपड़ेके लिये ६ माशे रंग काफी होता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—ऊनी वस्त्र कब रंगनेकी आवश्यकता पड़ती है ?

२—ऊनी वस्त्रोंपर रंग चढ़ानेसे पहले पाह क्यों दी जाती है ?

३—किन २ पदार्थोंसे पाह बनायी जाती है ?

४—ऊनी वस्त्रोंको रंगते समय किन २ बातोंका ध्यान रखना चाहिए ?

पांचवां अध्याय

रेशमी रंगाई

रेशमी रंगाई भी प्रायः उसी तरह होती है जिस तरह ऊनी बतायी गयी है। इन दोनोंकी रंगाईमें केवल इतना ही अन्तर है कि रेशमी वस्त्रको रंगकर सुखा लेनेके बाद कूटा जाता है, उससे तीन लाभ होते हैं। एक तो कपड़ेकी सारी सलवटें खुल जाती हैं, दूसरे उसमें चमकोलापन आ जाता है, तीसरे वह अत्यन्त मुलायम हो जाता है।

रेशमी वस्त्रको कूटनेकी सरल विधि

शीशमकी लकड़ीका एक पट्टा (जिसे रंगरेज लोग अड्डा कहते हैं) ऐसा बनवाना चाहिये जिसकी लम्बाई ढाई फुट, चौडाई दो फुट और मोटाई डेढ़ फुट हो। और एक गोल मूंगरी, जिसका वजन ५ सेरसे कम न हो। ये दोनों चीजें इतनी चिकनी हों कि उनके साथ कपड़ा चिपट या उलझ न सके। जब रेशमी कपड़ा कूटना हो तो पहले अड्डेके ऊपर कोई वस्त्र बिछा लो, फिर उसके ऊपर रेशमी कपड़ेकी अड्डेसे छोटी तह बनाकर रख लो। इसके

बाद उसे मूंगरी द्वारा बडी सावधानीसे धीरे २ कूट लो, किन्तु ध्यान रहे कि कपडा फट न जाय। जब वस्त्रमें पूर्वोक्त तीनों गुण आ जायं तब उसकी तह खोलकर उसपर इस्तरी कर लो।

यह भी ध्यान रखने योग्य बात है कि ऊनी तथा रेशमी वस्त्रोंके रंगनेकी तभी जरूरत होती है जब कि वह मैला होकर बदसूरत हो गया हो या पहला रंग पसन्द न आता हो। ऐसी दशामें वस्त्र पर दूसरा रंग चढ़ानेसे प्रथम उसका पहला रंग, रेशमी वस्त्रोंका रंग काटनेके खारसे, काटकर उडा देना चाहिये, वरना उसके ऊपर चढाया हुआ दूसरा रंग भी अपनी असली झलक नहीं दिखा सकेगा। इसके अतिरिक्त यदि रंगते समय कोई ऊनी या रेशमी वस्त्र खराब हो जायं तो उसे भी इसी खारसे साफ करके दुबारा रंग लेना चाहिये।

खार बनाने व उससे वस्त्रका रङ्ग काटनेकी विधि

रंग बेचनेवालोंकी दूकानसे रेशमी रंग काटनेका साबुन लाकर उसे बारीक २ काट कर तथा थोड़ेसे पानीमें डालकर गर्म होनेके लिये आग पर रख दो। जब सारा साबुन पानीमे घुल जाय तब उसमें थोड़ासा कपड़े धोनेका सोडा डालकर ऊपर इतना पानी और डाल दो जिसमें वह कपड़ा (जिसका रंग काटना हो) आसानी से डूब सके। जब वह पानी खौलने लगे तब समझ लो, कि अब खार बन गया। इसके बाद उसमें कपडा डाल कर खूब पकाओ, इससे उसका सारा रंग कट कर पानीमें मिल जायगा। फिर उसे

स्वच्छ पानीसे धोकर उसके ऊपर अपना मनचाहा रंग चढा लो।

यदि मैले रेशमी वस्त्रका क्षार द्वारा रंग काट देनेपर भी कपड़े पर कहीं रंगका कोई धब्बा रह जाय तो फिर उसे छुडानेके लिये रंगकाट नामका मसाला उपयोगमें लाना चाहिये।

रङ्गकाटको उपयोग विधि

रंगकाट एक तोला लेकर उसे ५ सेर पानीमें हलकर लो, किन्तु पानी खूब गर्म होना चाहिये। फिर उसमें कपडा डाल कर उसे जल्दी २ इधर उधर चला कर उसका रंग काट लो और तुरन्त ही उसमेंसे निकालकर ठण्डे पानीसे धो डालो। यदि इस मसालेके पानीमें कपडेको अधिक देर तक रखा जायगा तो सारा वस्त्र गल २ कर कट जायगा, क्योंकि यह एक प्रकारका तेजाबी मसाला होता है।

नोट—

इस मसालेका सूती वस्त्रोपर कभी उपयोग नहीं करना चाहिये। अन्यथा वस्त्रोसे हाथ धोकर बैठ जाना होगा।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—रेशमी वस्त्रोंको रंगने-रगानेकी आवश्यकता कब होती है ?

२—रेशमी तथा ऊनी वस्त्रोकी रंगाईमें क्या अन्तर है ?

३—रेशमी वस्त्रोंको माया लगाना चाहिये या नहीं ? यदि हां ! तो कौनसे पदार्थका लगाया जाय ।

४—रेशमी वस्त्रोंमें चमक उत्पन्न करनेके लिये किस पदार्थका उपयोग करना चाहिये और कैसे ?

५—रेशमी कपड़ोंको रंगनेसे पहले या रंगते समय तेजाब क्यों लगाया जाता है ?
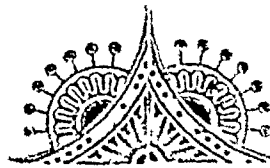
छठा अध्याय

सलमा-सितारा, जरी व लैस (गोटा) धोना

रीठे, पोटाश, एक-एक छटाक, कपड़े धोनेका सोडा दो तोला, इन तीनों चीजोंको पानीमें औटालो और छानकर शीशीमें भर लो। सलमा, सितारा, गोटा तथा जरीको पहले सादे गर्म पानीमें धो डालो, फिर आध सेर खौलते हुए पानीमें ५ तोले मसाला शीशीमेंसे डालकर उसे अच्छी तरह मिला लो और उसमें धोई जानेवाली वस्तुएं भिगो दो। एक घण्टे बाद उन्हे गर्म जलसे ही धोकर सुखा लो।

नोट—

इस मसालेसे फैल्टकैप, किश्तीनुमा गर्म कैप भी धोई जाती है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१—सलमे सितारेदार वस्त्र धोनेकी क्या रीति है ?

२—गोटा किस प्रकार साफ हो सकता है ?

तीसरा भाग

पहला अध्याय

साबुन-साजी

सबुन और उसका उपभोग

साबुन, तेल, सोडा तथा पानी आदिका मिश्रित पदार्थ है, इसे अंग्रेजीमें 'सोप' संस्कृत और हिन्दीमें 'वस्त्र-शोधक' तथा अरबी भाषामें 'साबुन कहते हैं। इसका उपयोग वस्त्र, शरीर तथा बाल आदि धोनेमें किया जाता है।

साबुनका प्रचार

साबुनका प्रचार संसारके प्रायः सभी देशोंमें पाया जाता है प्राचीन भारतमें इसका प्रचार बिलकुल न था, परन्तु! अब तो अमीर गरीब प्रत्येक आदमी इसका खरीदार है, प्रायः सभी स्त्री-पुरुषोंको इसकी दरकार है, क्योंकि यह कुरूप-सुरूप, काले-गोरे सभीका सुन्दर शृंगार है और शायद इसीलिये नयी सभ्यतामें सने

युवक-युवतियोंके सिरपर इसका भूत सवार है, इतना ही नहीं, किन्तु यह बाल उड़ानेका भी बड़ा अचूक हथियार है, जिसे देखो, वही इसकी चाहमें बीमार है, बस! इसीलिये ग्रन्थकार भी इसके बनानेकी सरल रीतिसे जनताको परिचित करानेके लिये लाचार है।

घरमें साबुन बनानेकी आवश्यकता

व्यापारिक दृष्टिसे साबुनमे ऐसी कई अपवित्र वस्तुएं डाली जाती हैं जिनसे साबुन सस्ता, देखनेमे सुन्दर और भारी (वजनदार) बन जाता है। अक्सर व्यापारी लोग इसमे चर्बीका इस्तेमाल करते हैं जो केवल हिन्दू जातिके वास्ते ही नहीं—किन्तु बहुतसे अन्य मतके भाई-बहनोंके लिये भी घृणाकी वस्तु समझी जाती है। इसके अतिरिक्त व्यापारी लोग साबुन बनानेमें जिस तेलका उपयोग करते हैं वह इतना गन्दा होता है जो शरीर और वस्त्र दोनोंको ही हानि पहुंचाता है। इसके अतिरिक्त और भी अनेक कारण हैं जो परिवारवालोंको अपने घरोंमे साबुन बनानेकी आवश्यकतापर मजबूर कर देते हैं।

साबुन बनानेके पात्र

एक बड़ा टब

यह तामचीनीका बनाना चाहिये, क्योंकि इसमें लाई घोटी जाती है, इसलिये यदि यह एलमोनियम आदिका बनाया जायगा तो उसमें छेद हो जायंगे और। यदि मिट्टीके बरतनसे काम लिया जायगा तो लाई मटियाली हो जायगी।

लकड़ीकी करछी या मूसली

यह साबुन घोटनेके काम आती है इसलिये यह पक्की शीशमकी होनी चाहिये।

फ्रेम

इसमें साबुन जमाया जाता है, यह लोहे तथा लकड़ीका बनाया जाता है परन्तु लकड़ीका फ्रेम मजबूत नहीं होता।

लोहेका चमचा

इससे लाई डालने तथा उसे चलाने-फिरानेका काम लिया जाता है। यह लकड़ीका न हो वरना लाईसे गल जायगा।

चौखटा

चौखटे तब काम आते हैं जब साबुन बनकर तैयार हो जाता है। ये फ्रेमकी लम्बाई-चौड़ाईके अनुसार होते हैं। इनको फ्रेममें जमे हुए साबुनमें फंसा देनेसे साबुन बड़ी सफाईसे कट जाता है।

लोहेका तार

यह कच्चे लोहेका बारीक तार होता है जो कि साबुनकी टिकिया काटनेके काममें आता है।

सांचा

यह लोहेका बनाया जाता है। यह उसी शक्लका बनाया जाता है जिस शक्लकी साबुनकी बट्टी बनानी हो। इसके तीन भाग होते

हैं—एक चारों ओरका चौकन्ना, दूसरा ऊपरका, तीसरा नीचेका। ऊपर-नीचेके भागमें साबुनका नाम, बेल-बूंटे आदि खुदे रहते हैं।

कड़ाही

इसमें साबुन बनाया जाता है।

हथौड़ी

यह चौखटे आदि ठोकनेके काममें आती है।

छुरी

इससे साबुनकी टिकियां काटकर इकसार की जाती हैं।

लोटा

यह पानी वगैरहके काममे आता है।

साबुन बनानेके पदार्थ

सज्जी

यह एक प्रकारकी राख होती है जो लवण नामके वृक्षसे तैयार की जाती है। पंजाबमें इसके बड़े बड़े कारखाने हैं। इसके बनानेकी विधि यह है कि लवण नामके वृक्षको काटकर तथा सुखाकर जला लेते हैं, फिर इसकी जली हुई राखको कढ़ाईमें पका लेते हैं, ऐसा करनेसे इसके बड़े-बड़े ढेले बन जाते हैं; बस ढेले ही सज्जी कहलातेहैं।

चूना

जिला नैनीतालकी गौला नामक नदीसे एक प्रकारका नीला-सा पत्थर निकलता है उसीको फूंककर चूना बनाया जाता है जो साबुन बनाने मकान पोतने तथा और भी भिन्न भिन्न कामोंमें आता है।

सोडा

यह एक प्रकारका गर्म सोडा होता है जो विलायतसे बनकर आता है। यह साबुन बनानेका सर्वप्रधान पदार्थ है।

सोडा कारबोनेट

यह 'रे' या 'सज्जी' से बनाया जाता है।

तेजाब

साबुन बनानेके लिये गंधक तथा शोरे आदिका तेजाब उपयोगमें लाया जाता है। इसे बड़ी सावधानीसे रखना चाहिये।

तेल

साबुनमें सरसों, महुआ आदिके तेल डाले जाते हैं परन्तु इसके लिये सरसों, महुआ और नारियलका तेल सबसे उत्तम समझा जाता है।

स्प्रिट, रंग, इत्र, पानी

आदिका भी साबुन बनानेके लिये आवश्यकतानुसार उपयोग किया जाता है।

साबुन बनानेका रंग

साबुनमे रङ्ग डालनेकी रीति भी प्रायः सभी जगह प्रचलित होती आ रही है। परन्तु साबुनके रङ्ग वस्त्र रङ्गनेके रङ्गोंसे भिन्न ही होते हैं अतः साबुनके वास्ते रङ्ग खरीदते समय इस बातका विशेष ध्यान रखना चाहिये।

साबुनमें रंग डालनेका समय

साबुनमे रङ्ग तीन प्रकारसे डाले जाते हैं, कुछ रङ्ग तो पानीमें घोलकर, कुछ स्प्रिटमें घोल कर और कुछ तेलमे घोलकर, जो रङ्ग तेलमे घोलकर डाले जाते हैं उनको तब डालना चाहिये जब लाई गाढी हो जावे, अगर पतली लाईमें डाल दिया जायगा तो इससे कास्टिक सोडेकी शक्ति कमजोर हो जायगी और फिर साबुन खराब हो जायगा। शेष रङ्ग चाहे जब डाले जा सकते हैं। परन्तु जो रङ्ग तेल तथा स्प्रिटमें घोलकर डाले जाते हैं उन्हे साबुनमे डालनेसे पहले किसी बारीक वस्त्रमें छान लेना चाहिये, वरना उसकी डलिया साबुनको भद्दा बना देगी।

साबुन जबतक गीला रहता है तबतक उसमें पड़ा हुआ रङ्ग हल्का दिखाई देता है और जब वह सूख जाता है तब रङ्ग भी गाढ़ा दिखायी देने लगता है इसलिये गीले साबुनमे रङ्ग न डाला जाय तो साबुन अति-उत्तम होगा।

साबुनमें सुगन्धित डालना

नहाने तथा मुँह-हाथ धोनेके साबुनोमे सुगन्धि डालनेका

रिवाज आम हो गया है। आजकल कोई कोई व्यापारी और कारो-गर खुशबू कम खर्च करनेके अनुमानसे उसे साबुनकी बट्टियोंके ऊपर से मल देते हैं, परन्तु इससे कुछ लाभ नहीं, क्योंकि यह दो तीन दिनमें ही उड़ जाती है; इसलिये खुशबुओंको तारपीनके तेलमें मिला-कर डालना चाहिये, परन्तु वह खुशबू तभी डालनी चाहिये जब साबुन ठंढा हो जाय वरना सारी खुशबू भाप बनकर उड़ जायगी। खुशबू अपने इच्छानुसार चाहे जिस चीजको कम या अधिक डाली जा सकती है।

सोडा कास्टिकका तेजाब (लाई) बनाना

पानीमें घुले हुए सोडा कास्टिकको ही 'सोडा कास्टिकका तेजाब या लाई कहते हैं। इसके बनानेमें बड़ी सावधानी रखनी चाहिये। क्योंकि साबुनका भला या बुरा होना इसीके ऊपर निर्भर है। लाई बनानेसे पहले कास्टिक सोडेकी यह पहचान कर लेनी चाहिये कि वह ठीक है या नहीं क्योंकि यह हवा लगनेसे भी खराब हो जाता है अर्थात् इसकी गर्मी उड़ जाती है, फिर यह साबुनके कामका नहीं रहता। साबुनके वास्ते लाई बनानेको ९८ डिग्रीका सोडा लेना चाहिये, सोडेकी डिग्रीका नम्बर ९८ उसके डब्बेके मुंहपर ही लिखा रहता है। उसे देख लेना चाहिये। यदि इससे कम डिग्रीका सोडा होगा तो साबुन अच्छा नहीं बनेगा और यदि अधिक डिग्रीका होगा तो उसकी लाई ही नहीं बन सकेगी।

कास्टिक सोडेका डिब्बा हवा व तरीसे बचाकर रखना चाहिये। जब उसमेंसे सोडा निकालना हो तो लोहेकी कर्छीसे निकालना चाहिये और उसे निकालते समय यह सावधानी रखनी चाहिये कि वह शरीरके किसी हिस्सेसे न छू जाय, वरना जहां वह लग जायगा वहींसे शरीर जल जायगा। चौबीस घण्टेसे अधिक समयकी रखी हुई लाईसे साबुन नहींना बना चाहिये क्योंकि फिर उसकी मैल काटनेकी शक्ति कमजोर पड जाती है।

जितने सोडेकी लाई या तेजाब बनाना हो उतना सोडा किसी लोहे, ताम्बे या छीनाके बरतनमें निकालकर उसमें तुरन्त सोडेसे तिगुना पानी डाल दो और उसे लकडीके डण्डेसे इतना घोटो कि उसमे डली न रहे। फिर 'हाइड्रोमीटर' से उसकी गर्मीकी डिग्री देख लो।

हाइड्रोमीटर

यह एक कांचका यन्त्र होता है। इसके नीचेके भागमें एक लट्टू के नीचेके भागमें एक लट्टू लगा होता है, इस लट्टूके बीचमें एक नली लगी रहती है। इसमें नम्बर पड़े रहते हैं, इन्हीं नम्बरोंसे लाईकी गर्मी या उसके गाढ़ेपनकी डिग्रीकी पहचान हो जाती है।

साबुन बनानेके लिए २४ डिग्रीवाली लाई काममें लानी चाहिए; इससे कम नम्बरकी लाईसे साबुन नहीं बन सकता, क्योंकि नं० २४ की डिग्रीसे कम डिग्रीकी लाई जमती ही नहीं, इससे साबुन पिघला पिघला और पिलपिलासा दिखाई देने लगता है। लाईकी डिग्री कम हो तो सोडा तथा अधिक हो तो पानी और मिला दो।

साबुन बनाते समय ध्यानमें रखने योग्य बातें

१—सोडा कास्टिक तथा लाईकी डिग्री देखना।

२—साबुनमें पड़नेवाला तेल स्वच्छ हो।

३—लाईके बरतनको हमेशा 'पैरीफीन' से ढककर रखना।

४—साबुनको चमकदार बनानेको उसमे थोड़ासा 'पैरीपीन' डाल दो।

५—यदि ठंडी रीतिसे साबुन बनाना हो तो उसमें नारियलका तेल अवश्य डाला जाय और यदि उसमें थोड़ासा पैरीपीन भी डाल दिया जाय तो वह बहुत कम घिसेगा।

६—यदि ठंडी रीतिसे बनाया हुआ साबुन खराब हो गया हो तो उसमें थोड़ासा पानी डालकर पका लो, वह ठीक हो जायगा।

७—साबुनकी टिकियां सुखाकर रखनी चाहिए।

८—साबुन बनाते समय उसका सब सामान अपने पास रख लेना चाहिए।

६—आंख कड़ाहीके ऊपर न रहे-जिससे कास्टिककी भाप आंखोंमें न जाय।

१०—जबतक साबुन बन न जाय तबतक उसे छोड़कर बातोंमें न लगना चाहिए। वरना साबुन बिगड़ जायगा।

दूसरा अध्याय

साबुन बनानेके प्रकार (भेद)

साबुन दो प्रकारसे बनाया जाता है, एक तो ठण्डी रीतिसे और दूसरे गर्म रीतिसे।

ठण्डी रीति द्वारा साबुन बनाना

देशी साबुन बनानेकी प्रथम विधि

१—कास्टिक सोडा एक पाव

२—ठण्डा पानी तीन पाव

३—मैदा एक पाव

४—महुवेका तेल डेढ़ पाव

५—तिलका तेल तीन पाव

६—नारियलका तेल आध पाव

७—पिसा हुआ नमक तीन तोले

पहले कास्टिक सोडा पानी लोहे या ताम्बेके बरतनमें डालकर ऊपर बताई हुई विधिके अनुसार उसकी लाई बना लो। फिर नमकको भी थोड़ेसे ठण्डे पानीमें घोलकर उसीमें डाल दो। इसके बाद

तीनों तेल और मैदेको किसी बरतनमें डालकर सोटेसे इतन घोंटो कि वे सब आपसमें अच्छी तरह मिल जायं और मैदेकी कोई डली न रहे। फिर लोहेकी कर्छीसे उसमें लाई डालते जाओ और सोटेसे चलाते जाओ, इस तरह जब लाई खतम हो जाय तथा वह पदार्थ गाढ़ा हो जाय तब उसे सांचोंमें भर दो साबुन तैयार हो गया। यदि उसमें रग डालना हो तो वह गाढ़ा होनेपर ही डालना चाहिए।

दूसरी विधि

१—कास्टिक सोडा एक पौंड ३—मैदा एक पौंड

२—गर्म पानी चार पौंड ४—महुवेका तेल एक पौंड

पहले सोडे और पानीको लोहेके बर्तनमें डालकर रख दो, फिर तेल और मैदाको सोटेसे दूसरे पात्रमें एक साथ घोट लो जब सोडेका पानी ठण्डा हो जाय तो उसे धार बांधकर दूसरे तेल मैदावाले पात्रमें डालते जाओ तथा उसे सोटेसे खूब हिलाते रहो। इस प्रकार जब सब पदार्थ मिलकर गाढ़ा हो जाय तब उसे सांचोंमें भर दो जब जम जाय तब छुरीसे उसकी बट्टियां काटकर सुखा लो।

तीसरी विधि

१—कास्टिक सोडा १ पौंड, ३—तेल सरसो आधा पौंड

२—ठण्डा पानी २ पौंड, ४—मैदा डेढ़ पाव

पहले (पूर्व विधिके अनुसार) सोडे और फिर किसी बरतनमें तेल और मैदेको लकड़ीके सोटेस एक साथ घोंटकर उसमें लाई

(सोडेका तेजाब) को धीरे २ छोड़ते जाओ तथा लकड़ीसे उसे चलाते जाओ। जब वह गाढ़ा पड़ने लगे तब उसमें ३ तोले गंधक पीसकर डाल दो और उसे सांचोंमें डाल दो। जब वह जम जाय तब टिक्कियां काटकर सुखा लो।

धोबी सोप बनाना

१—कास्टिक सोडा ३ सेर।	३—तेल तीन सेर।
२—ठण्डा पानी २० सेर।	४—मैदा १ सेर।

पहले कास्टिक सोडेको पानीमे डालकर लकड़ीके डण्डेसे अच्छी तरह घोलकर रख दो जब वह नितर जाय तब तेल और मैदाको एक साथ मिलाकर रखो और उस पानीको इस तेल मिश्रित मैदामें धीरे धीरे डालो और चलाते भी रहो। जब वह गाढ़ा हो जाय तब उसे जमाकर पहलेकी तरह टिकिया बना लो।

उत्तम सस्ता साबुन नं० १

१—कास्टिक सोडा	एक पाव	५—ठण्डा पानी	१॥ सेर
२—मैदा	१ पाव	६—सज्जी	१ पाव
३—तेल	१ पाव	७—निशास्ता	१ पाव
४—संगजराहत	१ पाव		पिसी हुई

पहले किसी लोहेके बर्तनमें सोडा और पानी घोलकर रख दो। फिर शेष सब वस्तुओंको एक जगह मिलाकर फिर उसमें वह पानी मिलाओ और गाढा हो जानेपर उसे सांचोंमें जमाकर टिक्किया काट लो।

उत्तम सस्ता साबुन नं० २

कास्टिक सोडा एक पावको सवा सेर ठण्डे पानीमें घोल लो, फिर पाव भर मैदा, आध पाव निशास्ता, आध पाव पिसी हुई सज्जीको सवासेर तेलमें मिलाकर उसमें पहले तैयार किया हुआ सोडेका पानी मिला दो और उसे सोटेसे खूब घोटो। जब वह गाढ़ा हो तब उसे सांचोमे जमा कर उसकी टिकियां काट लो।

अमृतसरी साबुन बनाना

कास्टिक सोडा चार छटांक लेकर उसे १२ छटांक पानीमें अच्छी तरह घोलकर रख दो। फिर एक कड़ाहीमें १ सेर स्वच्छ सरसोंका तेल आध सेर मैदा और आध पाव सोडा बाइकार्ब डाल-कर उसे लकड़ीके सोटेसे घोटकर एकसार कर लो। तदन्तर उसमें सोडेका पानी धीरे २ धार बांधकर छोड़ो और साथ ही डंडेसे चलाते भी जाओ, जिससे उसमें गुढ़ियां न पड़े; बस! जब वह गाढ़ा हो जाय तब उसे सांचोंमे भरकर जमालो और टिकियां काटकर सुखा लो।

—०*०—

तीसरा अध्याय

गर्म रीति द्वारा साबुन बनाना

सरसोंका साबुन

दो पौंड कास्टिक पोटाश और चार पौण्ड कास्टिक सोडाको बारह सेर ठण्डे पानीमें घोल दो। जब वह अच्छी तरह घुल जाय तब सरसोंका ३० सेर स्वच्छ तेल कडाहीमें आगपर चढ़ा दो। फिर उसमें पहलेसे ही तैयार रखा हुआ सोडेका पानी धीरे २ धार बांधकर छोड दो। जब वह गाढ़ा हो जाय तब नीचे उतार लो और फ्रेममें भरकर जमा लो।

अंग्रेजी साबुन बनाना

पहले १ पौंड कास्टिक सोडे और ३ पौंड ठण्डे पानीका तेजाब (लाई) बनाकर रख लो। फिर मन्द-मन्द आंचवाली भट्टीपर एक कडाहीमें १ पौण्ड चरबी तथा दो पौंड तेल चढाकर उसमें चरबीको पिघला लो। जब तेल-चरबी एकरस हो जाय तब उसमें सोडेका तेजाब धार बांधकर ढालते जाओ और उसे लकडीसे चलाते जाओ। मगर इस विधिमें आंच तेज न होने पावे, वरना उसमें उफान आकर सारी चरबी बाहर निकल जायगी। इस तरह चलाते २ जब सारा

तीसरा अध्याय

गर्म रीति द्वारा साबुन बनाना

सरसोंका साबुन

दो पौंड कास्टिक पोटाश और चार पौण्ड कास्टिक सोडाको बारह सेर ठण्डे पानीमें घोल दो। जब वह अच्छी तरह घुल जाय तब सरसोंका ३० सेर स्वच्छ तेल कडाहीमें आगपर चढ़ा दो। फिर उसमें पहलेसे ही तैयार रखा हुआ सोडेका पानी धीरे २ धार बांधकर छोड दो। जब वह गाढ़ा हो जाय तब नीचे उतार लो और फ्रेममें भरकर जमा लो।

अंग्रेजी साबुन बनाना

पहले १ पौंड कास्टिक सोडे और ३ पौंड ठण्डे पानीका तेजाब (लाई) बनाकर रख लो। फिर मन्द-मन्द आंचवाली भट्टीपर एक कडाहीमें १ पौण्ड चरबी तथा दो पौंड तेल चढाकर उसमें चरबीको पिघला लो। जब तेल-चरबी एकरस हो जाय तब उसमें सोडेका तेजाब धार बांधकर ढालते जाओ और उसे लकडीसे चलाते जाओ। मगर इस विधिमें आंच तेज न होने पावे, वरना उसमें उफान आकर सारी चरबी बाहर निकल जायगी। इस तरह चलाते २ जब सारा

पदार्थ गाढ़ा हो जाय तब उसे नीचे उतारकर सांचोंमें भरकर टिकिया बनालो। इसमें इच्छानुसार रंग भी डाला जा सकता है।

सनलाइट सोप

पहले दारु हल्दीमेंसे रंग निकालकर रख लो। फिर १ सेर कास्टिक पोटाशको ४ सेर पानीमें मिलाओ और उसे गलनेके लिये रख दो। जब वह गल जाय तब २० पौण्ड नारियलका तेल लेकर उसमें आध सेर जापानी मोम डालकर आगपर चढ़ा दो और ऊपरसे हल्दीके रंगका पानी आवश्यकतानुसार छोड दो जब मोम गल जाय तब उसमें पोटासका पानी भी डाल दो तथा खूब चलाओ जब यह गाढ़ा होने लगे तब उसमे खुशबू मिलाकर उतार लो और ठण्डा हो जाने पर उसकी टिकियां बनाओ।

नीमका साबुन

कास्टिक सोडा १२ छटांक लेकर उसे सवा दो सेर पानीमें हल कर लो। फिर ६ सेर नीमका स्वच्छ तेल लेकर उसमें इसे मिला दो और लकड़ीसे चलाकर दोनोंको एकरस करदो। जब वह जमने लगे तो सांचोंमें भरकर उसकी टिकियां बनाकर सुखालो।

नोट—यह साबुन शरीरके रक्त विकारसे उत्पन्न होनेवाली खारिस और फोड़े-फुन्सियोंका मिटानेके लिये बडा गुणकारी है।

दूसरी विधि

नीमके पत्तोंका आधसेर अर्क निकाल उसे पकालो जब वह लुआदार हो जाय तब उसमें १० बूंद गन्धकके तेजाबको तथा आध

-सेर पोटासका तेजाब और एक पाव जापानी मोम मिला कर उसे अच्छी तरह घोंट लो। जब वह जमने लगे तब उसे सांचोंमें भरकर टिकिया बनालो।

नीम्बू (लीमू) का साबुन

आध सेर निशास्तेकी दो सेर पानीमें लेही बना लो, फिर उसमें १६ सेर सफेद साबुन काटकर मिला दो और आगपर पिघला लो। जब ये दोनों आपसमें अच्छी तरह मिल जायं तब इनमें आध सेर रोगनदार चीनी मिला दो और ऊपरसे १ औंस लौंगका तेल और १२ औंस नीम्बूका तेल छोड़कर खूब पका लो। जब इसमें कड़ापन आने लगे तब सांचोंमें भरकर टिकिया बनालो।

दूसरी विधि

कास्टिक सोडेकी ४८ नम्बरकी आध सेर लाई बनाकर उसमें १ सेर नारियलका तेल मिलाओ और उसे खूब घोंटो। जब वह जमने लगे तब उसमें पीला रंग और नीम्बूकी खुशबू मिलाकर उसे सांचोंमें भर टिकिया बना लो।

कपड़ोंकी चिकनाई साफ करनेका साबुन

चार पौंड कास्टाइल सोपको थोड़े पानीमें आगपर धरकर पिघला लो। जब वह पिघल जाय तब उसमें १ पौंड कारबोनेट आफ पोटाश मिलाकर उसे खूब घोंटो। फिर उसमें १ औंस अल-कोहल (Alcohal) और १ औंस हार्टशन मिला दो। फिर उसे अच्छी तरह पकाकर साबुन तैयार कर लो।

उपयोग विधि

जहां वस्त्रपर चिकनाई लगी हो वहां इस साबुनको गर्म पानीमें घोलकर लगा दो। और दो घंटे बाद उसे गर्म पानीसे धो डालो, चिकनाई दूर हो जायगी।

साधारण-धब्बे-नाशक साबुन

इस साबुनके द्वारा वस्त्रोंपर लगे हुए फलों और शाक-सब्जियों के दाग बिलकुल साफ हो जाते हैं। इसकी उपयोग विधि वही है जो 'चिकनाई साफ करनेके साबुन, की है। इसके बनानेकी विधि भी उसीके समान है, अन्तर केवल इतना ही है कि इसमें 'हार्टशन' के स्थानपर 'वारसहार्न' का इस्तेमाल किया जाता है।

साबुन-बहार साबुन बनाना

सत पौंड लवेण्डर सोपमें २½ औंस करनाके फूलोंका तेल मिला दो और अपनी इच्छानुसार रंग डाल दो, साबुन तैयार हो जायगा।

कारबोलिक सोप

पहले १ भाग कास्टिक सोडा और तीन भाग पानी लेकर लाई बना लो। फिर २ सेर जापानी मोममें १ सेर महुएका तेल मिलाओ और उसे आगपर पिघलाओ। इसके बाद उसमें २ औंस कारबोलिक आइल डालो और सबको अच्छी तरह मिलाकर एकरस कर लो। अब इसमें धीरे धीरे लाई डालते जाओ। जब गाढ़ा हो जावे तब फ्रेममें जमाकर उसकी टिकिया बना लो।

सुन्दर बाल-सफा-साबुन

बेरियम सलफाइड जो अंग्रेजी दवा होती है उसे १ भाग लो और इसीके बराबर नारियलका तेल लो, तथा ३ भाग संगजराहत और एक भाग खरिया लो, तीनों वस्तुओंको बारीक करके तेलमें मिलाकर सांचेमें या बिना सांचेके हाथसे ही टिकिया बना लो।

जिस जगहके बाल साफ करने हों उस जगहको पानीसे तर कर लो। फिर साबुनको ठण्डे पानीमें घोलकर वहा लेप कर दो। दस मिनट बाद कपड़ेसे पोंछ डालो। बाल साफ होकर चमड़ी मुलायम निकल आयेगी।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१ साबुन क्या वस्तु है ?

२ साबुन कैसे बनाया जाता है ? वह किस किस काममें आता है।

३ साबुन बनानेके लिये किन २ चीजोंकी आवश्यकता होती है ?

४ देशी, अमृतसरी, कारबोलिक, सनलाइट, उत्तम सस्ता साबुन—ये साबुन कैसे बनाये जाते हैं ?

५—साबुन बनाते समय किन-किन बातोंका ध्यान रखना चाहिये ?

—०*०—

Examination Test Paper

Girls—Middle Class of the Punjab

F.—1933

Laundry—Written

Time 1 hour | Marks 25

1—(क) माया (कलप) किन चीज़ोंसे बन सकता है ?

(ख) माया बनानेकी विधि लिखो।

2—कच्ची रंगदार छींटकी कमीज या फ्राक (Frock) को किस ढंगसे धोओगी ?

3—सुनहरे रंगके कपड़ेपर तेलके धब्बे पड़ गये हैं, किस प्रकार साफ करोगी ?

4—ऊनी और रेशमी कपड़ोंको गर्मियोंमें किस तरह रखोगी कि कीड़ा न खाय।

5—गर्म कपड़े (सर्ज) और मखमल परसे चिकनाईका धब्बा किस प्रकारसे दूर किया जा सकता है ?

G.—1934

Laundry—Written

Time 1 hour Marks 25

1—रेशमके कपड़ेको धोते समय किन बातोंका ध्यान रखना चाहिये।

2—लोहेके जंगका धब्बा (दाग) रंगदार कपड़ेपरसे किस प्रकार हटाया जा सकता है ?

3—इस्त्रीका पौलिश (Polish for irons) बनानेका तरीका लिखो।

4—एक अत्यन्त रोगी मनुष्यके कपड़े धोते समय तुम किन बातोंका विशेष ध्यान रखोगी, ताकि रोग न फैले और पहिरने वालेको हानि न पहुंचे।

H.—1935

Laundry—Written

Time 1 hour Marks 25

1—(क) बताओ कि सफेद फलालैनके कुरतेको तुम किस तरीकेसे भिगोओगी और सुखाओगी।

(ख) क्या कपड़ेको सुखानेके पीछे उसपर इस्त्री करोगी ? अपने उत्तरका हेतु (वजह) भी बताओ।

2—(क) बताओ कि सफेद रेशमको किस तरह साफ करोगी ?

(ख)काली मखमलको किस तरह साफ करोगी ?

3—निम्नलिखित दाग किस तरीकेसे दूर करोगी:—चायका धब्बा लाल रंगकी स्याहीका धब्बा, चिकनाईका धब्बा, अनारका धब्बा।

4—(क) बताओ कि नमक, गोंद, अरारोट और पेटरोल धुलाईके काममें क्यों बरते जाते हैं?

(ख) मिट्टीके तेलकी बास कपड़ोंमेंसे किस तरह दूर करोगी?

I—1936

Laundry Paper (theoritical or written) in Hindi

Time 1 hour. Marks 25

1—किसी कपड़ेको पक्का रंग चढ़ानेके लिये रंगनेका ढङ्ग वर्णन करो।

2—निम्नलिखित वस्तुओंको किस-किस काममें ला सकते हो:—सिरका, मैथिलेटिड स्प्रिट, अमोनिया और नीबूके लवण।

3—स्टार्च या माया बनानेके नुसखे और ढङ्ग लिखो।

4—या तो किसी ऊनी कपड़े या रंगे हुए सूतके कपड़ेके धोने और उसको इस्त्री करनेकी विधि लिखो।

———o———

कुछ प्रमाणपत्रोंकी नकलें

......"धुलाई रंगाई विज्ञान" अपने ढंगकी अनोखी और अभूतपूर्व पुस्तक है। यह कोई काल्पनिक सौदा नहीं, किन्तु सुयोग्य लेखकके अपने अनुभव-सिद्ध कार्यका एकीकरण है। इससे भारतीय महिलाओंका विशेष उपकार होगा।

श्रीमती सुखदादेवीजी बी० टी० सी०
गवर्नमेंट गर्ल्स स्कूल, हापुड़।

........अपने कर्तव्यमें प्रवीण लेखककी रचना अपूर्व है, पदार्थ-निरूपणकी शैली शायद जादूभरी है जो "धुलाई-रंगाई विज्ञान" को पढ़नेवालेके मनको आकर्षण करनेमें चूकना नहीं जानती। पंजाब प्रान्तीय कन्या पाठशालाओंमें मिडिल-नार्मल श्रेणीमें अध्ययन करनेवाली कन्याओंका इससे विशेष हित होगा।

श्रीमती जानकीदेवीजी बी० टी० सी०
'विशारद' (हिन्दी प्रभाकर)
दयालबाग गर्ल्स हाई स्कूल, आगरा।

श्रीशिवचरण पाठक धुलाई-रंगाई-विज्ञानके एक अनुभवी महानुभाव हैं।

आपने एक बहुत ही सुन्दर उपयोगी पुस्तक धुलाई-रंगाई विज्ञान नामसे लिखी है।

आपने इस पुस्तकको शुद्ध वैज्ञानिक ढंगपर लिखकर इस विषयको बिलकुल नया रूप दे दिया है।

यह पुस्तक पाठकजीके अनुभवोंका परिणाम है, अतएव इसमें तनिक सन्देह नहीं कि यह पुस्तक विद्यालयोंमें रंगाई-धुलाई विषयके लिये पाठ्य-पुस्तक रूपमें सहर्ष स्वीकृत की जायगी।

पाठकजीका यह प्रयत्न सचमुच अभिनन्दनीय है।

दयाशंकर भट्ट
हिन्दी मुख्य अध्यापक
वैदिक पुत्री विद्यालय,
सूत्र मण्डि लाहौर।

कला एक अपूर्व वस्तु है

किसी देश या मानव समाजकी उन्नतिका कारण कलाके सिवाय और क्या हो सकता है? धुलाई-रंगाई भी गृहस्थ जीवनकी एक कला है।

इसका औचित्य और गौरव महिला समाज पर अधिक निर्भर होता है। धुलाई-रंगाई विषयक किताबें तो और भी देखी थीं परन्तु 'धुलाई-रंगाई-विज्ञान' मे कुछ विलक्षणता ही दृष्टि-गोचर हुई।

अन्य किताबें तो धुलाई-रंगाईका गोरख धन्धा-सी प्रतीत होती है किन्तु धुलाई-रंगाई-विज्ञान साक्षात धोबी और रंगरेजका घर है। इससे पंजाब प्रान्तीय मिडिल नार्मलकी कन्याओंको विशेष लाभ होगा। यह मुझे पूरी आशा है।

श्रीमती इन्दिराकुमारी मसीन बी० ए०
प्रिंसिपल नेशनल कालेज
फार विमन लाहौर।

'धुलाई-रंगाई-विज्ञान' किताब क्या है, शायद धोबीके घाट और रंगरेजके अड्डेका जीता-जागता चित्र है। भाषा सरल-सजीव है।

श्रीमती सरोजनी देवीजी
श्रीरामकन्या पाठशाला,
अमृतसर।

The exceedingly useful subject of 'Rangai and Dhulai' which has been very ably dealt in this book deserves to be recomended to all the girl students. The language in which the whole material has been coached wonderfully simple and free from any scientific names which may be beyond the intelligence of the girls. The print and the general get-up is very good also.

Miss L. Agnihotra
Headmistress
Shri Prem Maha Vidyalaya Lahore.